بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

संपादक
शेख मुजाहिदअहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

वर्ष- 11
अंक 19-20

Postal Reg. No.GDP -45/2026-2028

19-26 ज़ुल् क़ादा 1447 हिज्री क़मरी,14 हिजरत 1405 हिज्री शम्सी, 07-14 मई 2026 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

وَعَدَ اللّٰہُ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا مِنۡکُمۡ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَیَسۡتَخۡلِفَنَّہُمۡ فِی الۡاَرۡضِ کَمَا اسۡتَخۡلَفَ الَّذِیۡنَ مِنۡ قَبۡلِہِمۡ ۪ وَلَیُمَکِّنَنَّ لَہُمۡ دِیۡنَہُمُ الَّذِی ارۡتَضٰی لَہُمۡ وَلَیُبَدِّلَنَّہُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ خَوۡفِہِمۡ اَمۡنًا ؕ یَعۡبُدُوۡنَنِیۡ لَا یُشۡرِکُوۡنَ بِیۡ شَیۡئًا ؕ وَمَنۡ کَفَرَ بَعۡدَ ذٰلِکَ فَاُولٰٓئِکَ ہُمُ الۡفٰسِقُوۡنَ

(سورۃ النور:56)

“अल्लाह ने तुम में से ईमान लाने वालों और अच्छे कर्म करने वालों से वादा किया है कि वह उन्हें धरती में ख़लीफ़ा बनाएगा, जिस प्रकार उनसे पहले लोगों को ख़लीफ़ा बनाया था। और जिस धर्म को उसने उनके लिए पसंद किया है, उसे उनके लिए दृढ़ता के साथ स्थापित कर देगा तथा उनके भय की अवस्था के बाद उसे शांति और सुरक्षा की अवस्था में बदल देगा। वे मेरी उपासना करेंगे और किसी वस्तु को मेरा साझी नहीं ठहराएँगे। और जो लोग इसके बाद भी इनकार करेंगे, वही अवज्ञाकारियों में गिने जाएँगे।” (तफ़्सीर-ए-सग़ीर, लेखनी हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु)

ख़िलाफ़त नंबर

इरशाद-ए-नबवी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम

नुबुव्वत के तरीक़ पर ख़िलाफ़त

عَنۡ حُذَیۡفَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ قَالَ: قَالَ رَسُوۡلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّمَ تَکُوۡنُ النُّبُوَّۃُ فِیۡکُمۡ مَا شَآءَ اللّٰہُ اَنۡ تَکُوۡنَ ثُمَّ یَرۡفَعُہَا اللّٰہُ تَعَالٰی ثُمَّ تَکُوۡنُ خِلَافَۃٌ عَلٰی مِنۡہَاجِ النُّبُوَّۃِ مَا شَآءَ اللّٰہُ اَنۡ تَکُوۡنَ ثُمَّ یَرۡفَعُہَا اللّٰہُ تَعَالٰی ثُمَّ تَکُوۡنُ مُلۡکًا عَاضًّا فَتَکُوۡنُ مَا شَآءَ اللّٰہُ اَنۡ تَکُوۡنَ ثُمَّ یَرۡفَعُہَا اللّٰہُ تَعَالٰی ثُمَّ تَکُوۡنُ مُلۡکًا جَبۡرِیَّۃً فَیَکُوۡنُ مَا شَآءَ اللّٰہُ اَنۡ تَکُوۡنَ ثُمَّ یَرۡفَعُہَا اللّٰہُ تَعَالٰی ثُمَّ تَکُوۡنُ خِلَافَۃٌ عَلٰی مِنۡہَاجِ النُّبُوَّۃِ ثُمَّ سَکَتَ۔

(273। मिश्कात, बाबुल इन्ज़ार वत्तहज़ीर पृष्ठ ,4 मुस्नद अहमद बिन हम्बल, जिल्द)

अनुवाद: हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तुम में नुबुव्वत कायम रहेगी, जब तक खुदा तआला चाहेगा। फिर वह उसे उठा लेगा। उसके बाद नुबुव्वत के तरीक़ पर ख़िलाफ़त कायम होगी। फिर जब खुदा तआला चाहेगा, इस नेमत को भी उठा लेगा। उसके बाद कष्ट पहुँचाने वाली बादशाहत कायम होगी और तब तक रहेगी जब तक खुदा तआला चाहेगा। जब यह दौर समाप्त होगा तो उससे भी बढ़कर अत्याचारी बादशाहत कायम होगी और तब तक रहेगी जब तक खुदा तआला चाहेगा। फिर वह अत्याचार और ज़ुल्म के इस दौर को समाप्त कर देगा, जिसके बाद फिर नुबुव्वत के तरीक़ पर ख़िलाफ़त कायम होगी। यह फ़रमा कर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम शांत हो गए।

‘‘आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ियल्लाहु अन्हो को संबोधित करते हुए फ़रमाया:

اِنۡ رَاَیۡتَ یَوۡمَئِذٍ خَلِیۡفَۃَ اللّٰہِ فِی الۡاَرۡضِ فَالۡزِمۡہُ وَاِنۡ نُہِکَ جِسۡمُکَ وَاُخِذَ مَالُکَ

अर्थात यदि तू उस समय अल्लाह के ख़लीफ़ा को धरती में देखे तो उसे दृढ़ता से पकड़े रखना, चाहे तेरा शरीर नोच डाला जाए और तेरा माल छीन लिया जाए।’’ (मुस्नद अहमद बिन हम्बल, हदीस हुज़ैफ़ा बिन यमान, हदीस नंबर 22916)

तुम्हारे लिए दूसरी क़ुदरत को भी देखना आवश्यक है और उसका आना तुम्हारे लिए बेहतर है क्योंकि वह स्थायी है

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

‘‘ख़लीफ़ा जानशीन को कहते हैं और रसूल का जानशीन अर्थ की दृष्टि से वही हो सकता है जो छाया के रूप में रसूल के गुणों को अपने भीतर रखता हो। इसी कारण रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह पसंद नहीं किया कि अत्याचारी बादशाहों पर ख़लीफ़ा शब्द का प्रयोग हो, क्योंकि ख़लीफ़ा वास्तव में रसूल की छाया होता है। और चूँकि किसी मनुष्य के लिए स्थायी रूप से जीवित रहना संभव नहीं, इसलिए खुदा तआला ने यह इच्छा की कि रसूल का अस्तित्व, जो संसार के सभी अस्तित्वों से श्रेष्ठ और उच्च है, छाया के रूप में सदा के लिए क़ियामत तक कायम रहे। इसी उद्देश्य से खुदा तआला ने ख़िलाफ़त को निर्धारित किया ताकि संसार किसी भी समय और किसी भी युग में बरकतों-ए-रिसालत से वंचित न रहे।’’

(शहादतुल क़ुरआन, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 6, पृष्ठ 353)

‘‘तुम्हारे लिए दूसरी क़ुदरत को भी देखना आवश्यक है और उसका आना तुम्हारे लिए बेहतर है क्योंकि वह स्थायी है, जिसका सिलसिला क़ियामत तक कभी समाप्त नहीं होगा। और वह दूसरी क़ुदरत तब तक नहीं आ सकती जब तक मैं न चला जाऊँ। लेकिन जब मैं चला जाऊँगा तो फिर खुदा उस दूसरी क़ुदरत को तुम्हारे लिए भेज देगा जो हमेशा तुम्हारे साथ रहेगी। जैसा कि खुदा का वादा ‘बराहीन-ए-अहमदिया’ में मौजूद है। और वह वादा मेरी ज़ात के बारे में नहीं बल्कि तुम्हारे बारे में वादा है। जैसा कि खुदा फ़रमाता है कि मैं इस जमाअत को, जो तेरे अनुयायी हैं, क़ियामत तक दूसरों पर प्रभुत्व दूँगा। इसलिए आवश्यक है कि तुम पर मेरी जुदाई का दिन आए, ताकि उसके बाद वह दिन आए जो स्थायी वादे का दिन है। वह हमारा खुदा वादों में सच्चा, वफ़ादार और सत्य खुदा है। वह तुम्हें वह सब कुछ दिखाएगा जिसका उसने वादा फ़रमाया है। यद्यपि ये संसार के अंतिम दिन हैं और बहुत-सी विपत्तियाँ हैं जिनके उतरने का समय है, फिर भी आवश्यक है कि यह संसार तब तक कायम रहे जब तक वे सारी बातें पूरी न हो जाएँ जिनकी खुदा ने सूचना दी है। मैं खुदा की ओर से एक क़ुदरत के रंग में प्रकट हुआ हूँ और मैं खुदा की एक सजीव क़ुदरत हूँ। और मेरे बाद कुछ और अस्तित्व होंगे जो दूसरी क़ुदरत का प्रत्यक्ष रूप होंगे।’’

(रसाला अल्-वसिय्यत, पृष्ठ 8)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

दुनिया की सभी क़ौमों को एक उम्मत बनाने का माध्यम ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सूरह अल्-जुमुआ की आयत "وآخرين منهم لما يلحقوا بهم" की तफ़सीर करते हुए यह बयान फ़रमाया कि उम्मत का शीराज़ा बिखर जाने और ईमान के सौरैया सितारे तक उठ जाने के बाद फ़ारस के लोगों के माध्यम से फिर से उसका एक होना होगा। और फिर एक स्थान पर आपने फ़रमाया कि उम्मत में नुबुव्वत के बाद ख़िलाफ़त जारी होगी, फिर बादशाहत के ज़रिये मतभेद, फूट और क़त्ल-ओ-ग़ारत का दौर शुरू होगा, और अंततः फिर नुबुव्वत के तरीक़ पर ख़िलाफ़त स्थापित होगी।

(मिश्कात, बाब अल्-इंदार वत-तह्ज़ीर)

सूरह अल्-जुमुआ की आयत और उक्त हदीस के अध्ययन से यह पता चलता है कि एक समय ऐसा आएगा जब ईमान दुनिया से उठकर सौरैया सितारे पर चला जाएगा और मुसलमानों के लिए वह दिन बहुत कठिन होंगे। दज्जाल और याजूज-माजूज का प्रकट होना होगा। मुसलमानों पर हर तरफ़ से हमले हो रहे होंगे। मुसलमान आपसी फूट के कारण कमज़ोर हो जाएंगे और सभी क़ौमें इस्लाम को दबाने की कोशिश में होंगी। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ऐसे समय में इस्लाम को बचाने के लिए तलवार को उपाय नहीं बताया, बल्कि फ़रमाया कि इमाम महदी और मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का आगमन होगा, और वे तीर-तलवार के बिना, इस्लाम के महान आध्यात्मिक प्रमाणों की तलवार से इस्लाम को सभी धर्मों पर विजयी करेंगे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मसीह मौऊद के प्रकट होने की ख़बर देते हुए फ़रमाया था "व यज़अुल हरब", अर्थात मसीह मौऊद आएगा और वह युद्धों को समाप्त कर देगा।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उक्त भविष्यवाणी के अनुसार ख़ुदा तआला ने अपने केवल अनुग्रह से हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम को मसीह और महदी बनाकर भेजा। आपने फ़रमाया:

"दीन-ए-इस्लाम का ग़लबा मज़बूत तर्कों और उज्ज्वल प्रमाणों पर निर्भर है। इस दीन के माध्यम से यह निश्चित है, चाहे मेरी ज़िन्दगी में या मेरी वफ़ात के बाद।"

(बराहीन अहमदिया, पृष्ठ 498-499, हाशिया दर हाशिया, तफ़सीर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, जिल्द तृतीय, तफ़सीर सूरह अल्-फ़तह, आयत "हुवल्लज़ी अर्सल रसूलहु बिल्हुदा...")

और इस विजय के लिए आपने अपनी पुस्तक "अल्-वसियत" में, जो आपने 1905 में लिखी थी, अपनी वफ़ात के बाद स्थापित होने वाली ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया को एक महान माध्यम बताया है। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"तुम्हारे लिए दूसरी क़ुदरत को भी देखना आवश्यक है, और उसका आना तुम्हारे लिए बेहतर है, क्योंकि वह स्थायी है, जिसका सिलसिला क़ियामत तक समाप्त नहीं होगा। और वह दूसरी क़ुदरत नहीं आ सकती जब तक मैं न चला जाऊँ। लेकिन जब मैं चला जाऊँगा तो फिर ख़ुदा तआला उस दूसरी क़ुदरत को तुम्हारे लिए भेज देगा, जो हमेशा तुम्हारे साथ रहेगी, जैसा कि ख़ुदा ने 'बराहीन अहमदिया' में वादा किया है। और वह वादा मेरी ज़ात के बारे में नहीं, बल्कि तुम्हारे बारे में है। जैसा कि ख़ुदा फ़रमाता है कि मैं इस जमाअत को, जो तेरे अनुयायी हैं, क़ियामत तक दूसरों पर ग़ालिब रखूँगा। इसलिए आवश्यक है कि तुम पर मेरी जुदाई का दिन आए, ताकि उसके बाद वह दिन आए जो स्थायी वादे का दिन है। हमारा ख़ुदा वादों का सच्चा, वफ़ादार और सत्य ख़ुदा है। वह तुम्हें वह सब कुछ दिखाएगा जिसका उसने वादा किया है। यद्यपि ये दुनिया के अंतिम दिन हैं और बहुत सी विपत्तियाँ उतरने का समय है, परंतु यह आवश्यक है कि यह दुनिया तब तक क़ायम रहे जब तक वे सभी बातें पूरी न हो जाएँ जिनकी ख़ुदा ने ख़बर दी है। मैं ख़ुदा की ओर से एक क़ुदरत के रूप में प्रकट हुआ हूँ और मैं ख़ुदा की एक साकार क़ुदरत हूँ, और मेरे बाद कुछ और अस्तित्व होंगे जो दूसरी क़ुदरत का प्रकट रूप होंगे।"

(अल्-वसियत, पृष्ठ 8)

इसी प्रकार आपने फ़रमाया:

"वह इस सिलसिले को पूर्ण उन्नति देगा, कुछ मेरे हाथ से और कुछ मेरे बाद। यह ख़ुदा तआला की परंपरा है, और जब से उसने मनुष्य को पृथ्वी पर पैदा किया है, वह हमेशा इस परंपरा को प्रकट करता रहा है कि वह अपने नबियों और रसूलों की सहायता करता है और उन्हें विजय देता है... लेकिन उसकी पूर्णता उनके हाथों से नहीं करता, बल्कि ऐसे समय में उन्हें वफ़ात दे देता है, जो देखने में असफलता का भय अपने साथ रखता है, और विरोधियों को हँसी, उपहास, ताना और निंदा का अवसर दे देता है। और जब वे हँसी-ठट्ठा कर लेते हैं, तब वह अपनी क़ुदरत का दूसरा हाथ दिखाता है।"

(अल्-वसियत)

इस विजय के लिए आपने एक अवधि भी निर्धारित की है। आप फ़रमाते हैं:

"अभी तीसरी सदी आज के दिन से पूरी नहीं होगी कि ईसा के इंतज़ार करने वाले, चाहे मुसलमान हों या ईसाई, कठोर निराश और बदगुमान होकर इस झूठे सिद्धांत को छोड़ देंगे, और दुनिया में एक ही धर्म होगा और एक ही नेता। मैं तो केवल एक बीज बोने आया हूँ, सो मेरे हाथ से वह बीज बोया गया, और अब वह बढ़ेगा और फूलेगा, और कोई नहीं जो उसे रोक सके।"

(तज़किरत-उश-शहादतैन, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 20, पृष्ठ 67)

ख़ुदा तआला ने अपने वादे के अनुसार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वफ़ात के बाद 27 मई 1908 को जमाअत अहमदिया में ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया स्थापित की, और हज़रत मौलाना नूरुद्दीन साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल के रूप में ख़िलाफ़त के पद पर आसीन हुए। उनके ख़लीफ़ा बनते ही इस्लाम की विजय की शुभ सूचनाएँ लगातार प्रकट होने लगीं। उनके माध्यम से जमाअत फिर से राष्ट्रीय एकता की डोरी में पिरो दी गई, और ख़िलाफ़त, जो कि राष्ट्रीय एकता और जमाअत की भविष्य की उन्नति की गारंटी थी, उसकी मज़बूती और इस्लाम की स्थिरता के लिए वे अपनों और परायों के सामने एक सीसा-पिलाई हुई दीवार की तरह खड़े हो गए।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु भली-भांति जानते थे कि ख़िलाफ़त का स्थापित होना और उसका मज़बूत रहना ही वास्तव में जमाअत अहमदिया के अस्तित्व और उसकी मज़बूती, बल्कि इस्लाम की मज़बूती और उसकी विजय की गारंटी है। और इसी के माध्यम से जमाअत के सदस्यों का प्रशिक्षण और इस्लाम के प्रचार का कार्य किया जा सकता है।

अल्हम्दुलिल्लाह कि आज, जबकि ख़िलाफ़त की स्थापना को 118 वर्ष हो चुके हैं, जमाअत के सदस्यों और अन्य लोगों ने अच्छी तरह समझ लिया है कि यह तीव्र उन्नति और इतने कम समय में इतनी अधिक प्रगति वास्तव में केवल और केवल नुबुव्वत के तरीक़ पर स्थापित ख़िलाफ़त की ही देन है। और वे लोग जिन्होंने ख़िलाफ़त की स्थापना के समय उसका इंकार किया था और उसके विरोध में खड़े हो गए थे, आज उनके माध्यम से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस्लाम की विजय का वादा तो क्या पूरा होना था, बल्कि आज उनके लिए अपनी सामुदायिक पहचान को बचाना भी कठिन हो गया है।

दूसरी ओर जमाअत अहमदिया, ख़िलाफ़त के साए में, इस समय दुनिया के दो सौ से अधिक देशों में फैल चुकी है। जमाअत के प्रचारक, जिनका बीज हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के समय में बोया गया था, ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया के दौर में अब फैलकर एशिया, यूरोप, अफ़्रीका, अमेरिका और अन्य द्वीपों तक पहुँच गए हैं और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का मीठा स्रोत प्यासे दिलों को पिला रहे हैं। क़ुरआन-ए-करीम की शिक्षा का वह पाठ, जिसकी शुरुआत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु के माध्यम से क़ादियान की मस्जिद अक्सा से हुई थी, आज एम.टी.ए. के माध्यम से पूरी दुनिया में फैल चुका है और पूरी दुनिया क़ुरआन-ए-करीम के अनुवादों से लाभ उठा रही है। क़ुरआन-ए-करीम के अनुवाद अब दुनिया की 70 से अधिक भाषाओं में प्रकाशित हो चुके हैं और दुनिया के लोग उनसे लाभान्वित हो रहे हैं।

मदरसा अहमदिया, जिसकी नींव हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने 1906 में रखी थी, आज ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया के दौर में "जामिआ अहमदिया" के नाम से उसकी शाखाएँ पूरी दुनिया में फैल चुकी हैं और हज़ारों प्रचारक दिन-रात इस्लाम की जीवनदायी शिक्षाओं को पूरी दुनिया में फैलाने में

शेष पृष्ठ 13 पर

ख़ुत्बः जुमअः

एकेश्वरवाद (तौहीद) की तड़प में पैगंबर जीवन का ईमान अफरोज वर्णन
साथ ही उम्मत-ए-मुस्लिमा को वास्तविक एकेश्वरवाद समझने और उस पर अमल करने के संबंध में दुआ के लिए प्रेरणा

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 13 मार्च 2026 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ. أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

दो जुमे पहले मैंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सीरत के एक पहलू "तौहीद के लिए तड़प" का उल्लेख किया था। यह वही उद्देश्य था जिसके स्थापित करने के लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आए थे। इसके लिए न केवल आपके अपने कथन और आचरण से यह तड़प स्पष्ट होती है, बल्कि आपने अपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम और अपने मानने वालों के अंदर भी तौहीद के लिए हर प्रकार की कुर्बानी देने के लिए तैयार रहने की ऐसी भावना पैदा की, जिसकी कोई मिसाल नहीं मिलती।

आज भी मैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सीरत के इसी पहलू पर बात करूंगा और इस संदर्भ में कुछ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की कुर्बानियों का भी उल्लेख आएगा। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदर्श आचरण, तड़प और दुआओं का ही परिणाम था कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को भी ऐसे उच्च मानक प्राप्त हुए कि वे हर प्रकार की कुर्बानी के लिए तैयार हो गए।

तौहीद की स्थापना के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम द्वारा सहन की गई कठिनाइयों का एक वर्णन इस प्रकार मिलता है। एक बार मुशरिकों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से कहा कि क्या आप हमारे पूज्य माने जाने वाले देवताओं के बारे में यह बात नहीं कहते? आपने फ़रमाया: हाँ। इस पर वे आपके चारों ओर इकट्ठा हो गए। उस समय किसी ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा कि अपने मित्र की खबर लो। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु निकले और मस्जिद हराम पहुंचे। उन्होंने देखा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चारों ओर लोग जमा हैं। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा: तुम लोगों का बुरा हो। फिर उन्होंने क़ुरआन-ए-करीम की यह आयत पढ़ी:

"क्या तुम एक व्यक्ति को केवल इस बात पर मार डालोगे कि वह कहता है कि मेरा रब अल्लाह है, जबकि वह तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से स्पष्ट प्रमाण लेकर आया है।" (अल्-मोमिन: 29)

इस पर उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को तो छोड़ दिया, लेकिन हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु पर टूट पड़े और उन्हें मारने लगे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की पुत्री हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि वे हमारे पास इस हालत में आए कि जब वे अपने बालों को हाथ लगाते तो वे हाथ में आ जाते थे। इतनी जोर से उनके बाल खींचे गए थे कि वे जड़ों से उखड़ गए थे। और वे कहते जा रहे थे:

"तब्बारकता या ज़ल जलालि वल इकराम" ऐ महानता और आदर वाले! तू अत्यंत बरकत वाला है।

एक अन्य वर्णन में आता है कि उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सिर मुबारक और दाढ़ी मुबारक को इतनी जोर से खींचा कि आपके बहुत से बाल झड़ गए। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु आपकी रक्षा के लिए खड़े हुए और कह रहे थे:

"क्या तुम एक व्यक्ति को केवल इस बात पर मार डालोगे कि वह कहता है कि मेरा रब अल्लाह है?"

और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु रो भी रहे थे। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: ऐ अबू बकर! इन्हें छोड़ दो। उस की कसम जिसके हाथ में मेरी जान है, मैं इनके पास इस लिए भेजा गया हूँ कि मैं कुर्बान हो जाऊँ। इस पर उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को छोड़ दिया।

(अस-सीरतुल हलबिया, भाग 1, पृष्ठ 417, बाब इख्तिफा-ए-नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम व असहाबिही, दारुल कुतुब अल्-इल्मिया बेरूत 2002)

अर्थात उस समय जब वे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर अत्याचार कर रहे थे, तब जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु बीच में आए, तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ही कहा कि इन्हें छोड़ दो।

इसी प्रकार एक वर्णनकर्ता हारिस बिन हारिस गामदी ने कुरैश को नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर अत्याचार करते देखा। उन्होंने अपने पिता से पूछा कि ये कौन लोग हैं? यह कोई एक घटना नहीं है, बल्कि इस प्रकार की असंख्य घटनाएँ होती रहीं। ये मिलती-जुलती घटनाएँ हैं, जिन्हें विभिन्न लोगों ने देखा और बयान किया। कुछ में अधिक विवरण है और कुछ में कम। जब उन्होंने अपने पिता से पूछा कि ये कौन लोग हैं जो अत्याचार कर रहे हैं, तो उनके पिता ने कहा कि ये लोग अपने "साबी" के चारों ओर जमा हैं। मक्का वाले नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और मुसलमानों को ताने के रूप में "साबी" कहा करते थे।

वर्णनकर्ता कहते हैं कि हम भी अपनी सवारी से उतरे तो देखा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम लोगों को अल्लाह तआला की तौहीद और उस पर ईमान लाने की दावत दे रहे थे, और वे आपका इंकार कर रहे थे तथा आपको कष्ट दे रहे थे। यहाँ तक कि दोपहर का समय हो गया और लोग आपके आसपास से हट गए।

(अल्-मुअजमुल कबीर, भाग 3, पृष्ठ 304, "अल्-हारिस बिन हारिस अल्-गामदी", हदीस 3373, मक्तबा इब्न तैमिया, काहिरा)

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर हुए अत्याचारों का उल्लेख विभिन्न इतिहास की पुस्तकों में मिलता है। इन्हीं से लेकर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी बयान किया है। "दीबाचा तफसीरुल क़ुरआन" में एक स्थान पर उन्होंने लिखा:

"एक बार आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बाजार से गुजर रहे थे तो मक्का के उद्दंड लोगों का एक समूह आपके चारों ओर हो गया और रास्ते भर आपकी गर्दन पर यह कहते हुए थप्पड़ मारता रहा कि लोगो! यह वही व्यक्ति है जो कहता है कि मैं नबी हूँ। आपके घर में आसपास के घरों से लगातार पत्थर फेंके जाते थे। आपके घर में गंदी चीजें फेंकी जाती थीं, यहाँ तक कि रसोईघर में भी गंदगी डाली जाती थी, जिनमें बकरों और ऊँटों की आँतें भी शामिल होती थीं। जब आप नमाज़ पढ़ते तो आप पर धूल डाली जाती थी, यहाँ तक कि मजबूर होकर आपको एक चट्टान के नीचे छिपकर नमाज़ पढ़नी पड़ती थी।"

(दीबाचा तफसीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम, भाग 20, पृष्ठ 198)

लेकिन हजारों-हजार दुरूद हों आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उस पवित्र और बरकत वाली हस्ती पर कि तौहीद की स्थापना के लिए जो तड़प आपके सीने में थी, वह एक क्षण के लिए भी कम नहीं हुई। आपने इन सभी कष्टों को मानो हृदय की प्रसन्नता के साथ स्वीकार किया और फिर भी समस्त मानव जाति के प्रति आपकी दया और प्रेम में तनिक भी कमी नहीं आई।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने ही लिखा है कि जब हम रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के जीवन की घटनाओं को देखते हैं, तो यह दावा एक सच्चाई बनकर सामने आता है और हर कदम पर ऐसे उदाहरण मिलते हैं जो आपकी उस महान प्रेम और करुणा का प्रमाण हैं जो आपको समस्त मानव जाति से थी। आपने एकमात्र खुदा का संदेश पहुँचाने के लिए वर्षों तक ऐसे कष्ट सहे जिनकी कोई सीमा नहीं।

एक बार खाना काबा में काफिरों ने आपके गले में कपड़ा डालकर इतना कस दिया कि आपकी आँखें लाल होकर बाहर निकल आईं। हज़रत अबू बकर

रज़ियल्लाहु अन्हु को जब यह खबर मिली तो वे दौड़े आए और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इस कष्ट की अवस्था में देखकर उनकी आँखों में आँसू आ गए। उन्होंने उन काफिरों को हटाते हुए कहा: खुदा से डरो। क्या तुम एक व्यक्ति पर केवल इस कारण अत्याचार कर रहे हो कि वह कहता है कि खुदा मेरा रब है।

(तफसीर कबीर, भाग 9, पृष्ठ 316, संस्करण 2023)

एक बार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मस्जिद हराम में खड़े हुए और मक्का के मुशरिकों को संबोधित करते हुए फ़रमाया: "तुम कहो ला इलाहा इल्लल्लाह, अर्थात अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं है। यदि तुम यह कहोगे तो सफल हो जाओगे।" इस बात पर कुरैश आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर टूट पड़े। एक व्यक्ति ऊँची आवाज़ में चिल्लाता हुआ आया, अर्थात आप पर हमला करने के लिए, तो हारिस बिन अबी हालह सबसे पहले आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास पहुँचे। उन्होंने उन लोगों से लड़ना शुरू कर दिया और उन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से अलग कर दिया। फिर वे सब उन पर टूट पड़े, यहाँ तक कि उन्हें, हारिस को, शहीद कर दिया।

(इमताअुल अस्मा', भाग 6, पृष्ठ 297, दारुल कुतुब अल्-इल्मिया, बेरूत 1999)

तौहीद का प्रचार करने के "अपराध" के कारण मक्का के काफ़िरों ने तीन वर्षों तक आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आपके परिवार वालों को शिअब-ए-अबी तालिब में इस प्रकार बंद रखा कि हर प्रकार का सामाजिक बहिष्कार कर दिया गया। और जब यह बहिष्कार समाप्त हुआ तो एक ओर नबी अकर्म सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तौहीद का प्रचार फिर से पूरे मक्का में पहले से अधिक दृढ़ निश्चय और साहस के साथ आरंभ कर दिया, बल्कि पहले से अधिक व्यापक रूप में फैलाया, और दूसरी ओर कुरैश ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर फिर से अत्याचार शुरू कर दिए।

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ताइफ़ के सफ़र का भी प्रसिद्ध घटना है, जिसे कई बार पहले भी बयान किया जा चुका है। वहाँ आप पर जो अत्याचार हुआ, वह इतिहास में विभिन्न रूपों में वर्णित है। इसी संदर्भ में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी एक स्थान पर इस घटना को इस प्रकार लिखा है:

"जब घेराबंदी समाप्त हो गई और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को अपने कार्यों और गतिविधियों में कुछ स्वतंत्रता प्राप्त हुई, तो आपने यह निश्चय किया कि ताइफ़ जाकर वहाँ के लोगों को इस्लाम का संदेश दें। ताइफ़ एक प्रसिद्ध स्थान है, जो मक्का से दक्षिण-पूर्व दिशा में लगभग चालीस मील की दूरी पर स्थित है और उस समय क़बीला बनू सक़ीफ़ वहाँ आबाद था। काबा की विशेषता को अलग रखकर ताइफ़ मानो मक्का के बराबर था और वहाँ बड़े-बड़े प्रभावशाली और धनी लोग रहते थे। इस महत्त्व को स्वयं मक्का वाले भी स्वीकार करते थे। जैसा कि उनका यह कथन क़ुरआन-ए-करीम में आया है:

"यदि यह क़ुरआन अल्लाह की ओर से है, तो मक्का या ताइफ़ के किसी बड़े व्यक्ति पर क्यों न उतारा गया?"

संक्षेप में, शव्वाल 10 नबवी में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ताइफ़ की ओर गए। कुछ वर्णनों के अनुसार हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु भी साथ थे। वहाँ पहुँचकर आपने लगभग दस दिन निवास किया और शहर के अनेक प्रमुख व्यक्तियों से एक-एक करके मुलाक़ात की, किन्तु उस नगर की किस्मत में भी उस समय मक्का की तरह इस्लाम स्वीकार करना नहीं था। अतः सभी ने इनकार किया, बल्कि उपहास भी किया।

अंततः आप ताइफ़ के प्रधान अब्दे यालील के पास गए और उसे इस्लाम की दावत दी, किन्तु उसने भी स्पष्ट इनकार किया और व्यंग्य में कहा: "यदि आप सच्चे हैं तो मुझे आपसे बात करने का साहस नहीं, और यदि आप झूठे हैं तो आपसे बात करना व्यर्थ है।" और फिर इस भय से कि कहीं आपकी बातों का नगर के युवाओं पर प्रभाव न पड़ जाए, उसने आपसे कहा कि आप यहाँ से चले जाएँ, क्योंकि यहाँ कोई भी आपकी बात सुनने के लिए तैयार नहीं है। इसके बाद उस दुष्ट ने नगर के आवारा लोगों को आपके पीछे लगा दिया।

जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम नगर से निकले, तो वे लोग शोर मचाते हुए आपके पीछे हो लिए और आप पर पत्थर बरसाने लगे, जिससे आपका पूरा शरीर लहूलुहान हो गया। लगभग तीन मील तक वे लोग आपके साथ-साथ चलते रहे, गालियाँ देते और पत्थर मारते रहे। ताइफ़ से लगभग तीन मील की दूरी पर मक्का के सरदार उत्बा बिन रबीआ का एक बाग़ था। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसमें जाकर शरण ली और अत्याचारी लोग थककर लौट गए।

वहाँ एक छाया में खड़े होकर आपने अल्लाह तआला के सामने इस प्रकार प्रार्थना की:

"अल्लाहुम्मा इलैक अश्कू ज़ुअफ़ क़ुव्वती व किल्लत हीलती व हवानी अलन्नास... यानी:

हे मेरे पालनहार! मैं अपनी कमजोरी, अपनी अल्प सामर्थ्य और लोगों के सामने अपनी बेबसी की शिकायत तेरे ही पास करता हूँ। हे मेरे प्रभु! तू सबसे अधिक दया करने वाला है, तू ही निर्बलों और असहायों का रक्षक है और तू ही मेरा पालनहार है..."

और आगे आपने यह भी कहा, जिसका अर्थ है:

"मैं तेरे ही मुख के प्रकाश में शरण चाहता हूँ, क्योंकि तू ही अंधकारों को दूर करता है और मनुष्य को इस संसार और परलोक की भलाईयों का वारिस बनाता है।"

उस समय उत्बा और शैबा उसी बाग़ में मौजूद थे। जब उन्होंने आपको इस अवस्था में देखा, तो किसी पारिवारिक संबंध, जातीय भावना या किसी अन्य विचार से उन्होंने अपने ईसाई दास अद्दास के हाथ कुछ अंगूर एक पात्र में रखकर आपके पास भिजवाए। आपने उन्हें स्वीकार किया और अद्दास से पूछा: "तुम कहाँ के रहने वाले हो और किस धर्म का पालन करते हो?" उसने कहा: "मैं नैनवा का रहने वाला हूँ और धर्म से ईसाई हूँ।"

आपने फ़रमाया: "क्या वह वही नैनवा है जो अल्लाह के नेक बंदे यूनुस बिन मत्ता का नगर था?" अद्दास ने कहा: "हाँ, लेकिन आपको यूनुस का हाल कैसे पता?" आपने फ़रमाया: "वह मेरा भाई था, क्योंकि वह भी अल्लाह का नबी था और मैं भी अल्लाह का नबी हूँ।"

फिर आपने उसे इस्लाम का संदेश दिया, जिसका उस पर गहरा प्रभाव हुआ और उसने आगे बढ़कर भावनाओं से भरकर आपके हाथ चूम लिए। इस दृश्य को दूर से उत्बा और शैबा ने भी देख लिया। जब अद्दास उनके पास लौटा, तो उन्होंने कहा: "अद्दास! यह क्या हुआ कि तुम उस व्यक्ति के हाथ चूमने लगे? यह व्यक्ति तुम्हारे धर्म को बिगाड़ देगा, जबकि तुम्हारा धर्म उसके धर्म से बेहतर है।"

कुछ समय आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उस बाग़ में विश्राम किया, फिर वहाँ से चल पड़े और नख़ला पहुँचे, जो मक्का से एक पड़ाव की दूरी पर स्थित है। वहाँ कुछ दिन ठहरे। इसके बाद नख़्ला से चलकर आप कोह-ए-हिरा के पास आए। चूँकि ताइफ़ की इस प्रतीत होने वाली असफल यात्रा के कारण यह आशंका थी कि मक्का वाले और अधिक साहसी हो जाएँगे और अत्याचार बढ़ाएँगे, इसलिए वहाँ से आपने किसी व्यक्ति के माध्यम से मुतइम बिन अदी को संदेश भेजा कि मैं मक्का में प्रवेश करना चाहता हूँ, क्या तुम इसमें मेरी सहायता कर सकते हो?

मुतइम एक पक्का काफ़िर था, किन्तु स्वभाव से सम्मानित व्यक्ति था, और ऐसे अवसर पर सहायता से इंकार करना अरब के प्रतिष्ठित लोगों के स्वभाव के विरुद्ध था। इसलिए उसने अपने पुत्रों और रिश्तेदारों को साथ लिया और सभी हथियारबंद होकर काबा के पास खड़े हो गए और आपको संदेश भेजा कि आप आ जाएँ। आप आए, काबा का तवाफ़ किया और फिर मुतइम और उसके पुत्रों के साथ तलवारों की छाया में अपने घर में प्रवेश कर गए।

रास्ते में अबू जहल ने मुतइम को इस अवस्था में देखा तो आश्चर्य से पूछा: "क्या तुमने मुहम्मद को केवल शरण दी है या उसके अनुयायी बन गए हो?" मुतइम ने कहा: "मैंने केवल शरण दी है, उसका अनुयायी नहीं बना।" इस पर अबू जहल ने कहा: "अच्छा, तो फिर कोई बात नहीं।" मुतइम काफ़िर ही रहा और उसी अवस्था में उसकी मृत्यु हुई... लेकिन यह एक नेकी उसने अवश्य की थी।

हदीस में आता है कि एक बार हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से पूछा कि क्या आपको कभी उहुद के दिन से भी अधिक कष्ट पहुँचा है? आपने फ़रमाया: "आयशा! तुम्हारी कौम की ओर से मुझे बहुत कठिन समय देखने पड़े हैं।" फिर आपने ताइफ़ के सफ़र की घटनाएँ सुनाईं और फ़रमाया कि उस यात्रा से वापसी पर मेरे पास पहाड़ों का फ़रिश्ता आया और कहने लगा कि "मुझे खुदा ने आपके पास भेजा है ताकि यदि आप आदेश दें तो मैं इन दोनों पहाड़ों को इन लोगों पर मिला दूँ और इनका अंत कर दूँ।" आपने फ़रमाया: "नहीं, नहीं! मुझे आशा है कि अल्लाह तआला इन्हीं लोगों में से ऐसे लोग पैदा करेगा जो एकमात्र खुदा की इबादत करेंगे।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, पृष्ठ 203-206, नया संस्करण)

लोगों के प्रति दया भी प्रबल थी और साथ ही इस बात पर पूरा विश्वास था कि एक दिन उनकी आने वाली पीढ़ियाँ इस्लाम स्वीकार करेंगी और तौहीद पर स्थापित हो जाएँगी।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम द्वारा तौहीद के लिए सहन की गई कठिनाइयों का वर्णन एक स्थान पर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस प्रकार किया है:

"आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को दुश्मनों की ओर से जो भी कष्ट दिए गए, वे सब तौहीद के प्रचार के कारण थे। आपको मारा जाता, आपके पीछे कुत्ते और लड़के लगा दिए जाते। एक बार आप ताइफ़ गए तो वहाँ के लोगों ने आपको इतना मारा कि आप सिर से पाँव तक खून से लथपथ हो गए।" यह विवरण पहले भी बताया जा चुका है। "आप कष्ट के कारण गिर पड़ते, लेकिन जब उठते तो वे लोग फिर आप पर पत्थर फेंकते। ऐसी अवस्था में भी आपके मुँह से यही निकलता: 'हे खुदा! इन लोगों को क्षमा कर दे, क्योंकि ये सत्य से अनजान हैं।'

इन सब परिस्थितियों में भी आपने तौहीद के प्रचार को नहीं छोड़ा और यही कहते रहे कि चाहे ये लोग कुछ भी करें, मैं तौहीद का प्रचार नहीं छोड़ सकता।

फिर जब आपके विसाल का समय निकट आया, तब भी आप यही कहते हुए संसार से विदा हुए।" अर्थात पूरी जीवन-यात्रा में आपकी यही शिक्षा रही कि "मेरे बाद शिर्क न करना।" आगे लिखा है: "और मैं तो समझता हूँ कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के जन्म के समय भी खुदा तआला ने अपनी तौहीद का प्रमाण इस प्रकार दिया कि आपके पिता का आपके जन्म से पहले और माता का जन्म के थोड़े समय बाद देहांत हो गया।"

"आपकी प्रारंभिक अवस्था में असहायता"—जब न पिता थे, न माता—"और आपका महान अंत, स्वयं खुदा तआला की तौहीद का बड़ा प्रमाण था।"

(सीरतुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, भाग 3, पृष्ठ 188)

इससे स्पष्ट होता है कि अल्लाह तआला, जिसकी तौहीद का आप प्रचार करते रहे, उसी ने आपको बचपन से लेकर अंत तक संभाला।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अरब के बाज़ारों में जाकर प्रचार करने का भी उल्लेख मिलता है। लिखा है कि आप मक्का में व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से तौहीद का संदेश देते थे और इसके अलावा अरब के कुछ बाज़ारों में भी जाया करते थे, जहाँ आप एकमात्र अल्लाह की ओर बुलाते थे।

मक्का के बाहर विभिन्न स्थानों पर लोग एकत्र होते थे, जहाँ व्यापार भी होता था और बड़े जमावड़े भी लगते थे। इन्हें "अस्वाकुल अरब" कहा जाता था, अर्थात अरब के बाज़ार। हिंदुस्तान-पाकिस्तान की भाषा में इन्हें मेले कहा जा सकता है। ऐसे ही मेले लगते थे—उकाज़, मजनना और ज़ुल-मजाज़—ये कुरैश और अरब के प्रमुख बाज़ार थे। इनमें सबसे बड़ा बाज़ार उकाज़ का था, जो मक्का से लगभग तीन रात की दूरी पर था। उकाज़ के बाज़ार में लोग पूरा शव्वाल महीना ठहरते थे। फिर वे मजनना के बाज़ार की ओर चले जाते, जो मक्का से कुछ मील दूर मुर्र-उज़-ज़हरान में था, और वहाँ 20 ज़िलक़ादा तक रहते। इसके बाद वे ज़ुल-मजाज़ के बाज़ार की ओर जाते, जो मैदान अराफ़ात से तीन मील दूर था, और वहाँ हज के दिनों तक ठहरते थे। इन सभी स्थानों पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जाकर प्रचार किया करते थे।

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मक्का में दस वर्षों तक रहे। हज के दिनों में आप उकाज़ और मजनना के मेलों में जाते और लोगों के घरों तथा ठहरने के स्थानों पर जाकर उन्हें संदेश देते। आप फ़रमाते: "कौन है जो मुझे शरण देगा? कौन है जो मेरी सहायता करेगा ताकि मैं अपने रब का संदेश पहुँचा सकूँ, और उसके बदले उसे जन्नत मिले।"

(अस-सीरतुन-नबविया, इब्न कसीर, भाग 2, पृष्ठ 194, दारुल मआरिफ़ा, बेरूत 1976)(इमताअुल अस्मा, भाग 8, पृष्ठ 309, दारुल कुतुब अल्-इल्मिया, बेरूत)(फ़रहंग सीरत, पृष्ठ 205, 259)

हज़रत रबीअह बिन इबाद रज़ियल्लाहु अन्हु, जिन्होंने जाहिलियत का समय भी देखा और बाद में मुसलमान हुए, बयान करते हैं कि मैंने बाज़ार ज़ुल-मजाज़ में अपनी आँखों से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को देखा। आप लोगों से कह रहे थे: "हे लोगो! कहो कि अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं, तुम सफल हो जाओगे।" आप बाज़ार की गलियों में आगे बढ़ते जाते और लोग आपके विरुद्ध शोर मचाते, लेकिन मैंने किसी को यह कहते नहीं देखा कि आपकी बात मान ली जाए। इसके बावजूद आप चुप नहीं होते थे और लगातार कहते जाते थे: "हे लोगो! कहो कि अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं, तुम सफल हो जाओगे।"

(मुस्नद अहमद बिन हंबल, भाग 5, पृष्ठ 499, "मुस्नद रबीअह बिन इबाद", हदीस 16119, आलमुल कुतुब, बेरूत 1998)

अपने और परायों दोनों की ओर से आपको इस तौहीद के संदेश को पहुँचाने के कारण कष्टों का सामना करना पड़ा। आप खुलकर इबादत भी नहीं कर सकते थे, फिर भी संदेश पहुँचाते थे ताकि इबादत में बाधा न डाली जाए और हमला न हो जाए। जो लोग मुसलमान हो जाते थे, उन पर भी अत्याचार होता था।

नमाज़ और इबादत के संबंध में एक वर्णन में आता है कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु मक्का के पहाड़ों की किसी घाटी में जाकर लोगों से छिपकर नमाज़ पढ़ते थे और कुछ समय तक इसी प्रकार करते रहे। फिर हज़रत अबू तालिब को इसकी जानकारी हो गई और उन्होंने दोनों को नमाज़ पढ़ते देख लिया। उन्होंने रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से पूछा: "हे मेरे भतीजे! यह कौन सा धर्म है जिसे तुमने अपनाया है?"

आपने फ़रमाया: "हे चाचा! यह अल्लाह, उसके फ़रिश्तों, उसके रसूलों और हमारे पिता इब्राहीम अलैहिस्सलाम का धर्म है। अल्लाह ने मुझे इस धर्म के साथ लोगों की ओर रसूल बनाकर भेजा है। और हे चाचा! आप अधिक योग्य हैं कि मैं आपको उपदेश करूँ और आपको मार्गदर्शन की ओर बुलाऊँ, और आप इसके स्वीकार करने और मेरी सहायता करने के अधिक अधिकारी हैं।"

हज़रत अबू तालिब ने कहा: "हे भतीजे! मैं अपने पूर्वजों के धर्म को नहीं छोड़ सकता, लेकिन जब तक मैं जीवित हूँ, कोई शत्रु तुम्हें हानि नहीं पहुँचा सकेगा। मैं हर हाल में तुम्हारी सहायता करूँगा।"

हज़रत अबू तालिब ने अपने पुत्र हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से भी पूछा: "तुमने यह कौन सा धर्म अपनाया है?" उन्होंने उत्तर दिया: "मैं अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर ईमान लाया हूँ और जो कुछ आप लेकर आए हैं, मैंने उसे सत्य माना है, और मैं उनके साथ अल्लाह की नमाज़ पढ़ता हूँ।"

इस पर हज़रत अबू तालिब ने कहा: "निश्चय ही ये तुम्हें भलाई की ओर बुलाते हैं, इसलिए तुम इनके साथ रहो।" और अपने पुत्र से कहा कि इनके साथ ही रहना।

(तारीख़ुत-तबरी, भाग 1, पृष्ठ 539, दारुल कुतुब अल्-इल्मिया, बेरूत 1987)

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम पर भी, जैसा कि मैंने कहा, तौहीद को स्वीकार करने के कारण बहुत अत्याचार हुए।

मक्का के कुरैश एक ओर तो अपनी शक्ति और प्रभुत्व के दांव-पेंच अपनाकर कूटनीतिक और धमकी भरे अंदाज़ में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को किसी न किसी तरह इस्लाम के प्रचार से रोकने की कोशिश करते रहे, और दूसरी ओर इस्लाम स्वीकार करने वालों पर उन्होंने अत्याचार और क्रूरता का ऐसा बाज़ार गर्म किया, और ऐसा जंगली व्यवहार किया कि उसकी पूरी कहानी न तो कलम लिख सकती है और न ही कोई उसे बयान करने का साहस कर सकता है।

फिर भी जो कुछ बयान हुआ है, वह भी इतना है कि इंसान को झकझोर कर रख देता है।

हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर ईमान लाए, तो उन्हें तरह-तरह की यातनाएँ दी जाती थीं। जब लोग उन्हें कष्ट देने में अधिक कठोरता करते, तो हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु "अहद, अहद" कहते। वे लोग कहते कि हमारे कहे अनुसार कहो, तो हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु उत्तर देते कि मेरी ज़बान उसे ठीक से नहीं कह सकती जो तुम कह रहे हो।

एक दूसरी रिवायत में आता है कि जब हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु को कष्ट दिया जाता और मुशरिक यह चाहते कि उन्हें अपनी ओर झुका लें, तो वे "अल्लाह, अल्लाह" कहते।

एक रिवायत में है कि जब हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु ईमान लाए, तो उनके मालिकों ने उन्हें पकड़कर ज़मीन पर लिटा दिया और उन पर कंकड़-पत्थर और गाय की खाल डाल दी, और कहने लगे कि तुम्हारा रब लात और उज़्ज़ा है, लेकिन वे "अहद, अहद" ही कहते रहे। इसी दौरान हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु वहाँ आए और कहा कि तुम कब तक इस व्यक्ति को कष्ट देते रहोगे? फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु को सात

औक़िया में खरीदकर उन्हें आज़ाद कर दिया। एक औक़िया चालीस दिरहम का होता है, अर्थात दो सौ अस्सी दिरहम में आपने उन्हें खरीदकर स्वतंत्र किया।

(अत-तबकातुल कुबरा, इब्न सअद, भाग 3, पृष्ठ 175-176, "बिलाल बिन रबाह", दारुल कुतुब अल्-इल्मिया, बेरूत 1990)(उस्दुल गाबा, भाग 1, पृष्ठ 416, "बिलाल बिन रबाह", दारुल कुतुब अल्-इल्मिया, बेरूत)(शरह ज़रकानी, भाग 11, पृष्ठ 197, दारुल कुतुब अल्-इल्मिया, बेरूत)

इनके अलावा हज़रत सुमय्या रज़ियल्लाहु अन्हा, हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत खब्बाब रज़ियल्लाहु अन्हु और अनेक गुलाम तथा स्वतंत्र पुरुष और महिलाएँ थीं, जो तौहीद पर ईमान लाने के कारण मक्का के काफ़िरों के शर्मनाक और दर्दनाक अत्याचारों का निशाना बने। काफ़िर मक्का कमजोर मुसलमानों पर ही नहीं, बल्कि स्वयं रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पवित्र हस्ती भी उनसे सुरक्षित नहीं थी, जैसा कि पहले भी उल्लेख हो चुका है। और यदि देखा जाए तो सबसे अधिक कष्ट, दुख और पीड़ा का सामना स्वयं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ही करना पड़ा।

यह भी कम दुखद नहीं था कि जिनका नाम "मुहम्मद" सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम था, जिसका अर्थ है "सबसे अधिक प्रशंसा किए गए", उसी नाम को बिगाड़कर "मज़म्मम" कहा जाता था, अर्थात "सबसे अधिक निंदा किया गया" नऊज़ुबिल्लाह। जो उस बस्ती में सबसे सच्चे व्यक्ति थे, उन्हें झूठा और कपटी कहा जाता था। जो अपनी कौम के सबसे बड़े हितैषी थे, उन्हें धोखेबाज़ और लालची कहा जाता था। जो अपनी जवानी, अपनी सेहत और अपने दिन-रात अपनी कौम के मार्गदर्शन और भलाई के लिए समर्पित किए हुए थे, उन्हें पागल और बीमार कहा जाने लगा। कभी आपकी गर्दन में कपड़ा डालकर इस प्रकार खींचा जाता कि सांस रुकने लगती, कभी आप पर पत्थर फेंके जाते और कभी आप पर गंदगी डाली जाती।

उरवा बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा कि मुशरिकों ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ सबसे बुरा व्यवहार कौन सा किया था? उन्होंने कहा कि एक बार नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मस्जिद हराम में हतीम (काबा के पास की वह खुली जगह जिसके चारों ओर छोटी दीवार होती है) में नमाज़ पढ़ रहे थे कि उक़्बा बिन अबी मुईत आया और उसने कपड़ा आपकी गर्दन में डालकर आपका गला ज़ोर से घोंटने लगा। इतने में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु पहुँचे और उन्होंने आकर उक़्बा का कंधा पकड़कर उसे धक्का दिया और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से अलग किया और कहा:

"क्या तुम एक व्यक्ति को इस कारण मारते हो कि वह कहता है कि मेरा रब अल्लाह है?"

(सहीह अल्-बुखारी, भाग 7, पृष्ठ 332, किताब मनाकिबुल अंसार, बाब: मक्का में नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और सहाबा को मुशरिकों से जो कष्ट पहुँचे, हदीस 3856, नज़ारत इशाअत)

फिर हम यह भी देखते हैं, जैसा कई बार बताया जा चुका है, कि युद्धों में भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तौहीद के लिए हमेशा दृढ़ता दिखाई।

जंग-ए-उहुद का प्रसिद्ध घटना है। जब अबू सुफ़ियान ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का नाम लेकर पूछा कि ये लोग कहाँ हैं, तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सबको जवाब न देने को कहा, क्योंकि उस समय जवाब देना मुसलमानों की कमजोर स्थिति के कारण उन्हें खतरे में डाल सकता था। इसलिए आपने चुप रहने का आदेश दिया।

इस पर अबू सुफ़ियान ने कहा: "हबल ऊँचा है।" जब उसने यह कहा तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तुरंत कहा: "तुम इसका जवाब दो।" सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने पूछा: "हम क्या कहें?" आपने फ़रमाया: "कहो अल्लाह सबसे ऊँचा और सबसे महान है।"

अबू सुफ़ियान ने कहा: "हमारे लिए उज़्ज़ा है और तुम्हारे लिए कोई उज़्ज़ा नहीं।" नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फिर कहा: "इसका जवाब दो।" उन्होंने पूछा: "क्या कहें?" आपने फ़रमाया: "कहो अल्लाह हमारा सहायक है और तुम्हारा कोई सहायक नहीं।"

जहाँ अल्लाह तआला की सत्ता और तौहीद का प्रश्न आया, वहाँ आपने किसी खतरे की परवाह नहीं की।

अतः यह उस समय तौहीद के प्रति जोश था कि आपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से कहा: "कहो अल्लाह सबसे ऊँचा और महान है। तुम झूठ बोलते हो। हबल की कोई महानता नहीं। अल्लाह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं, वही सम्मानित है और उसी की महिमा सर्वोच्च है।"

(सहीह अल्-बुखारी, किताबुल मगाज़ी, बाब ग़ज़वा उहुद, हदीस 4043)

अब मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक उद्धरण प्रस्तुत करता हूँ, जिसे बार-बार पढ़ना और सुनना चाहिए। यह हमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के तौहीद की स्थापना के लिए उच्च स्थान और दर्जे का ज्ञान देता है और हमारे लिए मार्गदर्शन है कि हम इसे कैसे समझें। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"मैं हमेशा आश्चर्य से देखता हूँ कि यह अरबी नबी, जिसका नाम मुहम्मद है (हजारों-हजार दुरूद और सलाम उस पर), कितना ऊँचा दर्जा रखने वाला नबी है। उसके उच्च स्थान की सीमा को जाना नहीं जा सकता और उसकी पवित्र प्रभावशक्ति का अनुमान लगाना मनुष्य का काम नहीं। अफसोस कि जिस प्रकार उसकी पहचान होनी चाहिए थी, वैसी नहीं की गई।

वही तौहीद, जो संसार से लुप्त हो चुकी थी, वही वीर पुरुष है जिसने उसे फिर से संसार में स्थापित किया। उसने खुदा से अत्यंत प्रेम किया और मानव जाति के प्रति अत्यंत करुणा दिखाई। इसलिए खुदा, जो उसके दिल के रहस्यों को जानता था, उसने उसे सभी नबियों और सभी पूर्वजों और बाद वालों पर श्रेष्ठता प्रदान की और उसकी इच्छाएँ उसके जीवन में ही पूरी कर दीं।"

"वही हर एक अनुग्रह का स्रोत है और जो व्यक्ति उसके माध्यम के बिना किसी श्रेष्ठता का दावा करता है, वह मनुष्य नहीं बल्कि शैतान की संतान है। क्योंकि हर एक श्रेष्ठता की कुंजी उसे दी गई है और हर प्रकार का ज्ञान का खजाना उसे प्रदान किया गया है। जो उसके माध्यम से प्राप्त नहीं करता, वह सदा के लिए वंचित है।

हम क्या हैं और हमारी क्या वास्तविकता है? हम कृतघ्न होंगे यदि यह स्वीकार न करें कि सच्ची तौहीद हमने इसी नबी के माध्यम से पाई और जीवित खुदा की पहचान हमें इसी पूर्ण नबी के माध्यम से और उसके प्रकाश से मिली है। और खुदा से वार्तालाप और संबोधन का सम्मान भी, जिससे हम उसका दर्शन करते हैं, इसी महान नबी के माध्यम से हमें प्राप्त हुआ है।

यह मार्गदर्शन का सूर्य है, जिसकी किरणें धूप की तरह हम पर पड़ती हैं, और हम उसी समय तक प्रकाशित रह सकते हैं, जब तक हम उसके सामने खड़े रहते हैं।"

अतः खुदा तआला तक पहुँचने के लिए और सच्ची तौहीद को पहचानने के लिए अब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ही एकमात्र माध्यम हैं।

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"वे लोग जो इस गलत विचार पर टिके हुए हैं कि जो व्यक्ति आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर ईमान न लाए या फिर धर्म से फिर जाए, और केवल तौहीद पर बना रहे तथा खुदा को एक और बिना साझी माने, वह भी नजात पा जाएगा और ईमान न लाने या फिर जाने से उसे कोई हानि नहीं होगी... ऐसे लोग वास्तव में तौहीद की सच्चाई से ही अनजान हैं... केवल खुदा को एक मान लेना पर्याप्त नहीं है, बल्कि नजात दो बातों पर निर्भर है।

(1) पहली यह कि पूर्ण विश्वास के साथ खुदा तआला के अस्तित्व और उसकी एकता पर ईमान लाया जाए।

(2) दूसरी यह कि खुदा तआला की ऐसी पूर्ण प्रेम भावना हृदय में स्थापित हो जाए कि उसके प्रभाव और प्रभुत्व के कारण उसकी आज्ञा का पालन ही मनुष्य की आत्मिक शांति बन जाए, और उसके बिना वह जी ही न सके।

और उसकी प्रेम भावना अन्य सभी प्रेमों को समाप्त कर दे। यही सच्ची तौहीद है, जो हमारे स्वामी और नेता हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अनुसरण के बिना प्राप्त ही नहीं हो सकती।

यह क्यों नहीं हो सकती? इसका उत्तर यह है कि खुदा की सत्ता अत्यंत छिपी हुई है, जिसे मनुष्य की बुद्धि अपने बल पर पूरी तरह नहीं पहचान सकती। कोई भी केवल तर्क के आधार पर खुदा के अस्तित्व का पूर्ण प्रमाण नहीं दे सकता, क्योंकि बुद्धि केवल इस हद तक पहुँचती है कि संसार की रचना को देखकर रचयिता की आवश्यकता को महसूस करे। परंतु आवश्यकता को महसूस करना एक बात है और इस स्तर तक पहुँचना कि वह रचयिता वास्तव में मौजूद भी है, यह दूसरी बात है।"

सिर्फ यह कहना कि कोई बनाने वाला होना चाहिए, पर्याप्त नहीं है, बल्कि

यह जानना कि वह है, कौन है और वह जीवित ख़ुदा है—यह ज्ञान तभी मिलता है जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ संबंध जोड़ा जाए।

और फ़रमाया:

"क्योंकि केवल बुद्धि का मार्ग अधूरा, अपूर्ण और संदेह से भरा हुआ है, इसलिए हर दार्शनिक केवल बुद्धि के सहारे ख़ुदा को नहीं पहचान सकता। बल्कि अधिकतर लोग जो केवल बुद्धि के सहारे ख़ुदा को समझना चाहते हैं, अंत में नास्तिक बन जाते हैं, और आकाश और पृथ्वी की रचनाओं पर विचार करना भी उन्हें कोई लाभ नहीं देता।"

आज भी हम यही देखते हैं कि बहुत से पढ़े-लिखे लोग नास्तिक बन रहे हैं और ख़ुदा के अस्तित्व से इंकार करते हैं, क्योंकि वे समझ ही नहीं पाते। उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शिक्षाओं से जुड़कर इन बातों पर विचार नहीं किया।

फ़रमाया: "ऐसे लोग ख़ुदा के नेक बंदों का मज़ाक उड़ाते हैं और कहते हैं कि संसार में अनेक ऐसी चीज़ें हैं जिनका हमें कोई लाभ दिखाई नहीं देता और जिनमें हमें कोई ऐसा उद्देश्य नहीं मिलता जो किसी रचयिता की ओर संकेत करे। बल्कि वे उन्हें व्यर्थ मानते हैं।"

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"अफसोस! वे नादान यह नहीं जानते कि किसी चीज़ का ज्ञान न होना, उसके अस्तित्व के न होने का प्रमाण नहीं होता। इस समय लाखों लोग ऐसे हैं जो अपने आपको बड़ा बुद्धिमान और दार्शनिक समझते हैं, लेकिन ख़ुदा के अस्तित्व से इंकार करते हैं। यदि उन्हें कोई मजबूत तर्क मिल जाता, तो वे इंकार न करते। यदि ख़ुदा के अस्तित्व का कोई निर्णायक प्रमाण उन्हें रोक देता, तो वे इस प्रकार उपहास न करते।"

अतः कोई व्यक्ति केवल दार्शनिकों के मार्ग पर चलकर संदेहों के तूफ़ान से बच नहीं सकता, बल्कि अवश्य डूब जाएगा, और उसे सच्ची तौहीद कभी प्राप्त नहीं होगी।

अब सोचो कि यह विचार कितना गलत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के माध्यम के बिना भी तौहीद मिल सकती है और उससे नजात पाई जा सकती है।

"हे नादानो! जब तक ख़ुदा के अस्तित्व पर पूर्ण विश्वास न हो, उसकी तौहीद पर कैसे विश्वास हो सकता है? इसलिए निश्चित रूप से समझ लो कि सच्ची तौहीद केवल नबी के माध्यम से ही मिलती है, जैसा कि हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अरब के नास्तिकों और भटके हुए लोगों को असंख्य दिव्य चिन्ह दिखाकर ख़ुदा के अस्तित्व का विश्वास दिलाया। और आज भी आपके सच्चे अनुयायी इन चिन्हों को नास्तिकों के सामने प्रस्तुत करते हैं।"

आज भी हम ये चिन्ह प्रस्तुत करते हैं।

"सच्चाई यही है कि जब तक मनुष्य जीवित ख़ुदा की जीवित शक्तियों को अनुभव नहीं करता, तब तक शैतान उसके दिल से नहीं निकलता, न ही सच्ची तौहीद उसके दिल में प्रवेश करती है, और न ही वह पूर्ण विश्वास के साथ ख़ुदा के अस्तित्व को मान सकता है। और यह शुद्ध और पूर्ण तौहीद केवल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के माध्यम से ही प्राप्त होती है।"

(हक़ीकतुल वह्यी, रूहानी खज़ाइन, भाग 22, पृष्ठ 118-121)

अतः यही सच्ची तौहीद है, जिसकी हमें खोज करनी चाहिए। हमें अपने ईमान को इस स्तर तक पहुँचाने की कोशिश करनी चाहिए कि हम हर प्रकार की कुर्बानी के लिए तैयार रहें और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ सच्चा प्रेम अपने भीतर उत्पन्न करें।

इस युग में अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सच्चे सेवक को तौहीद के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए भेजा है और हमने उनकी बैअत की है। इसलिए हमें पूरी कोशिश करनी चाहिए कि हम इस जिम्मेदारी को पूरा करें और इसके लिए दुआ भी करें।

रमज़ान के इन शेष दिनों में विशेष रूप से हमें यह प्रार्थना करनी चाहिए कि हम तौहीद की स्थापना और उसकी रक्षा में सबसे आगे रहने वाले बनें। अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ दे और हमारी कमज़ोरियों को दूर करे।

उम्मत-ए-मुस्लिम के लिए भी, जैसा कि मैंने पिछले जुमे को कहा था, दुआ करें कि वे भी सच्ची तौहीद को समझने वाले और उस पर अमल करने वाले बनें। तभी उनकी स्थिरता है और तभी वे दुश्मनों की चालों से बच सकते हैं। अल्लाह तआला उन्हें भी यह तौफ़ीक़ प्रदान करे।

नमाज़ के बाद आज मैं एक जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊँगा, जो-ज़िक्रुल्लाह तायो अय्यूब साहब, मुबल्लिग़-ए-सिलसिला का है, जिनका कुछ दिन पहले अस्सी (80) वर्ष की आयु में निधन हो गया।

इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन अल्लाह तआला के फ़ज़ल से वे मोसी थे। उनका संबंध नाइजीरिया से था। 1965 में एक स्वप्न के माध्यम से उन्होंने अहमदियत स्वीकार की। 1966 में मिशनरी ट्रेनिंग कॉलेज घाना में प्रवेश लिया। वहाँ से प्रारंभिक शिक्षा पूर्ण करने के बाद 1969 में नाइजीरिया लौट आए। एक वर्ष सेवा करने के बाद 1970 में शाहिद की डिग्री के लिए जामिआ अहमदिया रब्वा में दाख़िला लिया। 1977 में उन्होंने मौलवी फाज़िल की परीक्षा पास की और 1979 में शाहिद की डिग्री प्राप्त की।

इसके बाद वे नाइजीरिया लौटे और सेवा का कार्य आरंभ किया तथा मृत्यु तक वहीं सेवा करते रहे। उन्हें लगभग 47 वर्षों तक सेवा करने की तौफ़ीक़ मिली। नाइजीरिया के विभिन्न स्थानों पर उन्होंने सेवा की। वहाँ वे नायब अमीर के रूप में भी कार्य करते रहे। उन्होंने पत्रकारिता में स्नातकोत्तर उपाधि भी प्राप्त की थी और इस क्षेत्र में भी कार्य किया।

वे जामिआतुल मुबश्शिरीन नाइजीरिया के प्रिंसिपल भी रहे—पहले कार्यवाहक और फिर तीन-चार वर्षों तक नियमित प्रिंसिपल रहे। वे एक उत्कृष्ट खिलाड़ी भी थे और खेलों में बहुत रुचि रखते थे, लेकिन कभी भी खेलों को अपनी इबादत में बाधा नहीं बनने दिया। वे एक अच्छे लेखक, भाषाविद् और कवि भी थे।

उनके परिवार में उनकी पत्नी के अलावा तीन बेटे और पाँच बेटियाँ हैं। उनके सबसे छोटे बेटे अब्दुल मजीब साहब इस समय नाइजीरिया में मुबल्लिग़-ए-सिलसिला के रूप में सेवा कर रहे हैं, साथ ही "रिव्यू ऑफ रिलिजन्स" नाइजीरिया के समन्वयक भी हैं। वे वक़्फ़-ए-ज़िंदगी हैं।

मिशनरी इंचार्ज ताहिर अदनान साहब कहते हैं कि मरहूम बहुत परहेज़गार, आज्ञाकारी और जमाअत की सेवा के लिए हर समय तैयार रहने वाले व्यक्ति थे। वे कहते हैं कि मुझे 20 वर्षों से अधिक समय तक उन्हें निकट से देखने का अवसर मिला और इस दौरान उनके उच्च चरित्र, नम्रता, विनम्रता, ख़िलाफ़त और निज़ाम-ए-जमाअत के प्रति असाधारण निष्ठा और आज्ञापालन के अनेक उदाहरण देखने को मिले।

वे बताते हैं कि जब मैं मिशनरी इंचार्ज बना, तो वे आयु में मुझसे बड़े थे, लेकिन इसके बावजूद उन्होंने पूरी निष्ठा और जिम्मेदारी के साथ मेरी बात मानी और उस पर अमल किया।

इसी प्रकार यूसुफ़ ख़ालिक साहब, मुबल्लिग़-ए-सिलसिला कहते हैं कि प्रिंसिपल के रूप में वे विद्यार्थियों के प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देते थे। उन्होंने विद्यार्थियों में जिम्मेदारी की भावना विकसित की और हमेशा यह शिक्षा दी कि किसी भी कार्य के लिए बहाना न बनाएं। वे ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के निर्देशों पर तुरंत अमल करने पर विशेष ज़ोर देते थे। व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए वे विद्यार्थियों को तब्लीगी अभियानों पर भी भेजते थे। हर कार्य में उन्होंने अपना व्यक्तिगत उदाहरण प्रस्तुत किया, जिसने विद्यार्थियों के जीवन पर गहरा प्रभाव डाला।

मैंने स्वयं उन्हें देखा है—वे अत्यंत सच्चे, वफ़ादार और बहुत विनम्र व्यक्ति थे। अल्लाह तआला उनसे क्षमा और दया का व्यवहार करे और उनके दर्जे ऊँचे करे।

(मुद्रित अल्-फ़ज़्ल इंटरनेशनल, 4 अप्रैल 2026, पृष्ठ 1-8)

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

ख़ुत्बः जुमअः

“असल बात यह है कि दुनिया स्वयं लक्ष्य न हो, बल्कि दुनिया को प्राप्त करने में मूल उद्देश्य दीन हो।”
(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ’मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 20 मार्च 2026 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज मैंने ईद का ख़ुत्बा भी दिया है, इसलिए इस समय मैं संक्षिप्त ख़ुत्बा दूँगा। इसके लिए मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक उद्धरण लिया है, जिसकी ओर हमें हमेशा ध्यान देना चाहिए। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

“मोमिन के संसार के साथ जितने अधिक संबंध होते हैं, वे उसके उच्च दर्जों का कारण बनते हैं, क्योंकि उसका लक्ष्य दीन होता है।”

अर्थात दुनिया के व्यापक संबंध भी इसलिए अच्छे होते हैं कि यदि उनका उद्देश्य दीन हो। यानी दुनिया के जो संबंध हैं, उनका उद्देश्य भी दीन होना चाहिए—यही मोमिन की पहचान है।

“और दुनिया, उसका धन और प्रतिष्ठा, दीन के सेवक होते हैं। अतः मूल बात यही है कि दुनिया स्वयं लक्ष्य न हो, बल्कि दुनिया को प्राप्त करने में असली उद्देश्य दीन हो।”

यदि दुनिया कमाओ, तो उद्देश्य यह होना चाहिए कि हमारा दीन बेहतर हो, हम दीन की सेवा कर सकें।

दुनिया भी कमानी है, लेकिन दीन की भलाई के लिए—not कि गलत काम करके अपनी दुनिया और आख़िरत को बिगाड़ने के लिए, बल्कि अपनी आख़िरत को सँवारने और अपने दीन को सुधारने के लिए।

और आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

“दुनिया को इस प्रकार प्राप्त किया जाए कि वह दीन की सेवक बन जाए। जैसे मनुष्य एक स्थान से दूसरे स्थान तक यात्रा करने के लिए सवारी और यात्रा का सामान साथ लेता है, तो उसका असली उद्देश्य मंज़िल तक पहुँचना होता है, न कि स्वयं सवारी या रास्ते की चीज़ें।”

यानी जो चीज़ें हम यात्रा में सुविधा के लिए साथ लेते हैं, उनका उद्देश्य यह होता है कि हम आराम से यात्रा पूरी करें और मंज़िल तक पहुँच जाएँ, न कि उन्हीं में उलझ जाएँ।

“इसी प्रकार मनुष्य दुनिया को प्राप्त करे, लेकिन उसे दीन का सेवक समझकर।”

अल्लाह तआला ने हमें यह दुआ सिखाई है:

“हे हमारे पालनहार! हमें दुनिया में भी भलाई दे और आख़िरत में भी भलाई दे और हमें आग के दंड से बचा।”

(अल्-बक़रह: 202)

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

“इस दुआ में भी दुनिया को पहले रखा गया है। लेकिन कौन-सी दुनिया? वह ‘हसनतुद-दुनिया’ जो आख़िरत में भलाई का कारण बन जाए।”

यानी ऐसी दुनिया, जिसे हासिल करके आख़िरत में भी लाभ मिले—ऐसी दुनिया की चीज़ें मिलें जो आख़िरत की भलाई का कारण बनें, न कि वहाँ शर्मिंदगी उठानी पड़े।

यदि मनुष्य पूरी तरह दुनिया में ही डूब जाए, तो उसे अंत में शर्मिंदगी का सामना करना पड़ेगा।

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

“इस दुआ की शिक्षा से स्पष्ट होता है कि मोमिन को दुनिया प्राप्त करते समय आख़िरत की भलाई का ध्यान रखना चाहिए। और ‘हसनतुद-दुनिया’ के शब्द में उन सभी अच्छे साधनों का उल्लेख आ गया है, जिन्हें एक मोमिन को दुनिया प्राप्त करने के लिए अपनाना चाहिए। दुनिया को हर उस तरीके से प्राप्त करो जिससे भलाई और अच्छाई हो—न कि ऐसे तरीकों से, जिनसे किसी दूसरे इंसान को कष्ट पहुँचे या समाज में शर्मिंदगी का कारण बने। ऐसी दुनिया निश्चित रूप से आख़िरत की भलाई का कारण बनेगी।”

(मलफ़ूज़ात, भाग 2, पृष्ठ 91-92, संस्करण 1984)

ऐसी दुनिया कमाओ, जिससे न केवल तुम्हें लाभ हो, बल्कि मानवता को भी लाभ पहुँचे। ऐसी कोई बात न हो जो तुम्हारे लिए या तुम्हारे परिवार के लिए शर्म का कारण बने, बल्कि जीवन पवित्र, नेक और धर्मपरायण हो।

जब ऐसा जीवन होगा और तुम इस प्रकार की दुनिया कमाने के लिए प्रयास करोगे, तो वह तुम्हें दुनिया और आख़िरत दोनों में सफलता देगी।

आज दुनिया सामान्य रूप से अपने स्वार्थों और लाभों में लगी हुई है। व्यक्ति और राष्ट्र—दोनों अपने-अपने हितों को प्राथमिकता दे रहे हैं, मानवता की परवाह कम है, और इसी कारण वे अपनी विनाश की तैयारी कर रहे हैं।

ऐसे समय में हमें अल्लाह तआला से दुनिया और आख़िरत की भलाई माँगने की ओर ध्यान देना चाहिए। हमें अपनी दुनिया और आख़िरत को सुधारने और हर प्रकार की विपत्तियों से बचने के लिए विशेष प्रयास करना चाहिए।

दुनिया विनाश की ओर बढ़ रही है—जैसा कि मैंने कहा—अल्लाह तआला हमें इससे सुरक्षित रखे।

अल्लाह करे कि हमें अपने कर्म सुधारने की भी तौफ़ीक़ मिले और सच्चे दिल से दुआ करने की भी तौफ़ीक़ मिले, जैसा कि मैंने अभी ख़ुत्बे में कहा।

अल्लाह तआला हमें वास्तव में इन भलाईयों को प्राप्त करने की तौफ़ीक़ दे, उत्तम दुआ करने की क्षमता दे और उन्हें स्वीकार भी करे।

(मुद्रित अल्-फ़ज़्ल इंटरनेशनल, 10 अप्रैल 2026, पृष्ठ 2)

★ ★ ★

ख़ुत्बः जुमअः

ख़ुदा तआला की तौहीद के लिए तड़प में सीरत-ए-नबवी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का ईमान बढ़ाने वाला वर्णन तथा मध्य पूर्व में युद्ध जैसी परिस्थितियों के कारण दुआओं की प्रेरणा

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 27 मार्च 2026 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सीरत के संदर्भ में तौहीद का उल्लेख किया जा रहा था।

फ़तह मक्का के समय मूर्तियों को गिराने का विवरण पिछले खुत्बों में बयान हो चुका है। यह सब कुछ आपने सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम खुदा तआला की तौहीद के ऐलान के तौर पर किया था कि जिन मूर्तियों की तुम पूजा करते हो, उनका यह हाल है। अतः हमने देखा कि मक्का के आसपास मुशरिकों की सभी बड़ी-बड़ी मूर्तियाँ जैसे मनात, उज़्ज़ा, सुवा आदि को ध्वस्त कर दिया गया। इस संदर्भ में

अहल-ए-ताइफ़ की मूर्ति लात के बारे में एक रिवायत इस प्रकार मिलती है।

अहल ताइफ़ ने अपनी मूर्ति लात के बारे में, जिसे वे रब्बह अर्थात देवी कहते थे, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में यह निवेदन किया कि तीन वर्ष तक इसे न तोड़ा जाए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तौहीद के प्रति दृढ़ता ने इस नरमी को स्वीकार नहीं किया। अहल ताइफ़ ने फिर कहा कि एक वर्ष तक ही इसे न गिराया जाए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फिर भी इंकार किया। उन्होंने कहा कि अच्छा एक महीने तक ही इसे न गिराने की अनुमति दे दें ताकि लोग इस्लाम में प्रवेश कर जाएँ और मूर्ख लोग तथा स्त्रियाँ इसे गिराने के कारण इस्लाम से दूर न हों। लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसकी भी अनुमति नहीं दी और हज़रत अबू सफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हो तथा हज़रत मुगीरा बिन शुबा रज़ियल्लाहु अन्हो को भेजकर उस मूर्ति को गिरवा दिया।

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तौहीद के लिए दृढ़ता ने यह स्वीकार नहीं किया कि किसी भी रूप में ये मूर्तियाँ रहने दी जाएँ, जबकि अब इस्लामी शासन स्थापित हो चुका था।

(अस्सीरतुल हलबिया, जिल्द 3, पृष्ठ 304 से 305, दारुल कुतुब अल्-इल्मिया, बेरूत)

अबू अल्-हय्याज असदी से रिवायत है, वे कहते हैं कि मुझे हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा: क्या मैं तुम्हें उस कार्य पर न भेजूँ, जिस पर मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भेजा था, कि तुम कोई मूर्ति न छोड़ना, बल्कि उसे मिटा देना और कोई उभरी हुई क़ब्र न छोड़ना, बल्कि उसे समतल कर देना।

(सहीह मुस्लिम (अनुवाद), जिल्द 4, पृष्ठ 133, किताबुल जनाज़ा, बाब अल्-अमर बितसवियतिल क़ब्र, हदीस 1597, नूर फाउंडेशन रब्वा)

क्यों? क्योंकि ये तौहीद के विरुद्ध बातें हैं और इस्लामी शासन में इन्हें किसी भी प्रकार सहन नहीं किया जा सकता। लेकिन अफसोस है कि आजकल मुसलमानों की एक बड़ी संख्या कब्रों की पूजा, सज्दा करने और खुदा तआला से मांगने के बजाय इन कब्रों में दफन बुज़ुर्गों से मांगती है और इस विषय में अत्यधिक बढ़ा-चढ़ाकर करती है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि नबी पाक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तौहीद की स्थापना के लिए मुशरिकीन-ए-मक्का जैसी एक शक्तिशाली जाति का सामना किया और अंततः ख़ाना काबा को तीन सौ साठ मूर्तियों से पवित्र कर दिया। लेकिन इसके साथ-साथ आपने सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस्लाम स्वीकार करने वालों के दिलों में भी तौहीद स्थापित करने के लिए एक महान और बरकत वाला प्रयास किया और अपनी पवित्र शक्ति के माध्यम से तौहीद से प्रेम करने वाली एक जमाअत स्थापित कर दी।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को इतनी सूक्ष्म और उत्कृष्ट शैली में शिक्षा दी कि शिर्क की हल्की सी छाया भी किसी के विचार में उत्पन्न न हो पाई और इसके लिए

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को इस बात से भी मना किया कि वे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की प्रशंसा में अतिशयोक्ति न करें।

हज़रत इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है। उन्होंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को मिम्बर पर कहते हुए सुना कि मैंने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह कहते हुए सुना कि मेरी प्रशंसा में अतिशयोक्ति न करो, जैसे नसरानियों ने इब्न मरियम की प्रशंसा में अतिशयोक्ति की थी। मैं तो केवल उसका बंदा हूँ, खुदा तआला का बंदा हूँ, अतः तुम कहो कि खुदा का बंदा और उसका रसूल।

(सहीह अल्-बुखारी, किताब: अहादीसुल अंबिया, बाब: वज़कुर फिल किताब मरियम, हदीस संख्या: 3445)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो से मिले। वे एक काफिले में जा रहे थे और अपने पिता की कसम खा रहे थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

सुनो! खुदा तआला तुम्हें इससे मना करता है कि तुम अपने बाप-दादाओं की कसम खाओ। जिसे कसम खानी हो, वह खुदा की कसम खाए या चुप रहे।

(सहीह अल्-बुखारी, किताब अल्-ईमान वन्नुज़ूर, बाब: ला तहलिफ़ू बिआबाइकम, हदीस 6646)

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को यह स्वीकार नहीं था कि खुदा तआला की तौहीद के सामने किसी भी चीज़ को थोड़ा सा भी स्थान दिया जाए।

तौहीद का कलिमा पढ़ने वाले के स्थान

के बारे में एक रिवायत में इस प्रकार वर्णन हुआ है। उबैदुल्लाह बिन अदी बिन खियार बयान करते हैं कि हज़रत मिकदाद बिन अम्र किंदी रज़ियल्लाहु अन्हो, जो बनू ज़ुहरा के सहयोगी थे और उन लोगों में से थे जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ बद्र में सम्मिलित हुए, उन्होंने बताया कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से निवेदन किया कि बताइए यदि मेरा सामना काफ़िरों में से किसी व्यक्ति से हो जाए और हम दोनों युद्ध करें, और वह मेरी एक भुजा को तलवार से काट दे, फिर वह मुझसे एक पेड़ के पीछे छिप जाए और कहे कि मैं ख़ुदा के लिए मुसलमान हो गया हूँ। या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! जब वह यह कह दे, कलिमा पढ़ ले, तो क्या उसके बाद मैं उसे मार सकता हूँ? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: उसे क़त्ल न करो। हज़रत मिकदाद रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा: या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! उसने मेरा एक हाथ काट दिया है और उसे काटने के बाद यह कहा है कि ला इलाहा इल्लल्लाह। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

उसे क़त्ल न करो, क्योंकि यदि तुमने उसे क़त्ल कर दिया तो वह उस स्थान पर हो जाएगा जो तुम्हें उसे क़त्ल करने से पहले प्राप्त था, और तुम उसके उस स्थान पर हो जाओगे जो उसे इस कलिमा के कहने से पहले प्राप्त था।

(सहीह अल्-बुखारी, किताबुल मगाज़ी, बाब (12), हदीस संख्या 4019)

इसलिए चाहे जितने पुराने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु थे, यदि उन्होंने भी कोई ऐसी हरकत की, तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे सख़्त नापसंद किया। लेकिन आज के उलेमा की हालत देखें।

पाकिस्तान में अहमदियों को कलमा पढ़ने के बावजूद जिस अत्याचार का निशाना बनाया जाता है, उसकी कोई सीमा नहीं। इन अत्याचार करने वालों का फैसला इस रिवायत में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पहले ही बता दिया है। बहरहाल, जो लोग इन कट्टर मौलवियों के पीछे चल रहे हैं, उन्हें विचार करना चाहिए।

फिर इसी संदर्भ में एक रिवायत में आता है। हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हमें एक अभियान पर भेजा। सुबह के समय हम जुहैना के हुरकात में पहुँचे। हुरकात, जुहैना कबीले के क्षेत्र में एक गाँव का नाम था। वहाँ एक व्यक्ति को मैंने पकड़ लिया। उसने कहा "ला इलाहा इल्लल्लाह", लेकिन मैंने उसे भाले से मार दिया। फिर मेरे दिल में इस बात की कसक पैदा हुई, क्योंकि उसने "ला इलाहा इल्लल्लाह" कहा था और मैंने फिर भी उसे मार दिया। तो मैंने इसका उल्लेख नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से किया। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: क्या उसने "ला इलाहा इल्लल्लाह" कहा और तुमने उसे क़त्ल कर दिया? मैंने निवेदन किया, ऐ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! उसने तो यह हथियार के डर से कहा था। आपने फ़रमाया: तुमने उसका दिल क्यों नहीं चीर दिया ताकि तुम जान लेते कि उसने यह दिल से कहा था या नहीं। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मेरे सामने यह बात दोहराते रहे, यहाँ तक कि मैंने यह इच्छा की कि काश! मैं उसी दिन इस्लाम स्वीकार करता।

(सहीह मुस्लिम (अनुवाद) भाग 1 पृष्ठ 88-89, किताब अल्-ईमान – बाबु तहरीम क़त्ल अल्-काफिर बाद अन क़ाला: ला इलाहा इल्लल्लाह, हदीस 132, नूर फाउंडेशन रब्वा)

फिर एक रिवायत में आता है। हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास एक व्यक्ति आया और उसने कहा: ऐ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! जन्नत और जहन्नम को अनिवार्य करने वाली दो बातें कौन-सी हैं? आपने फ़रमाया: जो इस अवस्था में मृत्यु को प्राप्त हुआ कि वह अल्लाह का किसी चीज़ को साझी नहीं बनाता, वह जन्नत में प्रवेश करेगा; और जो व्यक्ति इस अवस्था में मरा कि वह अल्लाह का साझी ठहराता था, वह आग में प्रवेश करेगा।

(सहीह मुस्लिम (अनुवाद) भाग 1 पृष्ठ 84-85, किताब अल्-ईमान, बाब: इस बात का प्रमाण कि जो व्यक्ति इस अवस्था में मरा कि वह अल्लाह के साथ किसी को साझी नहीं ठहराता, वह जन्नत में जाएगा... हदीस संख्या: 127)

महमूद बिन लबीद रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: मुझे तुम पर सबसे अधिक जिस चीज़ का डर है, वह शिर्क-ए-असगर है। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुने निवेदन किया: ऐ अल्लाह के रसूल! शिर्क-ए-असगर क्या है? आपने फ़रमाया: रिया (दिखावा)। क़ियामत के दिन जब लोगों को उनके कर्मों का बदला दिया जाएगा, तो अल्लाह तआला उनसे फरमाएगा कि जिन लोगों के लिए तुम दुनिया में दिखावा करते थे, उन्हीं के पास जाओ और देखो क्या तुम्हें उनसे कोई बदला मिलता है। अब क्षमा माँगनी है तो उन्हीं से माँगो, फिर देखो तुम्हें क्या मिलता है।

(मुस्नद इमाम अहमद बिन हनबल भाग 7 पृष्ठ 799 हदीस: 24030, आलमुल कुतुब 1998)

अतः लोगों से कोई भी लाभ उठाने के लिए दिखावा करना और खुशामद करना ऐसा ही है, जैसे अल्लाह तआला के मुकाबले पर किसी को लाना, और यह शिर्क है जो अल्लाह तआला को अत्यंत नापसंद है।

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो ने बयान किया कि जब यह आयत उतरी: "अल्लज़ीना आमनू वलम यलबिसू ईमानहुम बिज़ुल्म" अर्थात जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अपने ईमान को अत्याचार के साथ मिश्रित नहीं किया, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुने कहा: हम में से कौन है जिसने अत्याचार नहीं किया? हम में तो बहुत से लोग ऐसे होंगे, हमें पता भी नहीं चलता और हम अत्याचार कर बैठते हैं। तब अल्लाह अज़्ज़ व जल ने यह आयत उतारी: "इन्नश्शिर्क लज़ुल्मुन अज़ीम" अर्थात शिर्क निश्चय ही बहुत बड़ा अत्याचार है।

(सहीह अल्-बुख़ारी, किताब अल्-ईमान, बाब: ज़ुल्म दून ज़ुल्म, हदीस 32)

यह उत्तर फिर अल्लाह तआला की ओर से आ गया कि शिर्क बहुत बड़ा अत्याचार है। अतः अल्लाह तआला के अतिरिक्त किसी भी वस्तु पर निर्भर करना शिर्क है। सूक्ष्मता से हमें देखना चाहिए कि कहीं हममें शिर्क का कोई पहलू तो नहीं, क्योंकि यह बहुत बड़ा अत्याचार है।

बुख़ारी की जो व्याख्या हमारी प्रकाशित हुई है, जो हज़रत वलीउल्लाह शाह साहिब ने की है, उसमें लिखा है कि "इन्नश्शिर्क लज़ुल्मुन अज़ीम। ज़ुल्म के अर्थ हैं: किसी चीज़ को उसके उचित स्थान से हटाकर रखना। हर प्रकार की बुरी आदत और अनुचित बातें ज़ुल्म के अर्थ में शामिल हैं। 'कुफ्रुन दून कुफ्र' के शीर्षक के अंतर्गत शिर्क को सबसे बड़ा कुफ्र बताया गया है और साधारण बुरी आदत को भी कुफ्र कहा गया है।" यही इसकी सूक्ष्मता है। "फिर इसके बाद 'ज़ुल्मुन दून ज़ुल्म' के शीर्षक के अंतर्गत शिर्क को सबसे बड़ा अत्याचार बताते हुए समझाया गया कि वह क्यों महान पाप है? इसलिए कि इसमें अल्लाह तआला के विशेष गुण दूसरों की ओर जोड़ दिए जाते हैं। इबादत अर्थात प्रेम और आज्ञापालन, जो वास्तव में अल्लाह तआला का अधिकार है, उसमें दूसरों को साझी बना लिया जाता है। मनुष्य, जो उसका बंदा था और उसकी इच्छा पूरी करने के लिए आया था, अपने मन या अपने जैसे मनुष्य या तुच्छ प्राणियों का बंदा बनकर अपने आपको उस स्थान से बहुत नीचे गिरा देता है, जिस पर खड़े होने के लिए उसे पैदा किया गया था। 'हक़ूक़ुल-इबाद' में अनुचित हस्तक्षेप जितना बड़ा अत्याचार है, 'हक़ूक़ुल्लाह' में अनुचित हस्तक्षेप उससे कहीं अधिक बड़ा अत्याचार है।" अर्थात लोगों के अधिकारों में जो अत्याचार है वह तो है ही, लेकिन अल्लाह के अधिकारों को ठीक प्रकार से अदा न करना भी अत्याचार है। "यही अत्याचार का अर्थ है जो शिर्क में पूर्ण रूप से पाया जाता है। शिर्क वास्तव में मनुष्य की उच्चतम पूर्णता को नष्ट करने वाला है... आयत और हदीस से प्रमाण लेते हुए इमाम बुख़ारी ने यह बताया है कि पूर्ण ईमान वही है जो शिर्क की मिलावट से पूरी तरह शुद्ध हो। 'उलाइका लहुमुल अम्नु वहुम मुहतदून' (अल्-अनआम: 83)। पूर्ण सुरक्षा और मार्गदर्शन उन्हीं लोगों का भाग है जिनके ईमान में किसी प्रकार का शिर्क और अत्याचार की मिलावट न हो। ईमान तब तक पूर्ण नहीं होता जब तक एक ओर अच्छे कर्म उसके साथ न हों और दूसरी ओर वह हर प्रकार के अत्याचार से खाली न हो, क्योंकि शिर्क, पाप और हर प्रकार का कुफ्र उसे अधूरा बनाते रहते हैं।"

(सहीह अल्-बुख़ारी भाग 1 पृष्ठ 79, नज़ारत इशाअत)

अतः यह तौहीद पर दृढ़ रहने और शिर्क से शुद्ध रहने का वह मानदंड है जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हमें बताया।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो ने बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह तआला कहता है कि इब्न-ए-आदम ने मुझे झुठलाया, जबकि उसके लिए ऐसा करना उचित नहीं था। और उसने मुझे गाली दी, जबकि उसके लिए यह भी उचित नहीं था। उसका मुझे झुठलाना यह है कि वह कहता है कि मैं उसे दोबारा कभी पैदा नहीं करूँगा। अर्थात वह अगले जीवन के बाद पुनर्जीवन का इनकार करता है, तो यह अल्लाह को झुठलाना है, जैसे कि मैंने उसे पहली बार पैदा किया था। और उसका मुझे गाली देना यह है कि वह कहता है कि अल्लाह ने कोई बेटा बना लिया है, जबकि मैं बेनियाज़ हूँ। मैंने न किसी को जन्म दिया और न ही मैं जन्मा गया हूँ, और न ही कोई मेरा समकक्ष है। न उसने किसी को जन्म दिया है और न वह जन्मा गया है, और उसके गुणों में उसका कोई भी सहभागी नहीं।

(सहीह अल्-बुख़ारी, किताब तफ़्सीर अल्-क़ुरआन, बाब: क़ौलुहू "अल्लाहुस-समद", हदीस: 4975)

इस सूरत, सूरह इख़्लास की व्याख्या करते हुए एक स्थान पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम यह फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला कहता है: "अल्लाहुस-समद" अल्लाह वह सत्ता है जिस पर सब निर्भर हैं और वह किसी का मोहताज नहीं। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"इस छोटी-सी पंक्ति को, जो एक पंक्ति के बराबर भी नहीं, देखना चाहिए कि कितनी बारीकी और उत्कृष्टता के साथ हर प्रकार की साझेदारी से खुदा की सत्ता को शुद्ध बताया गया है।" अल्लाह तआला को हर प्रकार के शिर्क से पवित्र कर दिया गया। "इसकी व्याख्या यह है कि तर्क के अनुसार साझेदारी चार प्रकार की होती है।" बुद्धि के अनुसार चार प्रकार से साझेदारी हो सकती है। "कभी संख्या में साझेदारी होती है," जैसे एक, दो, तीन। "और कभी पद में," किसी का दर्जा ऊँचा होता है। "और कभी वंश में," यानी पारिवारिक संबंध में। "और कभी कर्म और प्रभाव में।" कार्य और उसके परिणाम के आधार पर।

"तो इस सूरह में इन चारों प्रकार की साझेदारी से खुदा की पवित्रता को बताया गया है और स्पष्ट कर दिया गया है कि वह संख्या में एक है, दो या तीन नहीं; और वह समद है, अर्थात अपने दर्जे, अपनी आवश्यकता और दूसरों के उसके मोहताज होने में अकेला और अद्वितीय है; और उसके सिवा सारी चीज़ें संभव अस्तित्व वाली और नाशवान हैं," जो अपने आप में समाप्त हो जाने वाली हैं। "लेकिन वह सदा रहने वाला है, हमेशा से है और हमेशा रहेगा। और सारी सृष्टि हर समय उसी की मोहताज है। और वह 'लम् यलिद' है, अर्थात उसका कोई बेटा नहीं, ताकि पुत्र होने के कारण कोई उसका सहभागी ठहर जाए; और वह 'लम् यूलद' है, अर्थात उसका कोई पिता नहीं, ताकि पिता होने के कारण कोई उसका सहभागी बन जाए; और वह 'लम् यकुन लहू कुफुवन' है, अर्थात उसके कार्यों में कोई उसका बराबरी करने वाला नहीं, ताकि कर्म

के आधार पर कोई उसका साझी बन सके। इस प्रकार स्पष्ट कर दिया गया कि अल्लाह तआला हर प्रकार की साझेदारी से पवित्र है और वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं।"

(बराहीन-ए-अहमदिया, भाग चतुर्थ, रूहानी ख़ज़ायन, खंड 1, पृष्ठ 518, शेष हाशिया क्रमांक 3)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने बयान किया कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक व्यक्ति को एक टुकड़ी का प्रमुख बनाकर भेजा। वह अपनी नमाज़ में अपने साथियों को क़िराअत कराते और "कुल हुआल्लाहु अहद" पर समाप्त करते, अर्थात अंत में सूरह इख़लास पढ़ते। जब वे लोग लौटे तो उन्होंने नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से इसका उल्लेख किया। आपने फ़रमाया: उससे पूछो कि वह ऐसा क्यों करता था? जब उससे पूछा गया तो उसने कहा: क्योंकि इसमें रहमान के गुणों का वर्णन है और मुझे इसे पढ़ना पसंद है। इस पर नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: उसे बता दो कि अल्लाह उससे प्रेम करता है। यह अल्लाह तआला की तौहीद का घोषणा है, तो सुन लो कि अल्लाह भी तुमसे प्रेम करता है।

(सहीह अल्-बुख़ारी, किताब अत-तौहीद, बाब: नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अपनी उम्मत को तौहीद की ओर बुलाना, हदीस 7375)

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुके जीवन में भी अल्लाह तआला से प्रेम और तौहीद से लगाव के गहरे उदाहरण मिलते हैं।

एक रिवायत में आता है कि हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो ने बयान किया कि अंसार में से एक व्यक्ति मस्जिद क़ुबा में उनकी इमामत कराता था। जब भी वह नमाज़ में कोई सूरह पढ़ता, तो "कुल हुआल्लाहु अहद" से शुरू करता, फिर उसके बाद दूसरी सूरह पढ़ता, और वह हर रकअत में ऐसा करता था। उसके साथियों ने उससे कहा कि तुम यह सूरह पढ़ते हो, फिर समझते हो कि यह पर्याप्त नहीं, इसलिए दूसरी सूरह भी पढ़ते हो। या तो केवल इसी को पढ़ो या इसे छोड़कर दूसरी सूरह पढ़ो। उसने कहा: मैं इसे छोड़ने वाला नहीं। यदि तुम चाहते हो कि मैं इसी के साथ तुम्हारी इमामत करूँ तो करूँगा, और यदि तुम इसे नापसंद करते हो तो मैं इमामत छोड़ दूँगा। वे लोग उसे अपने में सबसे श्रेष्ठ मानते थे और नहीं चाहते थे कि कोई दूसरा उनकी इमामत करे। जब नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उनके पास आए, तो उन्होंने यह बात बताई। आपने फ़रमाया: ऐ फलाँ! तुम्हारे साथियों की बात मानने से तुम्हें क्या रोकता है? और क्या चीज़ तुम्हें प्रेरित करती है कि तुम हर रकअत में यह सूरह पढ़ते हो? उसने कहा: ऐ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! मुझे इससे प्रेम है। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

निश्चय ही इस सूरह के प्रेम ने तुम्हें जन्नत में प्रवेश करा दिया।

(जामे तिर्मिज़ी, किताब फ़ज़ाइल अल्-क़ुरआन, बाब: सूरह इख़लास के बारे में, हदीस 2901)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पवित्र शक्ति और शिक्षा ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुको भी तौहीद का प्रकाशस्तंभ बना दिया था।

बुख़ारी की एक रिवायत में यह भी आता है कि इस सूरह को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने "क़ुरआन का एक-तिहाई" बताया है।

(सहीह अल्-बुख़ारी, किताब फ़ज़ाइल अल्-क़ुरआन, बाब: "कुल हुआल्लाहु अहद" की श्रेष्ठता, हदीस 5013)

इसकी व्याख्या में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने लिखा है कि "इस सूरह के 'एक-तिहाई क़ुरआन' होने का यह अर्थ नहीं कि यह क़ुरआन के आकार का तीसरा भाग है, बल्कि इसका अर्थ यह है कि इसका विषय अत्यंत महत्वपूर्ण है। क़ुरआन और हदीस से ज्ञात होता है कि अंतिम समय में दो बड़े फ़ितने उत्पन्न होने वाले थे एक दज्जाली फ़ितना और दूसरा याजूज-माजूज का फ़ितना। इन दोनों फ़ितनों ने क्रमशः इस्लाम से टकराना था। एक फ़ितना एक अल्लाह के स्थान पर तीन ख़ुदाओं का सिद्धांत रखता है ख़ुदा बाप, ख़ुदा बेटा, और ख़ुदा रूहुल-क़ुदुस; और दूसरा फ़ितना नास्तिकता का है, जो मूलतः अल्लाह के अस्तित्व का ही इनकार करता है। क़ुरआन ने इन दोनों के विश्वासों का खंडन किया है और सही सिद्धांतों को स्पष्ट किया है। क़ुरआन अल्लाह की प्रशंसा से भरा हुआ है और उसके एक होने की पुष्टि करता है, तथा 'ख़ुदा बेटे' और 'ख़ुदा रूहुल-क़ुदुस' के सिद्धांत का जोरदार खंडन करता है। इस प्रकार क़ुरआन ने एक अल्लाह की प्रभुता को स्थापित किया और अन्य दावों को अस्वीकार किया। इसलिए यह स्पष्ट है कि जब अल्लाह की एकता की पुष्टि क़ुरआन का एक बड़ा भाग है, तो सूरह इख़लास भी उसी महत्व की है।

वास्तव में क़ुरआन का उद्देश्य तौहीद को सिद्ध करना और गलत मान्यताओं को मिटाना है। अतः जब इस सूरह ने अत्यंत संक्षिप्त और प्रभावशाली शब्दों में वह विषय प्रस्तुत कर दिया जिससे गलत धारणाओं का खंडन होता है और तौहीद की सच्चाई स्पष्ट हो जाती है, तो यह सूरह केवल एक-तिहाई नहीं, बल्कि पूरे क़ुरआन के समान महत्व की हो जाती है। इसलिए रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का इसे एक-तिहाई कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं, बल्कि इसके विषय की महत्ता को दर्शाता है।"

(तफ़्सीर कबीर, खंड 15, पृष्ठ 372-373, नवीन संस्करण)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"निश्चय जान लो कि सच्ची और पूर्ण तौहीद केवल नबी के माध्यम से ही प्राप्त हो सकती है, जैसे हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अरब के नास्तिकों और भटके हुए लोगों को हजारों आसमानी निशान दिखाकर अल्लाह के अस्तित्व को मानने पर विवश कर दिया। और आज तक जो लोग आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सच्ची और पूर्ण आज्ञापालन करते हैं, वे इन निशानों को नास्तिकों के सामने प्रस्तुत करते हैं। सच्चाई यही है कि जब तक मनुष्य जीवित अल्लाह की जीवित शक्तियों का अनुभव नहीं करता, तब तक शैतान उसके दिल से नहीं निकलता, न सच्ची तौहीद उसके दिल में प्रवेश करती है, और न वह निश्चित रूप से अल्लाह के अस्तित्व को मान सकता है। और यह शुद्ध और पूर्ण तौहीद केवल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के माध्यम से ही मिलती है।"

(हकीकतुल वह्यी, रूहानी ख़ज़ायन, खंड 22, पृष्ठ 121)

आज के समय में, जो लोग व्यवहार में अल्लाह को एक मानने का दावा करते हैं, उन्होंने भी तौहीद से अपनी आँखें फेर ली हैं।

याजूज-माजूज और दज्जाल के फ़ितने तो अलग हैं, वे बाहरी फ़ितने हैं; मुसलमानों के भीतर भी वास्तविक तौहीद की समझ कम हो गई है। ऐसे ही हालात में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सच्चे अनुयायी को, मसीह मौऊद और महदी मौऊद के रूप में आना था, और अल्लाह तआला के वादे के अनुसार वे आए और तौहीद के विरुद्ध हर हमले का मुकाबला किया।

अतः सच्ची बैअत का अधिकार तभी अदा हो सकता है जब हम सच्ची तौहीद को मानने वाले हों।

जब आपने 23 मार्च को अपनी जमाअत की स्थापना की।

यह मार्च का महीना है जिसमें हम हैं, और 23 मार्च के अवसर पर हम यौमे मसीह मौऊद के जलसे भी करते हैं। यह इसलिए किया जाता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के जिस सेवक को अल्लाह तआला ने अपने वादे के अनुसार भेजा, उसे तौहीद की स्थापना के लिए भेजा गया। अतः जब आपने जमाअत की स्थापना की, तो उसकी बैअत में शामिल होकर हमने यह वचन दिया कि हम भी हमेशा तौहीद पर दृढ़ रहेंगे। और सच्ची तौहीद का अधिकार तभी पूरा होगा जब हम में से प्रत्येक व्यक्ति स्वयं अपने अंदर, अपने परिवार में और अपने समाज में तौहीद की स्थापना के लिए प्रयास करेगा। अल्लाह तआला सभी मुसलमानों को भी यह तौफ़ीक़ दे कि वे अल्लाह के भेजे हुए को स्वीकार करके तौहीद को स्थापित करें और याजूज-माजूज तथा दज्जाली फ़ितनों को तोड़ें, जो आजकल बहुत तीव्रता से हमला कर रहे हैं।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इस्रा के संदर्भ में एक रिवायत इस प्रकार बयान हुई है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: मैं इब्राहीम से उस रात मिला जब मुझे इस्रा कराया गया। उन्होंने कहा: ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! मेरी ओर से अपनी उम्मत को सलाम कहें और उन्हें बता दें कि जन्नत की मिट्टी बहुत शुद्ध है, उसका पानी बहुत मीठा है, और वह एक विस्तृत मैदान है; और उसके पौधे ये शब्द हैं: "सुब्हानल्लाह", "अलहम्दुलिल्लाह", "ला इलाहा इल्लल्लाह" और "अल्लाहु अकबर"।

(जामे तिर्मिज़ी, किताब अद-दुआत, बाब 59, हदीस 3462)

अतः एक मोमिन को इन ज़िक्रों को गहराई से समझकर और पूर्ण रूप से अल्लाह तआला की तौहीद का ज्ञान प्राप्त करके करना चाहिए, तभी सफलता है। हम अल्लाह तआला को एकमात्र और अद्वितीय मानते हैं।

एक रिवायत में यह हदीस-ए-क़ुदसी बयान हुई है। हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना: अल्लाह तबारक व तआला ने फ़रमाया: ऐ इब्न-ए-आदम! तूने मुझसे जो दुआ की और मुझसे आशा रखी, मैंने तुझे क्षमा कर दिया, भले ही तेरे अंदर

कमियाँ हों, और मुझे इसकी परवाह नहीं। ऐ इब्न-ए-आदम! यदि तेरे गुनाह आकाश की ऊँचाई तक पहुँच जाएँ, फिर तू मुझसे क्षमा माँगे, तो मैं तुझे क्षमा कर दूँगा, और मुझे इसकी परवाह नहीं। ऐ इब्न-ए-आदम! यदि तू मेरे पास धरती के बराबर पाप लेकर आए, फिर मुझसे इस अवस्था में मिले कि तूने मेरे साथ किसी को साझी न ठहराया हो, तो मैं उतनी ही मात्रा में तेरे लिए क्षमा लेकर आऊँगा। चाहे तेरे पाप कितने भी हों, यदि तूने शिर्क नहीं किया और मेरी तौहीद को स्वीकार करता है और उस पर अमल करने का प्रयास करता है, तो मैं तुझे क्षमा कर दूँगा।

(जामे तिर्मिज़ी, किताब अद-दुआत, हदीस 3540)

अतः सारी गलतियाँ और सारे गुनाह अल्लाह तआला क्षमा कर देता है जब मनुष्य उसके पास विनम्र होकर जाता है, लेकिन शर्त यह है कि उसने शिर्क न किया हो। अल्लाह तआला की तौहीद का हक़ अदा किया हो, यह भी आवश्यक है। केवल मान लेना, जैसा पहले उदाहरण में कहा गया, पर्याप्त नहीं है। व्यवहार में अपने हर काम से यह सिद्ध करना होगा कि ख़ुदा तआला एकमात्र है।

इसी प्रकार तौहीद के उच्च स्तर के बारे में एक रिवायत इस प्रकार बयान हुई है। हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हो, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आपने फ़रमाया: हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया: ऐ मेरे पालनहार! मुझे कोई ऐसी बात सिखा दे जिसके द्वारा मैं तेरा ज़िक्र भी करूँ और तुझसे दुआ भी करूँ। तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ऐ मूसा! कहो "ला इलाहा इल्लल्लाह।" हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा: ऐ मेरे पालनहार! तेरे सब बंदे यही कहते हैं। अल्लाह तआला ने फिर फ़रमाया: यही कहो "ला इलाहा इल्लल्लाह।" हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा: तेरे सिवा कोई उपास्य नहीं, लेकिन मैं कोई ऐसी विशेष बात चाहता हूँ जो केवल मेरे लिए हो। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ऐ मूसा! यदि मेरे सिवा सातों आसमान और उनमें रहने वाले और सातों धरतियाँ एक पलड़े में रख दी जाएँ और "ला इलाहा इल्लल्लाह" को दूसरे पलड़े में रखा जाए, तो "ला इलाहा इल्लल्लाह" उन सब पर भारी हो जाएगा। अर्थात

धरती और आकाश की सारी सृष्टि, सारी बस्तियाँ और सारी अच्छाइयाँ एक तरफ रख दी जाएँ और "ला इलाहा इल्लल्लाह" को दूसरी तरफ रखा जाए, तो "ला इलाहा इल्लल्लाह" का पलड़ा भारी रहेगा।

(अल्-मुस्तद्रक अला अस-सहीहैन, किताब अद-दुआ..., खंड 1, पृष्ठ 710, हदीस: 1936, दारुल कुतुब अल्-इल्मिया)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक आपत्ति के उत्तर में कलिमा "ला इलाहा इल्लल्लाह" की सच्चाई की व्याख्या करते हुए फ़रमाते हैं:

"हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शिक्षा यह है कि 'ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मद रसूलुल्लाह' कहने से पाप दूर हो जाते हैं यह बिल्कुल सत्य है, और यही वास्तविक सच्चाई है कि जो व्यक्ति सच्चे दिल से ख़ुदा को एकमात्र, बिना किसी साझी के मानता है और यह ईमान रखता है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को उसी सर्वशक्तिमान एक ख़ुदा ने भेजा है, तो यदि उसका अंत इसी कलिमा पर हो, तो वह अवश्य ही मुक्ति पाएगा। आकाश के नीचे किसी अन्य साधन से मुक्ति नहीं। यह विचार करना भी मूर्खता है। लेकिन ख़ुदा को एक और बिना साझी के मानना और यह विश्वास रखना कि उसने अत्यंत दया करके संसार को भटकाव से बचाने के लिए अपना रसूल भेजा, जिसका नाम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम है यह ऐसा विश्वास है कि इससे आत्मा का अंधकार दूर हो जाता है और स्वार्थपरता समाप्त होकर उसकी जगह तौहीद आ जाती है। अंततः तौहीद का प्रबल प्रभाव पूरे हृदय पर छा जाता है और इसी संसार में स्वर्गीय जीवन प्रारंभ हो जाता है। जैसे प्रकाश आने पर अंधकार नहीं टिक सकता, उसी प्रकार जब "ला इलाहा इल्लल्लाह" का प्रकाश हृदय पर पड़ता है, तो स्वार्थपूर्ण अंधकार समाप्त हो जाता है। पाप की वास्तविकता इसके सिवा कुछ नहीं कि अवज्ञा के कारण स्वार्थपूर्ण इच्छाएँ उभरती हैं, जिनका पालन करने वाला व्यक्ति पापी कहलाता है।

और "ला इलाहा इल्लल्लाह" के अर्थ, जो अरबी भाषा के प्रयोग से समझ में आते हैं, यह हैं: 'मेरे लिए कोई उद्देश्य, कोई प्रिय, कोई उपास्य और कोई आज्ञापालनीय नहीं, सिवाय अल्लाह के।' स्पष्ट है कि यह अर्थ पाप की जड़ के बिल्कुल विपरीत हैं। अतः जो व्यक्ति इन अर्थों को सच्चे मन से अपने भीतर स्थान देगा, उसके हृदय से विपरीत भावनाएँ निकल जाएँगी, क्योंकि दो विरोधी बातें एक साथ नहीं रह सकतीं। जब स्वार्थपूर्ण इच्छाएँ समाप्त हो जाती हैं, तो यही वह अवस्था है जिसे सच्ची पवित्रता और वास्तविक सत्यनिष्ठा कहा जाता है। और कलिमा के दूसरे भाग अर्थात अल्लाह के भेजे हुए पर ईमान की आवश्यकता इसलिए है कि अल्लाह के आदेशों पर भी विश्वास हो सके, और यह तभी संभव है जब उस पर ईमान लाया जाए जिसके माध्यम से यह आदेश संसार में पहुँचे।"

(नूरुल-क़ुरआन नंबर 2, रूहानी ख़ज़ायन, खंड 9, पृष्ठ 418–420)

हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक दिन हमसे फ़रमाया: शिर्क से बचो, क्योंकि यह चींटी के पदचिह्न से भी अधिक सूक्ष्म है। एक व्यक्ति ने पूछा: ऐ अल्लाह के रसूल! हम इससे कैसे बचें, जबकि यह इतना सूक्ष्म है? आपने फ़रमाया, यह दुआ पढ़ा करो:

"अल्लाहुम्मा इन्ना नऊज़ु बिका मिन अं नुशरिक बिका शैअं नअलमहु व नस्तग़फिरुका लिमा ला नअलम।"

अर्थ: ऐ अल्लाह! हम तेरी शरण में आते हैं कि हम जान-बूझकर तेरे साथ किसी को साझी ठहराएँ, और जो अनजाने में हो जाए उसके लिए हम तुझसे क्षमा माँगते हैं।

हमेशा अल्लाह से सहायता माँगते रहो।

(मुस्नद इमाम अहमद बिन हनबल, खंड 6, पृष्ठ 614–615, हदीस 19835, आलमुल कुतुब बेरूत 1998)

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सुबह उठते समय यह दुआ पढ़ते थे:

"असबह्ना अला फ़ित्रतिल इस्लाम व अला कलिमतिल इख़लास व अला दीनि नबिय्यिना मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम व अला मिल्लति अबीना इब्राहीम हनीफन मुस्लिमन व मा काना मिनल मुशरिकीन।"

अर्थ: हमने इस्लाम की प्रकृति, कलिमा-ए-इख़लास, अपने नबी मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के धर्म और अपने पूर्वज इब्राहीम के मार्ग पर सुबह की, जो एकेश्वरवादी मुसलमान थे और शिर्क करने वालों में से नहीं थे।

सुबह उठकर अल्लाह तआला को याद करना चाहिए।

(मुस्नद इमाम अहमद, खंड 5, पृष्ठ 294–295, हदीस 15434)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि जब शाम होती तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम यह दुआ पढ़ते:

"अम्सैना व अम्सल मुल्कु लिल्लाह वलहम्दु लिल्लाह ला इलाहा इल्लल्लाह वहदहु ला शरीक लह।"

अर्थ: हमने और समस्त संसार ने अल्लाह के लिए शाम की, और सारी प्रशंसा उसी के लिए है। उसके सिवा कोई उपास्य नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं।

(सहीह मुस्लिम, किताब अज़-ज़िक्र व अद-दुआ, हदीस 2723)

अब्दुल्लाह बिन बुरैदा अपने पिता से रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक व्यक्ति को दुआ करते सुना, जो कह रहा था: ऐ अल्लाह! मैं तुझसे इस बात के माध्यम से माँगता हूँ कि मैं गवाही देता हूँ कि तू ही अल्लाह है, तेरे सिवा कोई उपास्य नहीं, तू एक है, निरपेक्ष है, न उसने जन्म दिया और न वह जन्मा गया, और कोई उसका समकक्ष नहीं। इस पर आपने फ़रमाया: उसने अल्लाह के महान नाम के द्वारा दुआ की है जब इस नाम से दुआ की जाती है तो वह स्वीकार करता है।

(जामे तिर्मिज़ी, किताब अद-दुआत, हदीस 3475)

हज़रत अस्मा बिन्त उमैस रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: क्या मैं तुम्हें ऐसे शब्द न सिखाऊँ जिन्हें तुम कठिन समय में पढ़ो? वे शब्द हैं:

"अल्लाहु अल्लाहु रब्बी ला उश्रिकु बिही शैअं।"

अर्थ: अल्लाह ही मेरा पालनहार है, मैं उसके साथ किसी को साझी नहीं ठहराता।

(सुनन अबू दाऊद, हदीस 1525)

मुसीबत के समय यह भी एक महत्वपूर्ण दुआ है।

हज़रत इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम घबराहट के समय यह दुआ करते थे:

"ला इलाहा इल्लल्लाहुल अज़ीमुल हलीम, ला इलाहा इल्लल्लाहु रब्बुस्समावाति वल-अर्ज़ि व रब्बुल अर्शिल अज़ीम।"

(सहीह अल्-बुख़ारी, किताब अद-दुआत, हदीस 6345)

कितनी सूक्ष्मता से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तौहीद की शिक्षा देते थे। एक रिवायत में आता है कि अबू रम्था रज़ियल्लाहु अन्हो के पिता ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से कहा कि मैं चिकित्सक हूँ, आप अपनी पीठ पर जो निशान है (मुहर-ए-नुबूवत) मुझे दिखाएँ। आपने फ़रमाया: चिकित्सक तो अल्लाह है,

तुम तो केवल सहायक हो। रोगी को सांत्वना देने वाले हो, वास्तविक चिकित्सक वही है जिसने उसे पैदा किया और वही उसे स्वास्थ्य देता है।

(सुनन अबू दाऊद, हदीस 4207)

हज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जो गवाही देता है कि अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं, वह एक है, उसका कोई साझी नहीं, और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसके बंदे और रसूल हैं, और ईसा अल्लाह के बंदे हैं... वह जन्नत में प्रवेश करेगा।

(सहीह मुस्लिम, किताब अल्-ईमान, हदीस 28)

हज़रत इब्न उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: इस्लाम की नींव पाँच बातों पर है अल्लाह की इबादत, नमाज़, ज़कात, हज और रोज़े।

(सहीह मुस्लिम, हदीस 16)

हज़रत यसीरा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: तुम तस्बीह, तहलील और तक़दीस किया करो, और गिनती उँगलियों पर करो।

(अल्-मुस्तद्रक, हदीस 2007)

अतः आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हर अवसर पर उम्मत को तौहीद की शिक्षा दी।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने लिखा कि एक फ्रांसीसी इतिहासकार अल्फॉन्स दे लामार्तीन ने भी स्वीकार किया कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हर समय अल्लाह का नाम लेते थे और उनका उद्देश्य केवल तौहीद का प्रचार था।

(खुतबात महमूद, खंड 9, पृष्ठ 260-261)

इसी प्रकार यह भी बताया गया कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी अंतिम अवस्था में भी लोगों को चेताया कि उन्हें अल्लाह के बराबर न ठहराया जाए।

(खुतबात महमूद, खंड 20, पृष्ठ 600-601)

अतः हमें चाहिए कि हम सच्चे अर्थों में तौहीद को समझें और उस पर अमल करें। अल्लाह तआला हमें इसकी तौफीक दे।

आज दुनिया के हालात भी बहुत गंभीर होते जा रहे हैं। अमेरिका और इज़राइल विश्व में, विशेषकर मुस्लिम देशों में, अपना प्रभुत्व स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं। इस परिस्थिति में मुस्लिम देशों का एक होना बहुत आवश्यक है। पाकिस्तान द्वारा सुलह के प्रयास किए जा रहे हैं, लेकिन कुछ गलतफहमियाँ भी फैल रही हैं।

दुश्मन इन हालात का फायदा उठाकर अशांति फैलाना चाहता है ताकि मुस्लिम देश एक न हो सकें। इसलिए बहुत अधिक दुआओं की आवश्यकता है। अल्लाह तआला हमें तौहीद पर स्थिर रहने और मुस्लिम उम्मत को एकता में बाँधने की तौफीक प्रदान करे।

★ ★ ★

पृष्ठ 24 का शेष

☆यहूदी अपने संगठन में अपने ख़र्चे स्वयं वहन करेंगे और मुसलमान अपने ख़र्चे स्वयं वहन करेंगे परन्तु लड़ाई की अवस्था में वे दोनों मिलकर कार्य करेंगे। ☆मदीना उन समस्त लोगों के लिए जो इस समझौता में सम्मिलित होते हैं एक प्रतिष्ठित स्थान होगा। ☆जो अनजान लोग शहर के लोगों की सहायता में आ जाएँ उनके साथ भी वही व्यवहार होगा जो शहर के मूल निवासियों के साथ होगा परन्तु मदीना के लोगों को यह अनुमति न होगी कि किसी स्त्री को उसके परिजनों की सहमति के विपरीत अपने घरों में रखें। ☆झगड़े और फ़साद निर्णय के लिए ख़ुदा और उसके रसूल के पास प्रस्तुत किए जाएँगे। ☆मक्का वालों तथा उसके मित्र क़बीलों के साथ इस समझौता में सम्मिलित होने वाले कोई समझौता नहीं करेंगे क्योंकि इस समझौता में सम्मिलित लोग मदीना के शत्रुओं के विरुद्ध इस समझौता द्वारा सहमत हो चुके हैं। ☆जिस प्रकार युद्ध पृथक तौर पर नहीं किया जा सकेगा उसी प्रकार संधि भी पृथक तौर पर नहीं की जा सकेगी। परन्तु किसी को विवश नहीं किया जाएगा कि वह लड़ाई में सम्मिलित हो। ☆हाँ यदि कोई व्यक्ति अत्याचार का कोई कार्य करेगा तो वह दण्डनीय होगा। ख़ुदा निश्चय ही सदाचारी और धर्मनिष्ठों का रक्षक है और मुहम्मद (स.अ.व.) ख़ुदा के रसूल हैं।①

यह उस समझौते का सारांश है। इस समझौते में बार-बार इस बात पर बल दिया गया था कि ईमानदारी और जीवन की स्पष्टता को हाथ से नहीं जाने दिया जाएगा तथा अत्याचारी अपने अत्याचार का स्वयं उत्तरदायी होगा। इस समझौते से स्पष्ट है कि रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की ओर से यह निर्णय हो चुका था कि यहूदियों तथा मदीना के उन लोगों के साथ जो इस्लाम में सम्मिलित न हों, प्रेम और सहानुभूति का व्यवहार किया जाएगा तथा उन्हें भाइयों की तरह रखा जाएगा। परन्तु बाद में यहूदियों के साथ जितने भी झगड़े पैदा हुए उसके उत्तरदायी सर्वथा यहूदी ही थे।

शेष ..

पृष्ठ 2का शेष

लगे हुए हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकें "रूहानी ख़ज़ायन" और ख़ुलफ़ा-ए-अहमदिया के ज्ञान-भंडार तथा अन्य जमाअती साहित्य के प्रकाशन का कार्य भी ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया के मुबारक दौर में तेज़ी से बढ़ा और ये पुस्तकें दुनिया की विभिन्न भाषाओं में भी प्रकाशित हुईं। न केवल ये पुस्तकें प्रकाशित हुईं, बल्कि क़ादियान से निकलने वाले अख़बारों की तर्ज़ पर दुनिया भर में जमाअती अख़बारों और पत्रिकाओं का प्रकाशन भी शुरू हो गया, और इस समय दुनिया के कई देशों से अनेक भाषाओं में जमाअती अख़बार और पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को "वुस्सिअ मकानक" का इल्हाम हुआ, और फिर अल्लाह के घरों तथा उसके ग़रीब बंदों के घरों के निर्माण का सिलसिला शुरू हुआ। आज तक दुनिया भर में हज़ारों मस्जिदें बन चुकी हैं और ग़रीबों के सैकड़ों घर बनाए जा चुके हैं।

इसके अतिरिक्त, ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया के माध्यम से दुखी मानवता के लिए अस्पतालों का निर्माण और ग़रीब बच्चों की शिक्षा के लिए स्कूलों की स्थापना—ये सब भी ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया के मीठे फलों में से हैं। और अब "ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट" संस्था के माध्यम से दुनिया भर में ज़रूरतमंदों और ग़रीबों की सेवा तथा आकस्मिक आपदाओं के समय सहायता का कार्य भी जारी है।

ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया इन सभी आवश्यकताओं के साथ-साथ जमाअत की आध्यात्मिक उन्नति के लिए भी दिन-रात प्रयासरत है। पाँचों वक्त की नमाज़ की प्रेरणा, खुदा तआला का स्मरण, नमाज़ का अर्थ सहित पढ़ना, दर्स और अध्ययन की व्यवस्था, दुआओं की ओर ध्यान दिलाना—ये सब कार्य ख़िलाफ़त के साए में जारी हैं, और सबसे बढ़कर यह कि हर अहमदी का अपने समय के ख़लीफ़ा के साथ व्यक्तिगत संबंध होता है।

और अंततः उस सामूहिक एकता का उल्लेख करना आवश्यक है, जो इस समय केवल जमाअत अहमदिया को ख़िलाफ़त के साए में प्राप्त है। अर्थात हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का ख़ुत्बा-ए-जुमुआ, जो मार्गदर्शन और प्रकाश का स्तंभ है, जिसके माध्यम से जमाअत पूरी दुनिया में एक ही समय पर न केवल एकता की डोरी में बंध जाती है, बल्कि भरपूर आध्यात्मिक और शारीरिक लाभ भी प्राप्त करती है।

आज ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया इस वैश्विक एकता की ओर पूरी दुनिया को भी बुला रही है और संसार के लोगों को आपसी मतभेद भुलाकर एक ईश्वर (खुदा तआला) की ओर आने की प्रेरणा दे रही है, और उनके दिलों में यह बात बैठा रही है कि एक खुदा की ओर लौटना और मनुष्यों के बीच न्याय स्थापित करना ही विश्व शांति का वास्तविक साधन है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिन-रात दुनिया भर के देशों और उनके नेताओं को इस सच्ची शांति की ओर बुला रहे हैं। खुदा करे कि ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया की यह जीवनदायी आवाज़ जल्द ही दुनिया के दिलों पर प्रभाव डाले, क्योंकि यही एकमात्र साधन है जो शांति और सुरक्षा का घेरा है।

और खुदा ही तौफ़ीक़ देने वाला है।

★ ★ ★

हज़रत मौलाना नूरुद्दीन ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम रज़ियल्लाहु अन्हु का महान अल्लाह पर भरोसा

निम्नलिखित लेख आदरणीय मलिक सलाहुद्दीन साहिब दरवेश मरहूम, लेखक "अस्हाब-ए-अहमद", की रचना "सवानिह हज़रत मलिक गुलाम फ़रीद साहिब एम.ए., तफ़सीरुल क़ुरआन (अंग्रेज़ी)" से लिया गया है। (संपादक)

जब हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम रज़ियल्लाहु अन्हु रियासत जम्मू और कश्मीर से आ रहे थे, उस समय आपके ऊपर एक व्यक्ति का 1,95,000 रुपये का कर्ज़ अदा करना बाकी था। आदरणीय मियाँ मुहम्मद अब्दुर्रहमान ख़ान साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु (ख़लफ़ हज़रत नवाब मुहम्मद अली ख़ान साहिब) ने इस कर्ज़ के बारे में हज़रत मीर मुहम्मद इस्हाक़ साहिब से सुना था कि:

"पहली बार आपने (हज़रत ख़लीफ़ा प्रथम रज़ियल्लाहु अन्हु) अपने कर्ज़ की अदायगी के लिए पाँच रुपये की किस्त भेजी, तो कर्ज़ देने वाले ने इतनी बड़ी रकम के मुकाबले इतनी छोटी किस्त देखकर लिखा कि क्या आपने मेरा मज़ाक किया है? तो आपने जवाब में लिखा कि इस समय मेरे पास इतनी ही रकम थी, जो मैंने भेज दी। कर्ज़ आपका मेरे ऊपर है और मैं ही इसे अदा करूँगा। आप चिंता न करें।"

(अस्हाब अहमद, जिल्द द्वितीय, पृष्ठ 485)

अल्लाह! अल्लाह!! कैसा ईमान और भरोसा था कि बाहरी हालात अनुकूल न होने पर भी पूरा विश्वास था कि आप इस भारी रकम को अदा कर सकेंगे।

मलिक साहिब का बयान:

मुझे मलिक गुलाम मुहम्मद साहिब क़सूरी ने बताया, और उन्होंने यह घटना स्वयं हज़रत ख़लीफ़ा प्रथम रज़ियल्लाहु अन्हु से सुनी थी कि जब हज़रत ख़लीफ़ा प्रथम रज़ियल्लाहु अन्हु को महाराजा ने अचानक नौकरी से अलग कर दिया और तुरंत रियासत छोड़ने का आदेश दिया, तो कुछ समय बाद उसे एहसास हुआ कि उसने अच्छा नहीं किया। उसने आपको बुलावा भेजा कि आप फिर हमारे पास आ जाएँ, हम पहले से भी अधिक आपकी सेवा करेंगे। तो आपने जवाब भिजवाया कि आप तो केवल एक रियासत के शासक हैं। जिस घर का मैं सेवक हो चुका हूँ, उसके मुकाबले में मैं दुनिया की सबसे बड़ी सल्तनत की हुकूमत को भी बिल्कुल तुच्छ समझता हूँ।

मलिक साहिब ने लिखा कि:

"मैंने कई बार हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम रज़ियल्लाहु अन्हु की अपनी ज़ुबान से सुना। आप फ़रमाया करते थे कि जब मैं महाराजा जम्मू-कश्मीर की नौकरी से अचानक अलग हुआ, उस समय मुझ पर 1,95,000 रुपये का कर्ज़ था। यह घटना लगभग 1893-1892 की है। उन दिनों मेरे पास एक हिंदू व्यक्ति आया करता था, जिसे मुझसे बहुत प्रेम था। चूँकि मैं अपनी आमदनी का बड़ा हिस्सा दान में खर्च कर देता था और अपने पास कुछ नहीं रखता था, वह मुझे प्रेम से कहा करता था कि हकीम साहिब! अपने पास भी कुछ रकम रखा करें। इन राजाओं का कोई भरोसा नहीं, ये छोटी-सी बात पर भी तुरंत नौकरी से निकाल देते हैं। मैं उसे यही जवाब देता था कि जिस खुदा तआला के रास्ते में मैं पैसा खर्च करता हूँ, वह समय आने पर मेरी मदद करेगा।

जब मुझे अचानक नौकरी से हटाने का आदेश मिला, तो वह हिंदू मेरे पास बैठा हुआ था। जब उसे इस बात का पता चला, तो उसने कहा कि मैं आपको पहले ही कहता था कि इन राजाओं का कोई भरोसा नहीं। अब आप उस व्यक्ति को क्या जवाब देंगे, जिसका आपका 1,95,000 रुपये कर्ज़ है? आप मेरी सलाह की परवाह नहीं करते थे, अब आपको पता चलेगा और मेरी सलाह की कीमत समझ आएगी। मैंने कहा, जैसे पहले मैं तुम्हारी सलाह को महत्व नहीं देता था, वैसे ही अब भी नहीं देता।

वह अभी इतना ही कह पाया था कि एक महारानी ने कुछ हजार रुपये यह कहते हुए भिजवाए कि मेरे पास अभी इतनी ही रकम थी।

और इसके तुरंत बाद वह व्यक्ति, जिसका मुझे 1,95,000 रुपये कर्ज़ देना था, उसका कर्मचारी मेरे पास आया और कहने लगा कि उन्होंने मुझे यह कहकर भेजा है कि मौलवी साहिब रियासत से जा रहे हैं, उन्हें पैसे की ज़रूरत होगी। जहाँ इन्हें जाना हो, वहाँ तक इनके और इनके सामान को पहुँचाने का प्रबंध कर दूँ।

इस पर वह हिंदू झुँझलाकर बोला कि इस मूर्ख को देखो, अपने कर्ज़ का तो माँग नहीं किया, बल्कि उल्टा और पैसा देने की बात भेज दी है। फिर उसने कहा, असल में परमेश्वर के यहाँ भी पक्षपात है। हम सारा दिन मेहनत करते हैं, तब कहीं जाकर कुछ रुपये मिलते हैं, और मौलवी साहिब हैं कि उनकी ज़रूरत के लिए बिना माँगे पैसा आ रहा है।"

हज़रत ख़लीफ़ा प्रथम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे कि यहाँ (अर्थात क़ादियान में—लेखक) बैठे ही अल्लाह तआला ने हमारा कर्ज़ उतार दिया। यह बात तो मैंने कई बार स्वयं सुनी थी, लेकिन समझ में नहीं आता था कि इतनी बड़ी रकम, जो आज के हिसाब से लगभग बीस लाख के बराबर थी, कहाँ से आपके पास आ गई।

इसके बारे में आदरणीय मलिक गुलाम मुहम्मद साहिब क़सूरी मरहूम ने मुझे विस्तार से बताया कि कश्मीर रियासत में हर साल लकड़ी की नीलामी होती थी। उस साल महाराजा ने टेंडर मँगवाए। जिस व्यक्ति का टेंडर मंज़ूर हुआ, उसे इस शर्त पर मंज़ूरी दी गई कि लकड़ी की बिक्री से जो लाभ होगा, उसका आधा हकीम नूरुद्दीन साहिब को दिया जाएगा। खुदा तआला की योजना से उस व्यक्ति को उस साल 3,90,000 रुपये का लाभ हुआ, जिसमें से शर्त के अनुसार 1,95,000 रुपये मुझे मिले और मेरा कर्ज़ अदा हो गया।

मलिक साहिब मरहूम ने आगे बताया कि अगले साल भी महाराजा ने जिस व्यक्ति का टेंडर मंज़ूर किया, उस पर भी यही शर्त लगाई कि लाभ का आधा मौलवी साहिब को दिया जाए।

मलिक साहिब ने कहा कि हज़रत ख़लीफ़ा प्रथम ने उन्हें यह नहीं बताया कि उस दूसरे व्यक्ति को कितना लाभ हुआ, लेकिन जब लाभ का आधा हिस्सा हज़रत ख़लीफ़ा प्रथम के पास भेजा गया, तो आपने यह कहकर लेने से इंकार कर दिया कि पिछले साल मैंने इसलिए रकम ली थी कि मेरे रब ने मेरा कर्ज़ अदा करने का साधन बना दिया था। अब जब कर्ज़ अदा हो गया है, तो मैं और कोई रकम लेने का हक़दार नहीं हूँ।[1]

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम के बारे में फ़रमाते हैं:

"मैं अपने आध्यात्मिक भाई का उल्लेख करने के लिए दिल में जोश पाता हूँ, जिनका नाम उनके सच्चे समर्पण के प्रकाश की तरह नूरुद्दीन है। मैं उनकी कुछ धार्मिक सेवाओं को, जो वे अपने हलाल माल को खर्च करके इस्लाम के ऊँचे दर्जे के लिए कर रहे हैं, हमेशा लालसा की दृष्टि से देखता हूँ कि काश वे सेवाएँ मुझसे भी हो पातीं... उन्हें मेरी राह में माल ही नहीं, बल्कि जान और इज़्ज़त तक देने में कोई झिझक नहीं।"

(फ़त्ह-उस-सलाम)

[1] तारीख़-ए-अहमदियत, जिल्द चतुर्थ, पृष्ठ 136 में कर्ज़ का विवरण दर्ज है और यह भी कि दूसरी बार लाभ का आधा हिस्सा पहले से भी अधिक था। तथा यह भी कि कश्मीर से भेजे जाने का वर्ष 1892 है।

★ ★ ★

ख़िलाफ़त अहमदिया और इबादतों की स्थापना

(एच. शम्सुद्दीन, संपादक अख़बार बदर मलयालम संस्करण)

अल्लाह तआला ने मानव की सृष्टि का मूल उद्देश्य अपनी इबादत ठहराया है। अतः फरमाता है:

"وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ"

(अज़-ज़ारियात: 57)

अर्थात मैंने जिन्नों और मनुष्यों को केवल अपनी इबादत के लिए पैदा किया है।

इसी उद्देश्य की शिक्षा और समझ देने तथा मनुष्य को हर समय उसकी ओर ध्यान दिलाने के लिए अल्लाह तआला हर क़ौम में नबी और रसूल भेजता रहा है। अतः फरमाता है:

"وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوْتَ"

(अन-नहल: 37)

अर्थात निश्चय ही हमने हर उम्मत में एक रसूल भेजा ताकि वह यह संदेश दे कि अल्लाह की इबादत करो और झूठे देवताओं से बचो।

नबी की वफ़ात के बाद उसका मिशन ख़िलाफ़त के अधीन जारी रहता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"مَا مِنْ نُبُوَّةٍ قَطُّ اِلَّا تَبِعَتْهَا خِلَافَةٌ"

(कंज़ुल आमाल, जिल्द 6, पृष्ठ 109)

अर्थात कोई भी नुबुव्वत ऐसी नहीं गुज़री जिसके बाद ख़िलाफ़त स्थापित न हुई हो।

आयत-ए-इस्तिख़लाफ़ में ख़ुलफ़ा-ए-रब्बानी की एक स्पष्ट निशानी यह बताई गई है कि:

"يَعْبُدُوْنَنِيْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَيْـًٔا"

कि वे मेरी ही इबादत करेंगे और मेरे साथ किसी को साझी नहीं ठहराएँगे।

और इसी आयत के तुरंत बाद अल्लाह तआला ने ख़िलाफ़त के मूल उद्देश्य की ओर ध्यान दिलाते हुए फ़रमाया:

"وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ"

(अन-नूर: 57)

(और नमाज़ को कायम करो, ज़कात अदा करो और रसूल की आज्ञा का पालन करो ताकि तुम पर दया की जाए)

हदीसों से पता चलता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उम्मत-ए-मुस्लिम में दो बार ख़िलाफ़त 'अला मिनहाज-ए-नुबुव्वत' की सूचना दी: एक अपने विसाल के तुरंत बाद और दूसरी आख़िरी ज़माने में। अतः पहली भविष्यवाणी के अनुसार ख़िलाफ़त-ए-राशिदा स्थापित हुई और दूसरी के अनुसार आज ख़िलाफ़त अहमदिया जारी है। ख़िलाफ़त-ए-राशिदा की प्रमुख विशेषता इबादत-ए-इलाही, विशेषकर नमाज़, थी। ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन स्वयं भी नमाज़ और दुआ में अत्यंत तत्पर रहते थे और उम्मत में भी इस भावना को जीवित रखते थे। इसी कारण प्रारंभिक युग का इतिहास इबादत के प्रेरणादायक घटनाओं से भरा हुआ है। आइए, उनमें से कुछ घटनाओं पर संक्षेप में नज़र डालते हैं:

अल्लाह तआला ने हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अंतिम दिनों में नमाज़ की इमामत का सम्मान देकर मानो ख़िलाफ़त के उच्च पद की घोषणा कर दी।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जमाअत के साथ नमाज़ का इतना ध्यान रखते थे कि:

"أَنَّهُ كَانَ يُوَكِّلُ رِجَالًا بِإِقَامَةِ الصُّفُوفِ فَلَا يُكَبِّرُ حَتَّى يُخْبَرَ أَنَّ الصُّفُوفَ قَدِ اسْتَوَتْ"

अर्थात वे कुछ लोगों को पंक्तियाँ सीधी कराने का काम सौंप देते थे और तकबीर तब तक नहीं कहते थे जब तक यह सूचना न मिल जाए कि पंक्तियाँ ठीक हो गई हैं।

(सुनन तिर्मिज़ी/ किताबुस्सलात/ हदीस: 227)

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने विरोधियों को जिन शब्दों में चेतावनी दी, वह इस्लामी इतिहास में ख़िलाफ़त और इबादत के गहरे संबंध को स्पष्ट करता है। आपने कहा:

"यदि तुम मुझे क़त्ल करोगे तो ख़ुदा की क़सम! मेरे बाद तुम कभी आपस में प्रेम से नहीं रह सकोगे, न मिलकर नमाज़ पढ़ सकोगे, और न ही एकजुट होकर अपने दुश्मन से लड़ सकोगे।"

(तारीख़ुर-रसुल वल-मुलूक, प्रसिद्ध 'तारीख़ तबरी', लेखक: इमाम अबू जाफ़र मुहम्मद बिन जरीर तबरी, वफ़ात 310 हिजरी)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में आता है कि हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा था कि नमाज़ अली के यहाँ अच्छी होती है और रोटी मुआविया के यहाँ अच्छी मिलती है।

(ख़िलाफ़त-ए-राशिदा, पृष्ठ 194 से लिया गया)

संक्षेप में, प्रारंभिक युग में ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन की इबादत और उसे उम्मत में स्थापित करने के लिए उनकी निरंतर कोशिशें इस्लामी इतिहास का एक उज्ज्वल अध्याय हैं।

एक बार दुश्मन का एक जासूस, जो मुस्लिम सेना की स्थिति जानने आया था, मुसलमानों की जिस बात से सबसे अधिक प्रभावित हुआ, वह उनकी इबादत थी। उसने खुलकर कहा:

"वे लोग अजीब हैं कि दिन में लड़ते हैं और रात को उठ-उठकर ख़ुदा तआला की इबादत और उसका ज़िक्र करते हैं।"

(अल्-बिदाया वन्निहाया, भाग: वक़ा-ए-यर्मूक)

(संदर्भ: तफ़सीर कबीर, जिल्द 9, पृष्ठ 191, संस्करण 2023 यूके)

लेकिन ख़िलाफ़त-ए-राशिदा के समाप्त होने से मुस्लिम दुनिया को बहुत गहरा आघात पहुँचा। जैसा कि एक शायर ने कहा:

"मस्जिदें मातम कर रही हैं कि नमाज़ी नहीं रहे,
यानी वे हिजाज़ी गुणों वाले लोग नहीं रहे।"

इस दयनीय स्थिति से इस्लाम को बचाने के लिए अल्लाह तआला ने निर्धारित समय पर हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम को उम्मती नबी का पद देकर "मसीह मौऊद" और "महदी माहूद" के नाम से भेजा। जिनको नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक ही हदीस में चार बार "नबी अल्लाह" कहकर संबोधित किया है।

अतः आप अलैहिस्सलाम अपने स्थान और दर्जे की व्याख्या करते हुए फ़रमाते हैं:

"ख़ुदा तआला की ओर से मुझे दो नाम दिए गए। एक मेरा नाम उम्मती रखा गया, जैसा कि मेरे नाम ग़ुलाम अहमद से स्पष्ट है। दूसरा मेरा नाम परछाईं के रूप में नबी रखा गया, जैसा कि ख़ुदा तआला ने 'बराहीन-ए-अहमदिया' में मेरा नाम अहमद रखा और इसी नाम से मुझे बार-बार पुकारा। यह इस बात की ओर संकेत था कि मैं परछाईं के रूप में नबी हूँ। अतः मैं उम्मती भी हूँ और परछाईं के रूप में नबी भी हूँ।"

(रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 21, पृष्ठ 360)

और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने मिशन के बारे में फ़रमाते हैं:

"वह कार्य जिसके लिए ख़ुदा ने मुझे नियुक्त किया है, यह है कि ख़ुदा और उसकी सृष्टि के बीच जो दूरी और कटुता आ गई है, उसे दूर कर के प्रेम और सच्चाई का संबंध फिर से स्थापित करूँ।"

(रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 20, पृष्ठ 180)

"मुझको स्वयं उसी ने दिया है शुद्ध एकेश्वरवाद का स्रोत,
ताकि फिर से धर्म के बाग़ को हरा-भरा करूँ।"

हर हाल में अपने सफल मिशन के बाद 26 मई 1908 को आप अलैहिस्सलाम इस नश्वर संसार से विदा हो गए। और अगले ही दिन अल्लाह तआला ने अपने वादे के अनुसार फिर से ख़िलाफ़त 'अला मिनहाज-ए-नुबुव्वत' स्थापित कर दी।

ख़िलाफ़त अहमदिया के सौ वर्षों का इतिहास इस बात के स्पष्ट प्रमाण देता है कि ख़ुलफ़ा-ए-अहमदियत की विशेष पहचान इबादत-ए-इलाही की स्थापना है।

ख़िलाफ़त-ए-उला और इबादत-ए-इलाही

अल्लाह तआला ने हज़रत हकीम मौलाना नूरुद्दीन साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु को पहला ख़लीफ़तुल मसीह होने का सम्मान प्रदान किया। आपका तप, पवित्रता

और ईश्वर-भक्ति जगजाहिर है। उस समय के सभी मोमिनों में इबादत के मामले में आपका स्थान अत्यंत उच्च और विशिष्ट था। यहाँ तक कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम भी आपकी नेतृत्व में नमाज़ को प्राथमिकता देते थे और अनेक मामलों, विशेषकर धार्मिक प्रश्नों में, आपसे परामर्श लिया करते थे। नमाज़ और खुदा तआला से प्रार्थना के लिए आपके घर पर भी एक "बैतुदुआ" (प्रार्थना स्थल) था। आप हमेशा जमाअत अहमदिया को नमाज़ की ओर ध्यान दिलाते रहते थे।

आपने बैअत के शब्दों में, अर्थात बैअत करने वालों के वचन में, यह वाक्य जोड़ा:

"मैं नमाज़ की पाबंदी करूँगा और अपनी क्षमता के अनुसार ज़कात और हज अदा करने के लिए तैयार रहूँगा।"

(हयात-ए-नूर, पृष्ठ 337)

मस्जिद नूर के लिए अपील

दौर-ए-ख़िलाफ़त-ए-उला की तीन आर्थिक अपीलों का संबंध मदरसा तालीमुल इस्लाम से था। मदरसे की अपनी इमारत के साथ बोर्डिंग हाउस और मस्जिद की बहुत आवश्यकता थी।

(तारीख़ अहमदियत, जिल्द 3, पृष्ठ 312)

जुमे के दिन अवकाश जुमे के दिन अवकाश के संबंध में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम रज़ियल्लाहु अन्हु ने 12 दिसंबर 1911 को दिल्ली में बादशाह-ए-हिंद जॉर्ज पंचम के राज्याभिषेक के अवसर पर एक ज्ञापन प्रस्तुत किया, जो वायसराय के माध्यम से ब्रिटेन के राजा तक पहुँचाया गया। इसमें यह निवेदन किया गया कि मुसलमानों को नमाज़-ए-जुमा अदा करने के लिए हर शुक्रवार दो घंटे की छुट्टी दी जाए।

(तारीख़ अहमदियत, जिल्द 3, पृष्ठ 379 से 381)

"नमाज़-ए-जुमा के लिए विशेष प्रबंध हो,
सब जान लें कि सच्ची खुशी का कारण नमाज़ है।"
(कलाम-ए-मुख़्तार)

ख़िलाफ़त-ए-सानिया और इबादतों की स्थापना

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु का 52 वर्षों का ख़िलाफ़त काल इबादतों की स्थापना के मामले में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। आपने इबादतों अर्थात नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज के बारे में बहुत सरल भाषा में उनकी महत्ता समझाई और उनकी निगरानी के लिए प्रभावी कदम भी उठाए।

इबादत की अपील

नमाज़ मोमिन की ऊँचाई का साधन है। इसलिए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की सारी शिक्षाएँ खुदा तआला से संबंध और नमाज़ के इर्द-गिर्द घूमती हैं। आपने 11 अगस्त 1955 को नौजवानों से कहा:

"वे परहेज़गारी और इबादत पर विशेष ध्यान दें और इतनी इबादत करें कि आसमान के दरवाज़े उन पर खुल जाएँ और उन पर ईश्वरीय संदेश उतरना शुरू हो जाए।"

(अल्-फ़ज़ल, 17 नवंबर 1955)

ज़िक्र-ए-इलाही की अपील:

आपने 12 मई 1944 को यह अपील की कि अहमदी नमाज़ों को सुधारकर जमाअत के साथ पढ़ें और रोज़ कम से कम बारह बार तस्बीह, तहमीद और दरूद शरीफ़ पढ़ने का नियम बनाएँ।

बच्चों के हत्यारे

आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं:

"बड़ा आदमी यदि स्वयं जमाअत के साथ नमाज़ नहीं पढ़ता तो वह मुनाफ़िक है। लेकिन जो लोग अपने बच्चों को जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने की आदत नहीं डालते, वे उनके हत्यारे हैं। यदि माता-पिता बच्चों को जमाअत की नमाज़ की आदत डाल दें तो कभी ऐसा समय नहीं आएगा कि उनकी सुधार असंभव हो जाए।"

(अल्-अज़हार लज़वातुल ख़िमार, संकलन: हज़रत सैयदा मरियम सिद्दीका, पृष्ठ 168)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने नमाज़ के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए जमाअत को समय पर और जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने की न केवल शिक्षा दी, बल्कि इसका व्यावहारिक उदाहरण अपने घर से शुरू किया। इस संबंध में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह लिखते हैं:

"एक बार मुझे याद है कि हम पाँच-छह बच्चे किसी खेल में व्यस्त थे और अस्र की नमाज़ जमाअत के साथ नहीं पढ़ सके। जब हुज़ूर नमाज़ पढ़ाकर वापस आए तो हमें खेलते हुए देखा और सबको इकट्ठा करके हज़रत अम्मी जान के आँगन में ले गए और एक पंक्ति में खड़ा कर दिया ताकि शारीरिक सज़ा दी जाए। अर्थात जमाअत की नमाज़ से अनुपस्थिति की सज़ा भी जमाअत में दी गई। हुज़ूर को यह लगन बचपन से ही थी और छोटी उम्र में ही आप रात को मस्जिद जाकर खुदा के सामने रो-रोकर दुआ करते और इस्लाम की विजय के लिए प्रार्थना करते थे।"

(माहनामा ख़ालिद, नवंबर 1975)

मस्जिदों के निर्माण की अपील

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु को नमाज़ की स्थापना के साथ मस्जिदों के निर्माण की ओर भी विशेष ध्यान था। यहाँ तक कि आपने सदर अंजुमन अहमदिया के बजट का एक-तिहाई (3/1) भाग मस्जिदों के निर्माण में ख़र्च करने की इच्छा व्यक्त की।

आपने 1952 की मजलिस-ए-शूरा में विदेशों में मस्जिदें बनाने के संबंध में कहा:

"यूरोपीय देशों में मस्जिद प्रचार का एक आवश्यक हिस्सा हैं।"

(रिपोर्ट मजलिस-ए-शूरा 1952, पृष्ठ 20)

और आगे फ़रमाया:

"छह देश (अमेरिका, हॉलैंड, जर्मनी, इटली, स्पेन और फ्रांस) ऐसे हैं जहाँ यदि हमारी मस्जिदें बन जाएँ तो प्रचार का बड़ा साधन बन सकती हैं। यदि इन मस्जिदों पर सात लाख रुपये का ख़र्च आए और हम अपने बजट में एक लाख रुपये प्रतिवर्ष रखें तो सात वर्षों में, और यदि पचास हजार रुपये रखें तो चौदह वर्षों में यह रकम पूरी हो सकती है। लेकिन कुछ न कुछ अवश्य होना चाहिए ताकि हम अपने प्रचार कार्य को बढ़ा सकें और लोगों के एकत्र होने का स्थान बन सके।"

(वही, पृष्ठ 21)

मस्जिद निर्माण के लिए नियमित चंदा प्रणाली

इसी अवसर पर आपने मस्जिद निर्माण के लिए चंदा एकत्र करने का एक स्थायी तरीका बताया:

1. नौकरी करने वाले लोग अपनी वार्षिक वृद्धि के पहले महीने की आय दें।
2. बड़े पेशेवर लोग एक महीने की आय का पाँचवाँ भाग दें।
3. छोटे पेशेवर लोग महीने की किसी निश्चित तारीख़ की मजदूरी का दसवाँ भाग दें।
4. व्यापारी अपने महीने के पहले सौदे का लाभ दें।
5. ज़मींदार हर फ़सल पर एक एकड़ में से एक करम के बराबर हिस्सा चंदे में दें।

(अल्-फ़ज़ल, 17 अप्रैल 1952)

ख़िलाफ़त-ए-सानिया के दौरान यूरोप में पाँच मस्जिदें बनाई गईं:

मस्जिद फ़ज़ल लंदन (1924), मस्जिद मुबारक हेग, हॉलैंड (1955), मस्जिद फ़ज़ल उमर हैम्बर्ग, जर्मनी (1957), मस्जिद नूर फ्रैंकफर्ट, जर्मनी (1959), मस्जिद महमूद ज़्यूरिख, स्विट्ज़रलैंड (1963)।

कुल मिलाकर आपके ख़िलाफ़त काल में लगभग 311 मस्जिदें बनाई गईं या उनका विस्तार किया गया। इनमें मस्जिद मुबारक रब्वा, हॉलैंड और अमेरिका की मस्जिदें प्रमुख हैं।

हमारी अज़ानों पर भी सूरज न डूबे!

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं:

"जब यूरोप और अमेरिका की हजारों मस्जिदों में अज़ानें होंगी तो ईसाई समझ जाएँगे कि अब ईसाई धर्म समाप्त हो गया। फिर यह नूर धीरे-धीरे पूरी दुनिया में फैलकर जापान, फिलीपींस और इंडोनेशिया से होता हुआ पाकिस्तान पहुँचेगा। पहले लोग कहते थे कि अंग्रेज़ी साम्राज्य पर सूरज नहीं डूबता, लेकिन अब यह बात अहमदियत पर भी लागू होती है। अब अहमदियत पर भी सूरज नहीं डूबता, लेकिन हम चाहते हैं कि हमारी अज़ानों पर भी सूरज कभी न डूबे।"

(अल्-फ़ज़ल, 26 दिसंबर 1957)

बत्हा की वादियों से जो निकला था आफ़ताब
बढ़ता रहे वह नूर-ए-नुबुव्वत खुदा करे

ज़कात की अदायगी

सैयदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं:

"यह ईद इसलिए आती है ताकि हमारे दिलों को जागृत करे और हमें हमारा कर्तव्य याद दिलाए। ईद हमें बताती है कि हज की इबादत भी हम पर उतनी ही आवश्यक है जितनी नमाज़, ज़कात और रोज़ा आवश्यक हैं।"

(ख़ुत्बा जुमअः, 1 सितंबर 1952)

और आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं:

"यह याद रखना चाहिए कि यह कर, जिसे ज़कात कहा जाता है, केवल आय पर नहीं होता, बल्कि पूँजी और लाभ दोनों को मिलाकर उस पर लगाया जाता है। इस प्रकार ढाई प्रतिशत कभी-कभी वास्तव में लाभ का पचास प्रतिशत तक बन जाता है।"

(अहमदियत यानी वास्तविक इस्लाम, हवाला: अनवारुल उलूम, जिल्द 8, पृष्ठ 306)

और आपने सभी राशियों को बैतुलमाल में जमा करने का भी विशेष निर्देश दिया है।

"यदि तुम्हारे पास धन हो तो उससे ज़कात और सदक़ा दो,
तुम्हें गरीबों की चिंता रहे, समय की परेशानियाँ न रहें!"

हज अदा करने की अपील

सैयदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज के फर्ज़ को अदा करने के लिए ज़ोरदार अपील की। अतः ख़ुत्बा जुमअः 1 सितंबर 1952 में फ़रमाया:

"यह ईद इस ओर भी संकेत करती है कि अपने भाइयों को देखकर हमारे अंदर भी हज करने की इच्छा पैदा होनी चाहिए। जहाँ हम अपने कुछ भाइयों के हज पर जाने की खबर सुनकर खुश होते हैं, वहीं हमें यह भी सोचना चाहिए कि हम क्यों हज न करें? हमारे अंदर यह इच्छा होनी चाहिए कि खुदा तआला हमें भी हज का अवसर दे। लेकिन अफसोस कि लोगों का ध्यान हज की ओर से हट गया है, बहुत कम लोग हैं जो हज के लिए जाते हैं।"

(अल्-फ़ज़्ल, 3 अक्टूबर 1952)

"हज एक अत्यंत आवश्यक फर्ज़ है। नई शिक्षा के प्रभाव में लोग इससे बहुत लापरवाह हो गए हैं, जबकि इस्लाम की प्रगति के साधनों में यह एक बड़ा साधन है। हज की क्षमता का यह अर्थ नहीं कि किसी के पास करोड़ों रुपये हों। एक साधारण व्यक्ति भी यदि सच्चे मन से प्रयास करे तो हज के साधन जुटा सकता है।"

(अज़्-कलाम महमूद फ़रहंगी)

"इसकी सुंदरता प्रकट नहीं होती, यह याद रहे,
यदि मुसलमान के कंधे पर एहराम की चादर न हो।"

ख़िलाफ़त-ए-सालिसा और इबादतों की अपील

हज़रत हाफ़िज़ मिर्ज़ा नासिर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह के ख़िलाफ़त पर आसीन होने के बाद मस्जिदों के निर्माण का कार्य और अधिक फैल गया। अतः स्वीडन, नॉर्वे, अमेरिका, कनाडा, इटली, जापान, स्पेन जैसे देशों में मस्जिदें बनाई गईं। इनमें मस्जिद बशारत, स्पेन को यह विशेषता प्राप्त है कि 750 वर्षों के बाद पहली बार जमाअत अहमदिया को इस भूमि में मस्जिद बनाने का अवसर मिला। फअल्हम्दुलिल्लाह अला ज़ालिक।

* इसी प्रकार "बैतुल्लाह के निर्माण के तेइस महान उद्देश्यों" के शीर्षक पर आपके ख़ुत्बों की श्रृंखला इबादत और मस्जिद निर्माण की ओर ध्यान दिलाने वाला एक उत्कृष्ट कार्य है।

* आपने नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ने और रोज़े के बारे में अनेक ख़ुत्बों, भाषणों और लिखित निर्देशों के माध्यम से जमाअत का ध्यान आकर्षित किया।

* विशेष रूप से जमाअत की सौ वर्षीय जयंती (जुबली) के अवसर पर आपने दुआओं और नफ़्ल नमाज़ों की ओर भी ध्यान दिलाया।

ज़कात की अदायगी

आपने फ़रमाया:

"ज़कात का हर साल अदा करना आवश्यक है और विभिन्न इबादतों के लिए अलग-अलग समय निर्धारित हैं। यदि कोई व्यक्ति यह कहे कि मैं दस साल तक ज़कात नहीं दूँगा और फिर एक बार में सब अदा कर दूँगा, तो उसकी आध्यात्मिक शक्ति और ताकत निश्चित रूप से कायम नहीं रह सकेगी।"

(ख़ुत्बा जुमअः, 22 अप्रैल 1966)

"जो कुछ मैं अपनी ज़बान से कहूँ, उसे करके दिखाऊँ,
हे खुदा! मुझ पर रहम कर, ताकि मैं तेरी कृपा प्राप्त कर सकूँ।"

(हयात-ए-नासिर, पृष्ठ 59-58)

ख़िलाफ़त-ए-राबे में इबादत की स्थापना और मस्जिद निर्माण

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने 8 नवंबर से 20 दिसंबर 1985 तक नमाज़ की स्थापना के विषय पर ख़ुत्बे देते हुए निर्देश दिया कि सहायक संगठन हर महीने अपनी कार्यकारिणी की एक बैठक नमाज़ की स्थिति पर विचार करने के लिए आयोजित करें।

1988 में मुबाहला के चैलेंज के बाद, 17 जून 1988 को एक स्वप्न के आधार पर आपने विशेष रूप से इबादत की ओर ध्यान दिलाया। दो वर्ष बाद 1990 में आपने सूरह फ़ातिहा की व्याख्या पर एक लंबी श्रृंखला शुरू की, जो "ज़ौक़-ए-इबादत और आदाब-ए-दुआ" के नाम से प्रकाशित हो चुकी है। आपने बच्चों की उर्दू कक्षा में भी नमाज़ की शिक्षा के सरल और आकर्षक पाठ शुरू किए और बड़ों को भी उनसे लाभ उठाने का निर्देश दिया।

(ख़ुत्बा जुमअः, 17 अक्टूबर 1997)

एक ख़ुत्बा जुमअः में "सलातुल वुस्ता" की व्याख्या करते हुए आपने व्यस्तता के बीच आने वाली नमाज़ों, विशेषकर फ़ज्र की नमाज़ की सुरक्षा की ओर भी विशेष ध्यान दिलाया।

जुमअःपढ़ने की अपील

1 जनवरी 1988 को आपने यूरोप के अहमदियों को विशेष रूप से जुमअःपढ़ने की अपील की, चाहे इसके लिए नौकरी से छुट्टी लेनी पड़े या इस्तीफा देना पड़े। एक अन्य अवसर पर आपने कहा कि हर तीसरा जुमअःहर हाल में पढ़ना चाहिए। अनेक लोगों ने इस अपील पर अमल करते हुए अपनी नौकरियाँ तक छोड़ दीं, लेकिन अल्लाह तआला ने उनके लिए बेहतर रोज़गार के साधन पैदा कर दिए।

इसी प्रकार रोज़ा, ज़कात, हज आदि इबादतों के संबंध में आपके निर्देश और शिक्षाएँ जहाँ हमेशा ख़िलाफ़त अहमदिया की इबादत की भावना का प्रमाण देती रहेंगी, वहीं अहमदियों को उन पर अमल करने की प्रेरणा भी देती रहेंगी।

मस्जिद निर्माण

पाकिस्तान और अन्य देशों में विरोधियों ने अहमदिया मस्जिदों को गिराने का सिलसिला शुरू किया। पाकिस्तान में ख़िलाफ़त-ए-राबे के दौरान लगभग 20 मस्जिदें शहीद की गईं। इसके बावजूद अल्लाह तआला ने जमाअत को 13,065 नई मस्जिदें बनाने की तौफ़ीक़ दी। इसके अलावा हजारों मस्जिदें ऐसी भी हैं जो अपने नमाज़ियों सहित जमाअत को मिलीं। मस्जिदों के विस्तार की अपील के तहत सैकड़ों मस्जिदों का पुनर्निर्माण और विस्तार किया गया। अमेरिका और कनाडा के अलावा यूरोप में भी अनेक मस्जिदें बनाई गईं।

100 मस्जिद योजना

1989 में आपने जर्मनी में 100 मस्जिदें बनाने की अपील की। 22 मई 1997 को हज़रत सैयदा मेहर आपा (हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की पत्नी) का निधन हुआ। 23 मई को जर्मनी के सालाना इज्तिमा में आपने घोषणा की कि इस योजना के लिए उनकी ओर से 3 लाख (बाद में 5 लाख) जर्मन मार्क दिए जाएँगे, और अपनी ओर से 50 हजार (बाद में डेढ़ लाख) मार्क देने का भी ऐलान किया।

इस योजना के तहत 25 नवंबर 1998 को पहली मस्जिद की नींव रखी गई और 9 जनवरी 2000 को उसका उद्घाटन किया गया।

बाद में आपने कई अफ़्रीकी देशों को भी 100 मस्जिदों की योजना दी। इसके अंतर्गत कई देशों में कार्य जारी है। केन्या में इस योजना के तहत ख़िलाफ़त-ए-राबे में 70 मस्जिदें और तंज़ानिया में 33 से अधिक मस्जिदें बनाई गईं। कई देशों में पहली बार मस्जिद बनाई गई, जैसे कि द्वीप देश तुवालु में 1992 में पहली मस्जिद पूरी हुई।

मस्जिद बैतुल फ़ुतूह

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने ब्रिटेन में एक नई और विशाल मस्जिद के लिए 24 फ़रवरी 1995 को 5 मिलियन पाउंड की अपील की। 28 मार्च 1999 को आपने बैतुल फ़ुतूह की प्रस्तावित जगह पर ईदुल अज़्हा की नमाज़ पढ़ाई और उसी वर्ष 19 अक्तूबर को इस मस्जिद की नींव रखी। 16 फ़रवरी 2001 को आपने इसके लिए और 5 मिलियन पाउंड की अपील की। सैयदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 3 अक्तूबर 2003 को इसका उद्घाटन किया। यहाँ एक समय में दस हज़ार लोग नमाज़ अदा कर सकते हैं और यह पश्चिमी यूरोप की सबसे बड़ी मस्जिद है।

अहमदिया मस्जिद वॉशिंगटन की अपील**

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने 7 जुलाई 1989 को लॉस एंजेलिस, अमेरिका में दिए गए ख़ुत्बा जुमअः में वॉशिंगटन में एक केंद्रीय मस्जिद के निर्माण में हिस्सा लेने की अपील की।

(अल्-फ़ज़्ल, 19 अगस्त 1989)

अल्हम्दुलिल्लाह "बैतुर्रहमान" के नाम से मेरीलैंड में एक सुंदर मस्जिद बन चुकी है, जो जमाअत अमेरिका की केंद्रीय मस्जिद के रूप में उपयोग हो रही है।

क़ुत्ब उत्तरी (नॉर्थ पोल क्षेत्र) की पहली मस्जिद**

आपने 8 अक्तूबर 1993 के ख़ुत्बा जुमअः में फ़रमाया:

"मैं जमाअत अहमदिया नॉर्वे के बारे में बताना चाहता हूँ कि उन्होंने नॉर्थ केप में मस्जिद बनाने का वादा किया है... मेरे साथ के काफिले ने एक हज़ार पाउंड देने का वादा किया है। एक हज़ार मैं पहले ही दे चुका था और कुछ लोगों ने इस अपील के बाद स्वयं भी रकम देने का वादा किया या दे दी। आम अपील के बाद मस्जिद के काम की शुरुआत हो जाएगी।"

(अख़बार बदर क़ादियान, 25 नवंबर 1993)

कनाडा के शहर मिसिसागा की मस्जिद के लिए अपील**

30 अक्तूबर 1992 के ख़ुत्बा जुमअः में आपने कनाडा के शहर मिसिसागा में मस्जिद के निर्माण के लिए चंदे की अपील की और अपनी ओर से 12,000 डॉलर देने की घोषणा की।

(अल्-फ़ज़्ल, 1 नवंबर 1992)

मिसिसागा में 5 एकड़ ज़मीन पर 28,000 वर्ग फुट की बनी हुई इमारत कुछ वर्ष पहले खरीदी गई और वहाँ मिशन हाउस स्थापित किया गया। इसी बड़ी इमारत में जामिया अहमदिया कनाडा भी स्थापित है।

बेल्जियम की मस्जिद**

3 मई 1998 को बेल्जियम के जलसा सालाना के समापन भाषण में आपने एक भव्य मस्जिद के निर्माण की अपील की।

(अल्-फ़ज़्ल, 28 मई 1998)

"चलते रहो, तुम्हारी राह देख रही हैं मस्जिदें,
वे इंतज़ार में हैं कि फिर अल्लाह के घर से अज़ान उठे।"

ख़िलाफ़त-ए-ख़ामिसा का बरकत वाला दौर और इबादतों की स्थापना**

अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ इबादत और ख़िलाफ़त के गहरे संबंध का उल्लेख करते हुए फ़रमाते हैं:

"हमेशा याद रखें कि ख़िलाफ़त के साथ इबादत का गहरा संबंध है, और इबादत क्या है? नमाज़ ही है। जहाँ मोमिनों से दिलों की शांति और ख़िलाफ़त का वादा किया गया है, वहीं अगली आयत में 'अक़ीमुस्सलात' (अन-नूर: 57) का भी आदेश है। अतः मज़बूती प्राप्त करने और ख़िलाफ़त के लाभ पाने की पहली शर्त यह है कि नमाज़ कायम करो। क्योंकि इबादत और नमाज़ ही है जो अल्लाह तआला के अनुग्रहों को आकर्षित करती है। अन्यथा अल्लाह तआला फरमाता है कि यदि इस इनाम के बाद भी तुम मेरी इबादत की ओर ध्यान नहीं दोगे, तो तुम अवज्ञाकारी हो जाओगे। तब कृतज्ञता नहीं, बल्कि अकृतज्ञता होगी, और अवज्ञाकारी लोगों के लिए ख़िलाफ़त का वादा नहीं है, बल्कि मोमिनों के लिए है। अतः यह चेतावनी है हर उस व्यक्ति के लिए जो अपनी नमाज़ों की ओर ध्यान नहीं देता कि वह ख़िलाफ़त के लाभ से वंचित रह जाएगा। यदि ख़िलाफ़त से लाभ उठाना है तो 'यअबुदूनी' (अन-नूर: 56) यानी मेरी इबादत करो—इस आदेश का पालन करना होगा। अतः हर अहमदी को यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि हम इस इनाम का लाभ तभी उठा सकते हैं जब हम अपनी नमाज़ों की रक्षा करने वाले होंगे।"

(ख़ुत्बात मस्रूर, जिल्द 5, पृष्ठ 151-150)

नमाज़ की स्थापना के लिए मार्गदर्शन

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं:

"सहायक संगठन और जमाअती व्यवस्था अपने कार्यों की योजना इस प्रकार बनाएँ कि समय के साथ ढीलापन न आए, बल्कि हर दिन प्रगति हो। हमारी इबादतों की प्रगति ही हमें सफलता दिलाएगी। यह अत्यंत महत्वपूर्ण बात है। पूरे सिस्टम को इस पर गंभीर होने की आवश्यकता है। लजना इमाअल्लाह को भी इसमें अपना योगदान देना चाहिए।

घर में बच्चों की नमाज़ों की निगरानी करना और उन्हें नमाज़ की आदत डालना तथा पुरुषों और युवाओं को मस्जिद जाने के लिए लगातार प्रेरित करना—यह महिलाओं का कार्य है। यदि महिलाएँ अपना कर्तव्य निभाएँ तो एक बड़ा परिवर्तन आ सकता है।"

(ख़ुत्बा जुमअः, 27 जनवरी 2017)

इसी प्रकार मजलिस अंसारुल्लाह भारत 2025 के लिए भेजे गए संदेश में फ़रमाते हैं:

"अंसारुल्लाह की यह बड़ी जिम्मेदारी है कि वे 'इक़ामत-ए-सलात' के महत्व को समझें। अपने बच्चों और परिवार को नमाज़ की ओर ध्यान दिलाएँ। यदि सभी अंसार इस पर ध्यान दें तो एक क्रांति आ सकती है।"

(माहनामा अंसारुल्लाह, दिसंबर 2025)

फ़ज्र की नमाज़ और इंटरनेट

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं:

"अधिकांश घरों की स्थिति देख लें—बड़े से लेकर छोटे तक सुबह फ़ज्र की नमाज़ समय पर इसलिए नहीं पढ़ते कि रात देर तक टीवी देखते रहते हैं या इंटरनेट पर लगे रहते हैं। परिणाम यह होता है कि सुबह आँख नहीं खुलती। बल्कि कई लोग तो यह सोचते भी नहीं कि सुबह नमाज़ के लिए उठना है।"

(ख़ुत्बा जुमअः, 20 मई 2016)

"जिसे तुम तलाश कर रहे हो, वही सुंदरता नमाज़ है,
हमें सिखाया गया है कि जीवन ही नमाज़ है।"

रमज़ान मुबारक**

इसी प्रकार आपने रमज़ान के संबंध में अनेक ख़ुत्बों में इसकी महत्ता और इसके नियमों को ध्यान में रखते हुए इसे सही ढंग से बिताने की हिदायत दी।

मस्जिद बैतुल फ़ुतूह

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने ब्रिटेन में एक नई और विशाल मस्जिद के लिए 24 फ़रवरी 1995 को 5 मिलियन पाउंड की अपील की। 28 मार्च 1999 को आपने बैतुल फ़ुतूह की प्रस्तावित जगह पर ईदुल अज़्हा की नमाज़ पढ़ाई और उसी वर्ष 19 अक्तूबर को इस मस्जिद की नींव रखी। 16 फ़रवरी 2001 को आपने इसके लिए और 5 मिलियन पाउंड की अपील की। सैयदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 3 अक्तूबर 2003 को इसका उद्घाटन किया। यहाँ एक समय में दस हज़ार लोग नमाज़ अदा कर सकते हैं और यह पश्चिमी यूरोप की सबसे बड़ी मस्जिद है।

अहमदिया मस्जिद वॉशिंगटन की अपील**

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने 7 जुलाई 1989 को लॉस एंजेलिस, अमेरिका में दिए गए ख़ुत्बा जुमअः में वॉशिंगटन में एक केंद्रीय मस्जिद के निर्माण में हिस्सा लेने की अपील की।

(अल्-फ़ज़्ल, 19 अगस्त 1989)

अल्हम्दुलिल्लाह "बैतुर्रहमान" के नाम से मेरीलैंड में एक सुंदर मस्जिद बन चुकी है, जो जमाअत अमेरिका की केंद्रीय मस्जिद के रूप में उपयोग हो रही है।

क़ुत्ब उत्तरी (नॉर्थ पोल क्षेत्र) की पहली मस्जिद**

आपने 8 अक्तूबर 1993 के ख़ुत्बा जुमअः में फ़रमाया:

"मैं जमाअत अहमदिया नॉर्वे के बारे में बताना चाहता हूँ कि उन्होंने नॉर्थ केप में मस्जिद बनाने का वादा किया है... मेरे साथ के काफिले ने एक हज़ार पाउंड देने का वादा किया है। एक हज़ार मैं पहले ही दे चुका था और कुछ लोगों ने इस अपील के बाद स्वयं भी रकम देने का वादा किया या दे दी। आम अपील के बाद मस्जिद के काम की शुरुआत हो जाएगी।"

(अख़बार बदर क़ादियान, 25 नवंबर 1993)

कनाडा के शहर मिसिसागा की मस्जिद के लिए अपील**

30 अक्तूबर 1992 के ख़ुत्बा जुमअः में आपने कनाडा के शहर मिसिसागा में मस्जिद के निर्माण के लिए चंदे की अपील की और अपनी ओर से 12,000 डॉलर देने की घोषणा की।

(अल्-फ़ज़्ल, 1 नवंबर 1992)

मिसिसागा में 5 एकड़ ज़मीन पर 28,000 वर्ग फुट की बनी हुई इमारत कुछ वर्ष पहले खरीदी गई और वहाँ मिशन हाउस स्थापित किया गया। इसी बड़ी इमारत में जामिया अहमदिया कनाडा भी स्थापित है।

बेल्जियम की मस्जिद**

3 मई 1998 को बेल्जियम के जलसा सालाना के समापन भाषण में आपने एक भव्य मस्जिद के निर्माण की अपील की।

(अल्-फ़ज़्ल, 28 मई 1998)

"चलते रहो, तुम्हारी राह देख रही हैं मस्जिदें,
वे इंतज़ार में हैं कि फिर अल्लाह के घर से अज़ान उठे।"

ख़िलाफ़त-ए-ख़ामिसा का बरकत वाला दौर और इबादतों की स्थापना**

अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ इबादत और ख़िलाफ़त के गहरे संबंध का उल्लेख करते हुए फ़रमाते हैं:

"हमेशा याद रखें कि ख़िलाफ़त के साथ इबादत का गहरा संबंध है, और इबादत क्या है? नमाज़ ही है। जहाँ मोमिनों से दिलों की शांति और ख़िलाफ़त का वादा किया गया है, वहीं अगली आयत में 'अक़ीमुस्सलात' (अन-नूर: 57) का भी आदेश है। अतः मज़बूती प्राप्त करने और ख़िलाफ़त के लाभ पाने की पहली शर्त यह है कि नमाज़ कायम करो। क्योंकि इबादत और नमाज़ ही है जो अल्लाह तआला के अनुग्रहों को आकर्षित करती है। अन्यथा अल्लाह तआला फरमाता है कि यदि इस इनाम के बाद भी तुम मेरी इबादत की ओर ध्यान नहीं दोगे, तो तुम अवज्ञाकारी हो जाओगे। तब कृतज्ञता नहीं, बल्कि अकृतज्ञता होगी, और अवज्ञाकारी लोगों के लिए ख़िलाफ़त का वादा नहीं है, बल्कि मोमिनों के लिए है। अतः यह चेतावनी है हर उस व्यक्ति के लिए जो अपनी नमाज़ों की ओर ध्यान नहीं देता कि वह ख़िलाफ़त के लाभ से वंचित रह जाएगा। यदि ख़िलाफ़त से लाभ उठाना है तो 'यअबुदूनी' (अन-नूर: 56) यानी मेरी इबादत करो—इस आदेश का पालन करना होगा। अतः हर अहमदी को यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि हम इस इनाम का लाभ तभी उठा सकते हैं जब हम अपनी नमाज़ों की रक्षा करने वाले होंगे।"

(ख़ुत्बात मस्रूर, जिल्द 5, पृष्ठ 151-150)

नमाज़ की स्थापना के लिए मार्गदर्शन

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं:

"सहायक संगठन और जमाअती व्यवस्था अपने कार्यों की योजना इस प्रकार बनाएँ कि समय के साथ ढीलापन न आए, बल्कि हर दिन प्रगति हो। हमारी इबादतों की प्रगति ही हमें सफलता दिलाएगी। यह अत्यंत महत्वपूर्ण बात है। पूरे सिस्टम को इस पर गंभीर होने की आवश्यकता है। लजना इमाअल्लाह को भी इसमें अपना योगदान देना चाहिए।

घर में बच्चों की नमाज़ों की निगरानी करना और उन्हें नमाज़ की आदत डालना तथा पुरुषों और युवाओं को मस्जिद जाने के लिए लगातार प्रेरित करना—यह महिलाओं का कार्य है। यदि महिलाएँ अपना कर्तव्य निभाएँ तो एक बड़ा परिवर्तन आ सकता है।"

(ख़ुत्बा जुमअः, 27 जनवरी 2017)

इसी प्रकार मजलिस अंसारुल्लाह भारत 2025 के लिए भेजे गए संदेश में फ़रमाते हैं:

"अंसारुल्लाह की यह बड़ी जिम्मेदारी है कि वे 'इक़ामत-ए-सलात' के महत्व को समझें। अपने बच्चों और परिवार को नमाज़ की ओर ध्यान दिलाएँ। यदि सभी अंसार इस पर ध्यान दें तो एक क्रांति आ सकती है।"

(माहनामा अंसारुल्लाह, दिसंबर 2025)

फ़ज्र की नमाज़ और इंटरनेट

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं:

"अधिकांश घरों की स्थिति देख लें बड़े से लेकर छोटे तक सुबह फ़ज्र की नमाज़ समय पर इसलिए नहीं पढ़ते कि रात देर तक टीवी देखते रहते हैं या इंटरनेट पर लगे रहते हैं। परिणाम यह होता है कि सुबह आँख नहीं खुलती। बल्कि कई लोग तो यह सोचते भी नहीं कि सुबह नमाज़ के लिए उठना है।"

(ख़ुत्बा जुमअः, 20 मई 2016)

"जिसे तुम तलाश कर रहे हो, वही सुंदरता नमाज़ है,
हमें सिखाया गया है कि जीवन ही नमाज़ है।"

रमज़ान मुबारक

इसी प्रकार आपने रमज़ान के संबंध में अनेक ख़ुत्बों में इसकी महत्ता और इसके नियमों को ध्यान में रखते हुए इसे सही ढंग से बिताने की हिदायत दी।

साल में कम से कम चालीस रोज़े रखें

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने यह भी निर्देश दिया कि साल में कम से कम चालीस (40) नफ़्ली रोज़े रखे जाएँ। आपने फ़रमाया कि अब कम से कम हमें चाहिए कि चालीस हफ़्तों तक विशेष रूप से रोज़े रखें, दुआएँ करें, नफ़्ल नमाज़ अदा करें और सदक़ा दें।

(ख़ुत्बा जुमअः, 12 फ़रवरी 2016)

ज़कात की अदायगी

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं:

"ज़कात की अदायगी के बारे में कुछ प्रश्न उठते हैं। यह एक बुनियादी हुक्म है। जिन पर ज़कात अनिवार्य है, उन्हें अवश्य अदा करनी चाहिए और इसमें भी पर्याप्त गुंजाइश है। कुछ लोगों की रकम कई-कई साल बैंकों में पड़ी रहती है और यदि एक साल के बाद भी वह रकम मौजूद है तो उस पर भी ज़कात देनी चाहिए। फिर महिलाओं के आभूषण हैं, उन पर भी ज़कात देनी चाहिए। जो न्यूनतम दर है, उसके अनुसार उन आभूषणों पर ज़कात होनी चाहिए। इसी प्रकार कुछ ज़मींदारों पर भी ज़कात अनिवार्य होती है, उन्हें भी अपनी ज़कात अदा करनी चाहिए। यह एक बुनियादी आदेश है, इस पर ध्यान देना आवश्यक है।"

(ख़ुत्बा जुमअः, 31 मार्च 2006)

इसी प्रकार आपने इबादतों से संबंधित अनेक विषयों को बहुत सरल ढंग से समझाया है। आज भी इबादतों की स्थापना का यह सिलसिला जारी है।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं:

"एक अहमदी को हर समय अल्लाह तआला के आदेशों पर चलने की कोशिश करनी चाहिए। अपनी ज़िंदगी को इबादतों से सजाना चाहिए और अल्लाह तआला के सामने इस्तिग़फ़ार करते हुए उसकी शरण में आने का प्रयास करना चाहिए, ताकि हर प्रकार के अधिकारों की अदायगी के लिए अल्लाह तआला की सहायता से हममें शक्ति उत्पन्न हो। एक परहेज़गार इंसान संतुलित इंसान होता है, जो हर समय यह कोशिश करता है कि अल्लाह तआला के आदेशों पर अमल करे।"

(ख़ुत्बा जुमअः, 14 अप्रैल 2006)

आज हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की इच्छा के अनुसार ख़िलाफ़त अहमदिया के साए में दुनिया भर में 16,000 से अधिक अहमदिया मस्जिदों के गुम्बदों से चौबीसों घंटे बुलंद होने वाली अज़ानें जहाँ इबादत की ओर बुला रही हैं, वहीं इस सच्चाई का भी ऐलान कर रही हैं कि जमाअत अहमदिया पर कभी सूरज अस्त नहीं होगा।

संक्षेप में, ख़िलाफ़त हमेशा इबादत के प्रतीकों की रक्षक और दीन-ए-इलाही की ध्वजवाहक रही है, और यही इसकी सबसे प्रमुख विशेषता है। ख़िलाफ़त अहमदिया का हर दौर आयत:

"يَعۡبُدُوۡنَنِیۡ لَا یُشۡرِکُوۡنَ بِیۡ شَیۡـًٔا"

का एक जीवित और उज्ज्वल उदाहरण बनकर सामने आया है। तारीख़-ए-अहमदियत ऐसे अनेक प्रेरणादायक घटनाओं से भरी हुई है, जो इस सत्य को दर्शाती हैं कि ख़िलाफ़त अहमदिया की पहली प्राथमिकता हर युग में शुद्ध एकेश्वरवाद का प्रचार और इबादत की ओर बुलाना रही है।

आज भी दुनिया के हर कोने से अज़ान की यह पुकार गूँज रही है:

"حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃِ، حَیَّ عَلَی الۡفَلَاحِ"

अर्थात नमाज़ की ओर आओ, सफलता की ओर आओ।

यह एक सार्वभौमिक पुकार है, जो हर दिल को बुला रही है:

बुला रही हैं तुम्हें प्यार की खुली बाँहें
चले भी आओ न, लिल्लाह प्यार कर देखो

हम, ख़िलाफ़त अहमदिया के सेवक, हर क्षण यही इच्छा और दुआ करते हैं:

शैतान की हुकूमत मिट जाए इस जहाँ से
हाकिम तमाम दुनिया पे मेरा मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हो हो।"

★ ★ ★

युवाओं की जिम्मेदारियाँ खिलाफत-ए-अहमदिया के साये में

(बशीरुद्दीन कादिर, मुरब्बी सिलसिला, हफ्तरोजा अखबार "बद्र कादियान")

खिलाफत-ए-अहमदिया अल्लाह तआला की ओर से जमाअत-ए-अहमदिया के लिए एक अद्भुत आध्यात्मिक इनाम है। यह वह बरकत वाला निजाम है जो हजरत मसीह-ए-मौऊद (अलैहिस्सलाम) के विसाल के बाद जमाअत की रहनुमाई, हिफाजत और तरक्की का जरिया बना। खिलाफत दरअसल इस्लाम के असली निजाम-ए-कयादत का सिलसिला है, जिसके जरिए अल्लाह तआला अपने बंदों को इत्तिहाद, इस्तिकामत और आध्यात्मिक तरक्की की ओर रहनुमाई फरमाता है।

कुरान करीम में अल्लाह तआला खिलाफत के कयाम का वादा करते हुए फरमाता है:

"وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ"

(सूरह-ए-नूर: 56)

अर्थात अल्लाह तआला ने तुम में से उन लोगों से जो ईमान लाए और नेक काम किए, वादा किया है कि वह उन्हें जमीन में जरूर खलीफा बनाएगा, जिस तरह उसने उनसे पहले के लोगों को खलीफा बनाया था।

यह आयत इस हकीकत को साफ करती है कि खिलाफत अल्लाह तआला की ओर से कायम होने वाला निजाम है, जो ईमान और नेक आमाल के नतीजे में अता किया जाता है। जमाअत-ए-अहमदिया में यह वादा हजरत मसीह-ए-मौऊद (अलैहिस्सलाम) के बाद खिलाफत-ए-अहमदिया की सूरत में पूरा हुआ और आज तक जारी है।

इस बरकत वाले निजाम के साये में युवाओं की जिम्मेदारियाँ बहुत अधिक अहमियत रखती हैं, क्योंकि युवा किसी भी कौम और जमाअत का भविष्य होते हैं। अगर युवा अपने फर्जों को सही तरह से अदा करें, तो जमाअत तरक्की के नए मुकाम हासिल करती है।

इताअत-ए-खिलाफत

युवाओं की सबसे पहली और बुनियादी जिम्मेदारी इताअत-ए-खिलाफत (खिलाफत की पैरवी) है। कुरान करीम में अल्लाह तआला फरमाता है:

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاُولِي الْاَمْرِ مِنْكُمْ

(सूरह-ए-निसा: 60)

अर्थात ऐ ईमान वालो! अल्लाह की इताअत करो और रसूल की इताअत करो और उन लोगों की भी जो तुम में से साहिब-ए-अम्र (अधिकारी) हैं।

इस आयत में मुसलमानों को साफ तौर पर यह तालीम दी गई है कि वे अपने दीनी रहनुमा की इताअत करें। जमाअत-ए-अहमदिया में खलीफा-ए-वक़्त अल्लाह तआला की विशेष ताइद व नुसरत के साथ जमाअत की रहनुमाई फरमाता है। इसलिए अहमदी युवाओं को चाहिए कि वे खलीफा-ए-वक़्त से मोहब्बत, वफादारी और इखलास का ताल्लुक कायम रखें और उनकी हिदायात को अपनी जिंदगी का हिस्सा बनाएँ।

तबलीग-ए-इस्लाम और अहमदियत-

युवाओं की दूसरी अहम जिम्मेदारी इस्लाम और अहमदियत का पैगाम दुनिया तक पहुँचाना है। रसूल-ए-अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया:

بَلِّغُوْا عَنِّيْ وَلَوْ آيَةً

(सहीह बुखारी की हदीस नंबर 3461)

अर्थात मेरी तरफ से लोगों तक पैगाम पहुँचाओ, चाहे एक आयत ही क्यों न हो।

यह हदीस इस बात की तरफ ध्यान दिलाती है कि हर मुसलमान पर दीन का पैगाम दूसरों तक पहुँचाना जरूरी है। आज के दौर में जबकि दुनिया रूहानी बेचैनी और अखलाकी बोहरान (संकट) का शिकार है, अहमदी युवाओं पर यह जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है कि वे इस्लाम की हकीकी तालीमात को दुनिया के सामने पेश करें।

युवाओं को चाहिए कि वे अपने अखलाक, किरदार, इल्म और हुस्न-ए-सुलूक के जरिए इस्लाम का अमली नमूना पेश करें, ताकि लोग इस्लाम की खूबसूरती को देख सकें।

इबादात और रूहानियत में तरक्की

खिलाफत-ए-अहमदिया का असली फायदा उसी वक्त हासिल किया जा सकता है, जब इंसान अल्लाह तआला से अपना ताल्लुक मजबूत करे। कुरान करीम में अल्लाह तआला फरमाता है:

اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ

(सूरह-ए-राद: 29)

अर्थात याद रखो! अल्लाह के जिक्र (स्मरण) ही से दिलों को सुकून हासिल होता है।

युवाओं को चाहिए कि वे पाँच वक्फ की नमाज बजमाअत अदा करें, कुरान करीम की पाबंदी से तिलावत करें, दुआ और इस्तिगफार को अपनी जिंदगी का हिस्सा बनाएँ।

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया:

اَحَبُّ الْاَعْمَالِ اِلَى اللّٰهِ اَدْوَمُهَا وَاِنْ قَلَّ

(सहीह बुखारी हदीस नंबर 6464 या 6465)

अर्थात अल्लाह तआला को वह अमल ज्यादा पसंद है जो पाबंदी के साथ किया जाए, चाहे वह थोड़ा ही क्यों न हो।

यह तालीम हमें बताती है कि इबादत में तसल्सुल (निरंतरता) और इखलास सबसे ज्यादा जरूरी है।

आला अखलाक और पाकीजा किरदार

इस्लाम में अखलाक को बुनियादी हैसियत हासिल है। रसूल-ए-करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया:

اِنَّمَا بُعِثْتُ لِاُتَمِّمَ مَكَارِمَ الْاَخْلَاقِ

(मुसनद अहमद हदीस नंबर: 15540)

अर्थात मुझे इसी लिए मबऊस (भेजा) गया है कि मैं आला अखलाक की तकमील (पूर्णता) करूँ।

इसलिए अहमदी युवाओं को चाहिए कि वे अपनी जिंदगी में सच्चाई, दयानतदारी (ईमानदारी), आजिजी (विनम्रता), सब्र (धैर्य), बर्दाश्त (सहनशीलता), हुस्न-ए-सुलूक (अच्छा व्यवहार) को अपनाएँ।

जमाअती खिदमात और खिदमत-ए-खल्क

इस्लाम इंसानियत की खिदमत को बहुत बड़ी नेकी करार देता है। कुरान करीम में अल्लाह तआला फरमाता है:

وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى (सूरह-ए-माइदा: 3)

अर्थात नेकी और तक्वा (अल्लाह का डर) के कामों में एक-दूसरे की मदद करो।

इस आयत से यह तालीम मिलती है कि मुसलमान को नेकी के कामों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना चाहिए। अहमदी युवाओं को चाहिए कि वे जमाअती प्रोग्रामों में हिस्सा लें, दीनी सरगर्मियों में तआवुन (सहयोग) करें, इंसानियत की खिदमत के मंसूबों (योजनाओं) में शामिल हों। खिदमत-ए-खल्क (लोगों की सेवा) दरअसल इस्लाम की रूह है और यही हकीकी (असली) तबलीग भी है।

खिलाफत से मोहब्बत और ताल्लुक

युवाओं के लिए जरूरी है कि वे खिलाफत से गहरा ताल्लुक कायम करें।

खलीफा-ए-वक़्त के खुतबात (भाषण) सुनना, उनकी हिदायात पर अमल करना और उनके लिए दुआ करना एक मोमिन की जिम्मेदारी है।

एक मौके पर हजरत मसीह-ए-मौऊद (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि हमारी जमाअत में वही दाखिल होता है जो हमारी तालीम को अपना दस्तूर-अल्-अमल (करने का तरीका) क़रार देता है और अपनी हिम्मत और कोशिश के मुताबिक उस पर अमल करता है। लेकिन जो महज नाम रखकर तालीम के मुताबिक अमल नहीं करता, वह याद रखे कि खुदा तआला ने इस जमाअत को एक खास जमाअत बनाने का इरादा किया है और कोई आदमी जो दरअसल जमाअत में नहीं है, महज नाम लिखाने से जमाअत में नहीं रह सकता।" यानी अमली हालत अगर इस तालीम के मुताबिक नहीं तो सिर्फ नाम लिखवाकर जमाअत में शामिल होने वाली बात है और हजरत मसीह-ए-मौऊद (अलैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि असल में मेरी नजर में तो वह जमाअत में नहीं है। आप फ़रमाते हैं "......इसलिए जहाँ तक हो सके, अपने आमाल (कर्मों) को इस तालीम के मातहत करो जो दी जाती है।"

(मल्फ़ूज़ात, जिल्द 4, पृष्ठ 439)

हजरत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं:

"ऐ मुसलमानो, तुम इताअत और फरमानबरदारी की सारी राहें इख्तियार करो, और कोई भी हुक्म तर्क (छोड़) न करो। दूसरी सूरत में इसके यह मानी हैं कि तुम पूरे का पूरा इस्लाम कुबूल करो। यानी उसका कोई हुक्म ऐसा न हो जिस पर तुम्हारा अमल न हो। यह कुर्बानी है जो अल्लाह तआला हर मोमिन से चाहता है कि इंसान अपनी सारी आरज़ुओं (इच्छाओं), सारी ख्वाहिशों और सारी आमाल (लालसाओं) को खुदा तआला के लिए कुरबान कर दे। तुम अगर निजात (मुक्ति) हासिल करना चाहते हो तो उसका तरीका यह है कि पहले हर किस्म की मुनाफिकत (पाखंड) और बेईमानी को अपने अंदर से दूर करने की कोशिश करो और कौम के हर फर्द को ईमान और इताअत की मजबूत चट्टान पर कायम करो। दूसरे, सिर्फ चंद अहकाम (आदेशों) पर अमल करके खुश न हो जाओ, बल्कि खुदा तआला के सभी अहकाम पर अमल बजा लाओ और सिफात-ए-इलाहिया (अल्लाह के गुणों) का कामिल मजहर (पूर्ण रूप) बनने की कोशिश करो।"

(तफसीर-ए-कबीर, जिल्द 2, पृष्ठ 456-457)

सिलसिला-ए-अहमदिया की गरज़ व गायत (उद्देश्य और लक्ष्य) बयान करते हुए हजरत मसीह-ए-मौऊद (अलैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं:

"यह जमाना भी रूहानी लड़ाई का है। शैतान के साथ जंग शुरू है। शैतान अपने सारे हथियारों और मकरों (धोखों) को लेकर इस्लाम के किले पर हमलावर हो रहा है और वह चाहता है कि इस्लाम को शिकस्त (हार) दे, मगर खुदा तआला ने इस वक़्त शैतान की आखिरी जंग में उसे हमेशा के लिए शिकस्त देने के लिए इस सिलसिले को कायम किया है।"

(मल्फ़ूज़ात, जिल्द 3, पृष्ठ 16, नया एडीशन, प्रकाशित रबवा)

आप (अलैहिस्सिलाम) फ़रमाते हैं: "मुबारक वह जो उसे (इस सिलसिले को) पहचानता है।"

(मल्फ़ूज़ात, जिल्द 3, पृष्ठ 16, नया एडीशन, प्रकाशित रबवा)

खुलासा-ए-कलाम (सारांश)

यह है कि मंज़ूर-ए-बाला (ऊपर दी गई) तफसील से यह हकीकत रोज़-ए-रौशन की तरह साफ हो जाती है कि खिलाफत-ए-अहमदिया अल्लाह तआला की ओर से अता की गई एक अद्भुत रूहानी नेमत और जमाअत की बक़ा (बचे रहने) व तरक्की का ज़ामिन निजाम है। इस बरकत वाले निजाम के साये में युवाओं का किरदार निहायत बुनियादी और फैसलाकुन (निर्णायक) हैसियत रखता है।

अगर अहमदी युवा खुलूस-ए-दिल (सच्चे दिल) से इताअत-ए-खिलाफत को अपनी जिंदगी का हिस्सा बना लें, इबादतों में पाबंदी (नियमितता) इख्तियार करें, आला अखलाक का मुजाहिरा (प्रदर्शन) करें, और तबलीग-ए-इस्लाम व खिदमत-ए-इंसानियत के मैदान में सरगर्म-ए-अमल (सक्रिय) रहें, तो न सिर्फ वे अपनी जाती जिंदगियों को सँवार सकते हैं, बल्कि जमाअत-ए-अहमदिया को भी तरक्की की नई बुलंदियों तक ले जा सकते हैं।

खिलाफत से मोहब्बत, वफादारी और अमली ताल्लुक ही दरअसल कामयाबी की कुंजी है। यही ताल्लुक इंसान को रूहानी मजबूती, फिक्री (विचारात्मक) इस्तिकामत और दीनी गैरत (जोश) अता करता है। हजरत मसीह-ए-मौऊद (अलैहिस्सलाम) और खुलफा-ए-अहमदियत की तालीमात इस बात पर जोर देती हैं कि महज नाम का ताल्लुक काफी नहीं, बल्कि अमली जिंदगी में इन तालीमात का निफाज (लागू करना) जरूरी है।

लिहाजा हर अहमदी युवा को यह अहद (प्रण) करना चाहिए कि वह अपनी तमाम सलाहियतों (क्षमताओं) को दीन-ए-इस्लाम की खिदमत, खिलाफत के इस्तेहकाम (मजबूती) और इंसानियत की भलाई के लिए वक्फ (समर्पित) करेगा। जब युवा इस जज़्बे (जुनून) के साथ आगे बढ़ेंगे, तो यकीनन अल्लाह तआला की नुसरत (सहायता) शामिल-ए-हाल होगी और जमाअत-ए-अहमदिया दुनिया में अमन, मोहब्बत और हिदायत का रौशन मीनार (प्रकाश स्तंभ) बनकर उभरेगी।

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमअःऔर खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमअःप्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे। संस्थान

★ ★ ★

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पवित्र जीवन

(हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद रज़ि. जमाअत अहमदिया के द्वितीय ख़लीफ़ा)

मुहम्मद (स.अ.व.) का मदीना में प्रवेश

सुराक़ा को विदा करने के पश्चात कुछ दूरी तय करके रसूले करीम (स.अ.व.) मदीना पहुँच गए। मदीना के लोग बड़ी उत्सुकता के साथ आप की प्रतीक्षा कर रहे थे तथा इससे बढ़कर उनका सौभाग्य और क्या हो सकता था कि वह सूर्य जो मक्का से निकला और मदीना के लोगों पर जाकर उदय हुआ।

जब मदीना वासियों को सूचना मिली कि रसूलुल्लाह (स.अ.व.) मक्का से ग़ायब है तो वे उसी दिन से आप की प्रतीक्षा कर रहे थे। उनके समूह प्रतिदिन मदीना से बाहर कई मील तक आप की खोज में निकलते थे और सांय काल निराश होकर वापस आ जाते थे। जब आप मदीना के पास पहुँचे तो आपने निर्णय किया कि आप पहले 'क़बा' में (मदीने के पास का एक गाँव) ठहरें। एक यहूदी ने आप की ऊँटनियों को आते देखा तो समझ गया कि यह क़ाफ़िला मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) का है। वह एक टीले पर चढ़ गया और उसने आवाज़ दी। हे क़ैला की सन्तान! (क़ैला मदीने वालों की एक घाटी थी) तुम जिसकी प्रतीक्षा में थे वह आ गया है। इस आवाज़ के सुनते ही मदीने का हर व्यक्ति 'क़बा' की ओर दौड़ पड़ा। 'क़बा' निवासी इस विचार से कि ख़ुदा का नबी उनमें ठहरने के लिए आया है ख़ुशी से फूले न समाते थे।

इस अवसर पर एक बात ऐसी हुई जो रसूले करीम (स.अ.व.) की सादगी पर प्रकाश डालती थी। मदीने के अधिकतर लोग आप की शक्ल से परिचित न थे। जब 'क़बा' से बाहर आप एक वृक्ष के नीचे बैठे थे और लोग दौड़ते हुए मदीने से आप की ओर आ रहे थे तो चूंकि रसूलुल्लाह (स.अ.व.) अत्यधिक सादगी से बैठे हुए थे उनमें से अपरिचित लोग हज़रत अबू बक़र रज़ि. को देख कर जो आयु में यद्यपि छोटे थे, परन्तु उनकी दाढ़ी में कुछ सफेद बाल आए हुए थे और इसी प्रकार उनका लिबास रसूले करीम (स.अ.व.) के लिबास से कुछ अच्छा था यही समझते थे कि अबू बक़र रज़ि. रसूलुल्लाह (स.अ.व.) हैं बड़ी शालीनता से आप की ओर मुख करके बैठ जाते थे। हज़रत अबू बकर ने जब यह बात देखी तो समझ लिया कि लोगों को ग़लती लग रही है। वह तुरन्त चादर फैलाकर सूरज के सामने खड़े हो गए और कहा— हे अल्लाह के रसूल! आप पर धूप पड़ रही है, मैं आप पर छाया करता हूँ① और उन्होंने इस उत्तम उपाय द्वारा लोगों को उनकी ग़लती का आभास करा दिया। 'क़बा' में दस दिन रहने के पश्चात् मदीना के लोग रसूले करीम (स.अ.व.) को मदीना ले गए। जब आप ने मदीना में प्रवेश किया तो मदीना के समस्त मुसलमान क्या पुरुष तथा क्या स्त्रियां और क्या बच्चे सब गलियों में खड़े अभिनन्दन कर रहे थे। बच्चे और स्त्रियां ये काव्य-पंक्तियां गा रहे थे।

طَلَعَ الْبَدْرُ عَلَيْنَا مِنْ ثَنِيَّاتِ الْوَدَاع
وَجَبَ الشُّكْرُ عَلَيْنَا مَا دَعَا لِلّٰهِ دَاع
ايُّها الْمَبْعُوْثُ فِيْنا جِئْتَ بِالْاَمْرِ الْمطَاع②

अर्थात् चौदहवीं रात (पूर्णिमा) का चन्द्रमा हम पर 'वदाअ' के मोड़ से चढ़ा है और जब तक ख़ुदा से ओर सो बुलाने वाला संसार में कोई मौजूद रहे, हम पर इस उपकार की कृतज्ञता अनिवार्य है और हे वह जिसे ख़ुदा ने हम में भेजा है तेरे आदेश का पूर्णरूप से पालन किया जाएगा।

रसूले करीम (स.अ.व.) ने जिस ओर से मदीना में पूरब की ओर से प्रवेश नहीं किया था परन्तु चौदहवीं रात (पूर्णिमा) का चन्द्रमा तो पूरब से चढ़ा करता है। अतः मदीना के लोगों का संकेत उस ओर था कि वास्तविक चन्द्रमा तो आध्यात्मिक चन्द्रमा है। हम अब तक अंधकार में थे। अब हमारे लिए चन्द्रमा चढ़ा है और चन्द्रमा भी उस ओर से चढ़ा है जिस ओर से वह चढ़ा नहीं करता। यह सोमवार का दिन था जब रसूले करीम (स.अ.व.) ने मदीना में प्रवेश किया और सोमवार के दिन ही आप ग़ारे-सौर (सौर की गुफ़ा) से निकले थे। यह बड़ी विचित्र बात है कि सोमवार ही के दिन आप के द्वारा मक्का विजय हुआ। जब आप ने मदीना में प्रवेश किया तो प्रत्येक व्यक्ति की यही अभिलाषा थी कि आप उसके घर में ठहरें। आपकी ऊँटनी जिस-जिस गली में गुज़रती थी उस गली के भिन्न-भिन्न परिवार अपने घरों के आगे खड़े होकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अभिनन्दन करते थे और कहते थे— हे अल्लाह के रसूल ! यह हमारा घर है और यह हमारा माल है और ये हमारे प्राण हैं जो आप की सेवा के लिए उपस्थित हैं। हे अल्लाह के रसूल ! हम आप की रक्षा करने के योग्य हैं आप हमारे ही पास ठहरें। कुछ लोग जोश में आगे बढ़ते और आप की ऊँटनी की बाग पकड़ लेते ताकि आपको अपने घर में उतार लें, परन्तु आप प्रत्येक व्यक्ति को यही उत्तर देते कि मेरी ऊँटनी को छोड़ दो यह आज ख़ुदा तआला के आदेश पर है। यह वहीं खड़ी होगी जहां ख़ुदा की इच्छा होगी।

अन्ततः मदीना के एक सिरे पर बनू नज्जार के अनाथों की एक भूमि के पास जाकर ऊँटनी रुक गई। आपने फ़रमाया— ख़ुदा की यही इच्छा मालूम होती थी कि हम यहाँ ठहरें। पुनः फ़रमाया— यह भूमि किस की है? भूमि कुछ अनाथों की थी, उन का अभिभावक आगे बढ़ा और उस ने कहा— अल्लाह के रसूल ! यह अमुक-अमुक अनाथ की भूमि है तथा आप की सेवा के लिए उपस्थित है। आप ने फ़रमाया— हम किसी का माल मुफ़्त नहीं ले सकते। अतः उस का मूल्य निर्धारित किया गया तथा आप ने उस स्थान पर मस्जिद और अपने मकान बनाने का निर्णय किया।

हज़रत अबू अय्यूब रज़ि. अन्सारी के मकान पर ठहरना

तत्पश्चात् आप ने फ़रमाया— सब से निकट किस का घर है? अबू अय्यूब अन्सारी आगे बढ़े और कहा— हे अल्लाह के रसूल ! मेरा घर सबसे निकट है तथा आप की सेवा के लिए उपस्थित है। आप ने फ़रमाया— घर जाओ और हमारे लिए कोई कमरा तैयार करो। अबू अय्यूब का मकान दो मंज़िला था, उन्होंने रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के लिए ऊपर की मंज़िल प्रस्तावित की परन्तु आप ने इस विचार से कि मिलने वालों को कष्ट होगा नीचे की मंज़िल पसन्द की।

अन्सार को रसूल करीम (स.अ.व.) के अस्तित्व से अत्यधिक प्रेम हो गया था, इस का प्रदर्शन इस अवसर पर भी हुआ । रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के आग्रह पर हज़रत अबू अय्यूब मान तो गए कि आप निचली मंज़िल में ठहरें, परन्तु सारी रात पति-पत्नी इस विचार से जागते रहे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उन के नीचे सो रहे हैं अतः वे किस प्रकार ऐसी अशिष्टता कर सकते हैं कि वे छत के ऊपर सोएं। रात को एक पानी का बर्तन गिर गया तो इस विचार से कि छत के

नीचे पानी न टपकने लगे हज़रत अबू अय्यूब रज़ि. ने दौड़ कर अपना लिहाफ़ उस पानी पर डाल कर पानी की तरलता को सुखाया। प्रातः काल वे रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की सेवा में उपस्थित हुए और सारा वृत्तान्त सुनाया जिस पर रसूले करीम (स.अ.व.) ने ऊपरी मंज़िल पर जाना स्वीकार कर लिया। फिर हज़रत अबू अय्यूब रज़ि. प्रतिदिन भोजन तैयार करते और आप के पास भेजते, फिर जो आप का बचा हुआ भोजन आता वह सारा घर खाता। कुछ दिनों के पश्चात् आग्रह करके शेष अन्सार ने भी अतिथि-सत्कार में अपने भाग की माँग की और जब तक रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अपने घर का प्रबंध न हो गया मदीना के मुसलमान बारी-बारी आप स. के घर में खाना पहुँचाते रहे।[1]

हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) के आचरण पर आपके सेवक हज़रत अनस रज़ि. की साक्ष्य

मदीना की एक विधवा स्त्री का अनस नामक इकलौता लड़का था। उसकी आयु आठ-नौ वर्ष थी वह उसे रसूले करीम (स.अ.व.) की सेवा में लाईं और कहा— हे अल्लाह के रसूल ! मेरे इस लड़के को अपनी सेवा के लिए स्वीकार करें। वह स्त्री अपने प्रेम के कारण अपने लड़के को बलिदान के लिए प्रस्तुत कर रही थी, परन्तु उसे क्या मालूम कि उसका लड़का बलिदान के लिए नहीं अपितु हमेशा के जीवन के लिए स्वीकार किया गया।

अनस रज़ि. रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की संगति में इस्लाम के बहुत बड़े विद्वान हुए और शनैः शनैः बहुत बड़े धनवान हो गए। उन्होंने एक सौ वर्ष से अधिक आयु पाई तथा इस्लामी शासन में बहुत आदर की दृष्टि से देखे जाते थे। अनस रज़ि. का बयान है कि मैंने अल्पायु में रसूले करीम (स.अ.व.) की सेवा का सौभाग्य प्राप्त किया और आप के जीवन तक आप के साथ रहा, आप ने कभी मुझ से कठोरता का व्यवहार नहीं किया, कभी डांट-डपट नहीं की, कभी किसी ऐसे कार्य के लिए नहीं कहा जो मेरी सामर्थ्य से बाहर हो[2]। रसूले करीम (स.अ.व.) को मदीना में निवास के दिनों में केवल अनस रज़ि. से सेवा लेने का अवसर प्राप्त हुआ तथा इस संबंध में आप स. के आचरण पर अनस रज़ि. की गवाही अत्यधिक प्रकाश डालने वाली है।

मक्का से परिवार को बुलाना तथा मस्जिद-ए-नबवी स. की नींव रखना

कुछ समय पश्चात् आप स. ने अपने आज़ाद किए दास 'ज़ैद' को मक्का में भेजा कि वह आप के परिवार को ले आए। चूंकि मक्का वाले इस अचानक हिजरत के कारण कुछ घबरा गए थे। इसलिए कुछ समय तक अत्याचारों का सिलसिला बन्द रहा तथा इसी घबराहट के कारण वे रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर के ख़ानदान के मक्का छोड़ने में बाधक नहीं बने तथा ये लोग कुशलतापूर्वक मदीना पहुँच गए। इस अवधि में (मदीना में) जो भूमि नबी करीम (स.अ.व.) ने ख़रीदी थी, आप ने सर्वप्रथम वहाँ मस्जिद का शिलान्यास किया। तत्पश्चात् अपने लिए तथा अपने साथियों के लिए मकान बनवाए, जिस पर लगभग सात मास का समय लगा।[1]

मदीना के द्वैतवादी क़बीलों का इस्लाम में प्रवेश

आप के मदीना में प्रवेश करने के पश्चात् कुछ ही दिनों में मदीना के द्वैतवादी क़बीलों में से अधिकांश लोग मुसलमान हो गए। जो हृदय से मुसलमान न हुए थे वे प्रकट रूप में मुसलमानों हो गए और इस प्रकार पहली बार मुसलमानों में द्वैमुखी लोगों (मुनाफ़िकों) का एक समूह संगठित हुआ जो बाद के युग में कुछ तो यथार्थ रूप में ईमान ले आए और कुछ लोग हमेशा मुसलमानों के विरुद्ध योजनाएँ बनाते और षड्यंत्र रचते रहे। कुछ लोग ऐसे भी थे जो प्रत्यक्ष में भी इस्लाम नहीं लाए परन्तु ये लोग मदीना में इस्लाम के वैभव को सहन न कर सके तथा मदीना से पलायन करके मक्का चले गए। इस प्रकार मदीना संसार का प्रथम नगर था जिसमें शुद्ध रूप से एक ख़ुदा की उपासना होने लगी। निश्चय ही उस समय समस्त संसार में इस नगर के अतिरिक्त अन्य कोई नगर या गांव शुद्ध रूप से एक ख़ुदा की उपासना करने वाला नहीं था। मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के लिए यह कितनी बड़ी ख़ुशी तथा उनके साथियों की दृष्टि में यह कितनी महान सफलता थी कि मक्का से हिजरत करने के कुछ ही दिनों के बाद ख़ुदा तआला ने उनके द्वारा एक नगर को सर्वशक्तिमान ख़ुदा का उपासक बना दिया जिसमें अन्य किसी मूर्ति की पूजा नहीं की जाती थी, न प्रत्यक्ष मूर्ति की न अप्रत्यक्ष मूर्ति की, परन्तु इस परिवर्तन से यह नहीं समझना चाहिए कि मुसलमानों के लिए अब अमन आ गया था। मदीना में अरबों में से भी द्वैमुखी लोगों का एक ऐसा समूह मौजूद था जो आप के प्राणों का घातक था तथा यहूद भी गुप्त रूप से षड्यंत्र रच रहे थे। अतः इस ख़तरे का आभास करते हुए आप स. स्वयं भी सतर्क रहते थे और अपने साथियों को भी सतर्क रहने पर बल देते थे। प्रारम्भ में कुछ दिन ऐसे भी आए कि आप को रात भर जाग पड़ा। एक बार ऐसी ही अवस्था में जब आप को जागते रहने के कारण थकान महसूस हुई तो आप ने फ़रमाया— इस समय यदि कोई वफ़ादार व्यक्ति पहरा देता तो मैं सो जाता। थोड़ी देर में शस्त्रों की झनकार सुनाई दी। आप ने पूछा कौन है? तो आवाज़ आई, हे अल्लाह के रसूल ! मैं सअद बिन वक़्क़ास हूँ जो आप का पहरा देने के लिए आया हूँ। इस पर आप ने आराम किया। अन्सार को स्वयं भी यह महसूस हो रहा था कि रसूलुल्लाह (स.अ.व.) का मदीना में निवास हम पर एक बहुत बड़ा दायित्व डालता है और यह कि आप स. मदीना में शत्रुओं के आक्रमणों से सुरक्षित नहीं हैं। अतः उन्होंने परस्पर निर्णय करके विभिन्न क़बीलों की पारियां नियुक्त कर दीं। प्रत्येक क़बीले के कुछ लोग अपनी-अपनी पारी पर आप के घर का पहरा देते थे।

अतः मक्की और मदनी जीवन में यदि कोई अन्तर था तो केवल यह कि अब मुसलमान ख़ुदा के नाम पर बनाई गई मस्जिद में दूसरे लोगों के हस्तक्षेप के बिना पाँचों समय नमाज़ें अदा करते थे।

मक्का वालों की मुसलमानों को पुनः कष्ट देने की योजनाएं

दो-तीन माह व्यतीत होने के पश्चात् मक्का के लोगों का कष्ट दूर हुआ तथा उन्होंने नए सिरे से मुसलमानों को कष्ट देने के उपाय सोचना आरम्भ कर दिए परन्तु परामर्श के पश्चात् उन्हें महसूस हुआ कि केवल मक्का और मक्का के आस-पास में मुसलमानों को कष्ट देना उन्हें अपने उद्देश्य में सफल नहीं कर सकता। वे इस्लाम को तभी मिटा सकते हैं जब मदीना से मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) को निकलवा दें। अतः यह परामर्श करके मक्का के लोगों ने अब्दुल्लाह बिन उबय्य बिन सुलूल के नाम जिसके सन्दर्भ में पहले बताया जा चुका है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आगमन से पूर्व मदीना वालों ने उसे अपना बादशाह बनाने का निर्णय किया था और उसे ध्यान दिलाया कि मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के मदीना जाने के कारण मक्का के लोगों को बहुत आघात पहुँचा है। मदीना के लोगों के लिए उचित न था कि वे आपको और आप के

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2026-2028 Vol. 10 Thursday 07-14 May 2026 Issue No. 19-20

Act. MANAGER :
ATHAR AHMAD SHAMIM
Mobile : +91-9815639670
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

साथियों को शरण देते उसके अन्त में ये शब्द थे —

اِنَّكُمْ اٰوَيْتُمْ صَاحِبَنَا وَاِنَّا نُقْسِمُ بِاللّٰہِ لَنُقَاتِلَنَّہٗ اَوْ نُخْرِجَنَّہٗ اَوْ لَنَسِيرَنَّ اِلَيْكُمْ
بِاَجْمَعِنَا حَتّٰى نَقْتُلَ مَقَاتِلَتَكُمْ وَ نَسْتَبِيْحَ نِسَآءَ كُمْ۔

अर्थात् अब जब कि तुम लोगों ने हमारे आदमी (मुहम्मद रसूलुल्लाह स.अ.व.) को अपने घरों में शरण दी है, हम ख़ुदा की सौगन्ध खाकर यह घोषणा करते हैं कि या तो तुम मदीना के लोग उस के साथ लड़ाई करो या उसे अपने नगर से निकाल दो, अन्यथा हम सब संयुक्त रूप मदीना पर आक्रमण करेंगे और मदीना के समस्त योद्धाओं का वध कर देंगे तथा स्त्रियों को दासियां बना लेंगे। इस पत्र के मिलने पर अब्दुल्लाह बिन उबय्य बिन सुलूल की नीयत कुछ ख़राब हो गई और उसने दूसरे मुनाफ़िक़ों (द्विमुखी लोगों) से परामर्श किया कि यदि मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) को यहाँ रहने दिया तो हमारे लिए ख़तरों का द्वार खुल जाएगा। इसलिए आवश्यक है कि हम आपके साथ लड़ाई करें तथा मक्का वालों को प्रसन्न करें। रसूले करीम (स.अ.व.) को इस बात की सूचना मिल गई। आप[स.] अब्दुल्लाह बिन उबय्य बिन सुलूल के पास गए और उसे समझाया कि तुम्हारा यह कृत्य तुम्हारे ही लिए हानिप्रद होगा क्योंकि तुम जानते हो कि मदीना के अधिकांश लोग मुसलमान हो चुके हैं तथा इस्लाम के लिए प्राण देने के लिए तैयार हैं। यदि तुम ऐसा करोगे तो वे लोग प्रवासियों (मुहाजिरों) के साथ होंगे और तुम लोग इस लड़ाई को प्रारम्भ करके बिल्कुल तबाह हो जाओगे। अब्दुल्लाह बिन उबय्य बिन सुलूल पर अपनी ग़लती प्रकट हो गई और इस इरादे से पृथक हो गया।

अन्सार तथा मुहाजिरीन (प्रवासियों) में भ्रातृभाव[1] का व्यवस्थापन

इन्हीं दिनों में रसूले करीम (स.अ.व.) ने इस्लाम की दृढ़ता के लिए एक और उपाय किया और वह यह कि आप ने समस्त मुसलमानों को एकत्र किया और दो-दो लोगों को परस्पर भाई-भाई बना दिया। इस भ्रातृत्व अर्थात् इस भाई-चारे का अन्सार ने ऐसी प्रसन्नता से अभिनन्दन किया कि प्रत्येक अन्सारी अपने भाई को अपने घर ले गया और अपनी सम्पत्ति उसके समक्ष प्रस्तुत कर दी कि इसे आधा-आधा बांट दिया जाए। एक अन्सारी ने तो अपने प्रवासी भाई से यहां तक सद्व्यवहार किया कि मैं अपनी दो पत्नियों में से एक को तलाक़ दे देता हूँ तुम उस से विवाह कर लो परन्तु मुहाजिरों (प्रवासियों) ने उन की इस निष्कपट भावना का आभार प्रकट करके उनकी जायदादों में भाग लेने से इन्कार कर दिया परन्तु फिर भी अन्सार[1] हठ करते रहे तथा उन्होंने रसूले करीम (स.अ.व.) से कहा कि हे अल्लाह के रसूल ! जब ये मुहाजिर हमारे भाई हो गए तो यह किस प्रकार हो सकता है कि हमारे माल में भागीदार न हों। हाँ चूंकि ये खेतीबाड़ी करने से परिचित नहीं तथा व्यवसायी और व्यापारी लोग हैं, यदि ये हमारी भूमि में भागीदारी नहीं करते तो फिर हमारे ज़मीनों की जो आय हो उसमें उन्हें अवश्य भागीदार बनाया जाए। मुहाजिरों ने इस पर भी उन के साथ भागीदार बनना पसन्द न किया तथा अपने पूर्वजों के व्यापार के व्यवसाय में लग गए तथा थोड़े ही दिनों में उनमें से कई धनवान हो गए परन्तु अन्सार उस भाग के बटवारे पर इतना अधिक बल दे रहे थे कि कुछ अन्सार जो स्वर्गवासी हो गए उनकी सन्तानों ने अरब की प्रथा के अनुसार अपने मुहाजिर भाइयों को स्वर्गवासी लोगों की जायदाद में से भाग दिया और कई वर्ष तक इस का पालन होता रहा, यहाँ तक कि क़ुर्आन करीम में इस रिवाज के निरस्तीकरण का आदेश हुआ।

मुहाजिरों, अन्सार तथा यहूदियों के मध्य परस्पर समझौता

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों को परस्पर भाई-भाई बनाने के अतिरिक्त समस्त मदीना-वासियों के मध्य एक समझौता कराया आप ने यहूदियों और अरबों के सरदारों को एकत्र किया और फ़रमाया— पहले यहां दो गिरोह थे परन्तु अब तीन हो गए हैं अर्थात् पहले तो यहां केवल यहूदी तथा मदीना के अरब लोग रहते थे परन्तु अब यहूदी, मदीना के अरब और मक्का के प्रवासी तीन गिरोह हो गए हैं। इसलिए मैं चाहता हूँ कि परस्पर एक संधि पत्र तैयार किया जाए। अस्तु समझौते के अनुसार एक सन्धि-पत्र लिखा गया। जिसके शब्द ये हैं —

> "मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, मोमिनों तथा उन समस्त लोगों— जो उन में प्रसन्नतापूर्वक सम्मिलित हो जाएँ— के मध्य समझौता-पत्र
>
> ☆मुहाजिरों (प्रवासियों) से यदि कोई क़त्ल हो जाए तो वे उस क़त्ल के स्वयं उत्तरदायी होंगे तथा अपने बन्दियों को स्वयं छुड़ाएंगे तथा मदीना के विभिन्न मुसलमान क़बीले भी इसी प्रकार इन बातों में अपने क़बीलों के उत्तरदायी होंगे, ☆जो व्यक्ति उपद्रव फैलाए या शत्रुता को जन्म दे और व्यवस्था भंग करे, तो समझौता करने वाले समस्त लोग उसके विरुद्ध खड़े हो जाएंगे चाहे वह उनका अपना बेटा ही क्यों न हो। ☆यदि कोई काफ़िर मुसलमान के हाथ से मारा जाए तो उसके मुसलमान परिजन मुसलमान से बदला नहीं लेंगे और न किसी मुसलमान के मुक़ाबले में ऐसे काफ़िरों की सहायता करेंगे। ☆यदि कोई यहूदी हमारे साथ मिल जाए तो हम सब उसकी सहायता करेंगे। यहूदियों को इस प्रकार का कष्ट नहीं दिया जाएगा, न उनके किसी विरोधी शत्रु की सहायता की जाएगी, ☆कोई ग़ैर मोमिन मक्का के लोगों को अपने घर में शरण नहीं देगा, न उनकी जायदाद अपने पास बतौर धरोहर के रखेगा और न काफ़िरों तथा मोमिनों की लड़ाई में किसी प्रकार का हस्तक्षेप करेगा। ☆यदि कोई व्यक्ति किसी मुसलमान को अनुचित तौर पर मार दे तो समस्त मुसलमान मिलकर उसके विरुद्ध कार्यवाही का प्रयास करेंगे। ☆यदि एक द्वैतवादी (मुश्रिक) शत्रु मदीना पर आक्रमण करे तो यहूदी मुसलमान का साथ देंगे तथा अपने निश्चित भाग के अनुसार व्यय वहन करेंगे। ☆यहूदी क़बीले जो मदीना के विभिन्न क़बीलों के साथ समझौता कर चुके हैं उनके अधिकार मुसलमानों के अधिकारों के समान होंगे। ☆यहूदी अपने धर्म पर बने रहेंगे और मुसलमान अपने धर्म पर। ☆जो अधिकार यहूदियों को प्राप्त होंगे वही उन के अनुयायियों को भी प्राप्त होंगे। ☆मदीना के लोगों में से कोई व्यक्ति मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की आज्ञा के बिना कोई लड़ाई आरम्भ नहीं कर सकेगा परन्तु इस शर्त के अन्तर्गत कोई व्यक्ति उसके बदला से वंचित नहीं किया जाएगा।

शेष पृष्ठ 13 पर

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad